नंदा

उत्तराखंड महिला परिषद् की पत्रिका

उत्तराखंड महिला परिषद्, अल्मोड़ा
नवम्बर, 2021

वर्ष -20

अंक-21
(केवल आतंरिक वितरण हेतु)

सर्वाधिकार सुरक्षित ©

प्रतियाँ – 1500

प्रकाशक
उत्तराखण्ड महिला परिषद् द्वारा
उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण
शिक्षा संस्थान, अल्मोड़ा – 263601

प्रकाशन सहयोग
राजेश्वर सुशीला दयाल चैरीटेबल ट्रस्ट,
नई दिल्ली
परिकल्पना एवं सम्पादन
अनुराधा पाण्डे
विशिष्ट सम्पादन
कमल जोशी
विशेष आभार
पद्मश्री डॉ0 ललित पाण्डे,
उत्तराखण्ड महिला परिषद् से जुड़े
सभी महिला संगठन
सहयोग
जी. पी. पाण्डे, धरम सिंह लटवाल,
सुरेश बिष्ट, रमा जोशी, कमल
जोशी, कैलाश पपनै, जीवन चन्द्र
जोशी
टंकण
धरम सिंह लटवाल
कमल जोशी
मुद्रक

उत्तराखण्ड महिला परिषद् सहयोगी संस्थाएं

जनपद	संस्थाएं
अल्मोड़ा	➢'सीड', सुनाड़ी, द्वाराहाट ➢पर्यावरण चेतना मंच, मैचून ➢राइज, सेराघाट ➢उत्तराखण्ड शिवा शक्ति समिति, दन्या
बागेश्वर	➢पर्यावरण एवं शिक्षा समिति, शामा ➢ग्रामीण उत्थान समिति, कपकोट
पिथौरागढ़	➢शैक्षणिक ग्रामोन्नति समिति, गणाई–गंगोली ➢मानव विकास समिति, पव्वाधार ➢उत्तरापथ सेवा संस्थान, मुवानी
चम्पावत	➢पर्यावरण संरक्षण समिति, पाटी
नैनीताल	➢जनमैत्री संगठन, गल्ला
चमोली	➢नवज्योति महिला कल्याण संस्थान, गोपेश्वर ➢'शेप' बधाणी, कर्णप्रयाग ➢'जनदेश' सलना, जोशीमठ ➢लोक जागृति विकास संस्था, कर्णप्रयाग ➢लोक कल्याण विकास समिति, सगर
रूद्रप्रयाग	➢हिमालयन ग्रामीण विकास संस्थान, ऊखीमठ
पौड़ी गढ़वाल	➢नयारघाटी ग्राम स्वराज्य समिति, बाडियूं ➢नीलकंठ सेवा संस्थान, मलेलगाँव
टिहरी गढ़वाल	➢घनश्याम स्मृति शिक्षा एवं कल्याण संस्थान, बडियारगढ़

पत्रिका में दिये गये विचार लेखक/लेखिका के हैं। परिषद् का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

नंदा

उत्तराखंड महिला परिषद् की पत्रिका

उत्तराखंड महिला परिषद्, अल्मोड़ा

नवम्बर, 2021

वर्ष -20

अंक-21

(केवल आतंरिक वितरण हेतु)

इस अंक में

क्रम	विवरण	पृष्ठ संख्या
	हमारी बातें–अनुराधा पांडे, अल्मोड़ा	iv-vii
1.	**खुद के फैसले लेना सीखा**–सुमन नेगी, ग्राम दोगड़ी, जिला चमोली	1
2.	**स्वयं को सक्षम बनाया**–सुनीता आर्या, ग्राम नामिक, जिला पिथौरागढ	3
3.	**संस्था से जीवन बदल गया**–उमा बोरा, ग्राम भन्याणी, जिला पिथौरागढ़	8
4.	**सामाजिक हित के काम करूँगा**–केदार सिंह कोरंगा, शामा, जिला बागेश्वर	10
5.	**झिझक दूर हो रही है**–करीना बिष्ट, ग्राम कुकड़ई, जिला चमोली	12
6.	**घर, जंगल और खेती के काम**–रेखा रावत, ग्राम चौण्डली, जिला चमोली	15
7.	**लड़कियाँ कमज़ोर नहीं** –सीता रौतेला, ग्राम गोगिना, जिला बागेश्वर	17
8.	**गाँव को समझना चुनौतीपूर्ण**–राजेन्द्र सिंह बिष्ट, गणाई–गंगोली, जिला पिथौरागढ़	21
9.	**केन्द्र बन्द मत करना**–सुन्दरी बिष्ट, ग्राम खल्ला, जिला चमोली	23
10.	**कार्यक्रम समय से पूरे किये**–पीताम्बर गहतोड़ी, ग्राम तोली, जिला चम्पावत	26
11.	**सीधे कक्षा चार में दाखिला हुआ**–पुष्पा रौतेला, ग्राम गोगिना, जिला बागेश्वर	28
12.	**कठिन कामों को करने की हिम्मत है**–जीवन्ती आर्या, ग्राम पल्यूं, जिला अल्मोड़ा	31
13.	**जो सीखा वह आगे काम आयेगा**–नीता बिष्ट, ग्राम ग्वाड़, जिला चमोली	34
14.	**जुनून है कि कुछ अच्छा करूँ**–सावित्री आर्या, ग्राम मल्खा दुगर्चा, जिला बागेश्वर	37
15.	**सभी को लाभ**–पूजा नेगी, ग्राम पुडियाणी, जिला चमोली	39
16.	**बच्चों को समझाना चुनौतीपूर्ण**–शिवानी आर्या, ग्राम बधाणी, जिला चमोली	41
17.	**परिवर्तन आया**–अंजली भंडारी, ग्राम मालई, जिला चमोली	44
18.	**अपनी पहचान के बारे में सोचा**–कौशल्या रौतेला, ग्राम गोगिना, जिला बागेश्वर	46
19.	**सोचती थी पिताजी ने पढ़ाया क्यों?**–किरन जोशी, ग्राम गढ़सारी, जिला चम्पावत	48
20.	**नया सीखने को मिला**–मनीषा भट्ट, ग्राम गूम, जिला चम्पावत	51
21.	**पहले समय व्यर्थ जाता था अब नहीं**–रितु आर्या, ग्राम मनिआगर, जिला अल्मोड़ा	53
22.	**किताबें पढ़ने की आदत बनी**–गिरीश चन्द्र जोशी, ग्राम मौनी, जिला अल्मोड़ा	55
23.	**महिलाएं हिम्मत जुटा रही हैं**–पूनम रावत, ग्राम काण्डई, जिला चमोली	57
24.	**ग्रामवासियों से सीखा है**–विनोद कुमार, ग्राम खोला, जिला अल्मोड़ा	60
25.	**सामाजिक कार्य से पहचान बनी**–उर्मिला रावत, ग्राम बमियाला, जिला चमोली	63

26. **समय की समझ**–पुष्पा रौतेला, ग्राम गोगिना, जिला बागेश्वर 66
27. **अब महिलाएं बेझिझक बोलती हैं**–पूर्णिमा मिश्रा, ग्राम भालूगाड़ा, जिला पिथौरागढ़ 68
28. **बच्चे खेल में रुचि लेते हैं**–सन्तोषी चौधरी, ग्राम बैनोली, जिला चमोली 71
29. **बात करना सीखा**–ममता बनौला, ग्राम बानठौक, जिला अल्मोड़ा 73
30. **समाज में उठना–बैठना सीखा**–नीरा कंडारी, ग्राम तल्ला नामिक, जिला पिथौरागढ़ 75
31. **बच्चे रुचि से केन्द्र में आते हैं**–प्रियंका पथनी, ग्राम ग्वाड़ी, जिला पिथौरागढ 77
32. **बच्चों के साथ गाँव से भी जुड़ाव**–पायल बिष्ट, ग्राम कोटेश्वर, जिला चमोली 79
33. **कार्य समय पर पूरा होता है**–रितु नेगी, ग्राम छातोली, जिला चमोली 81
34. **सिलाई की दुकान खोलने का शौक**–रीता बोहरा, ग्राम जनकांडे, जिला चम्पावत 84
35. **गाँव का अच्छा सहयोग है**–अनुज बिष्ट, ग्राम बमियाला, जिला चमोली 86
36. **अभिभावक खुश हैं**–जानकी बोहरा, ग्राम जनकांडे, जिला चम्पावत 87
37. **समय बचा कर काम करती हूँ**–माला आर्या, ग्राम नामिक, जिला पिथौरागढ़ 89
38. **अपने लिये थोड़ा समय निकालती हूँ**–माया बोरा, ग्राम बोरखोला, जिला अल्मोड़ा 91
39. **गाँव को केन्द्र से जोड़ना चाहती हूँ**–ज्योति माहरा, ग्राम सिरमोली, जिला चम्पावत 93
40. **बच्चों के साथ खेलना पसंद है**–पुष्पा बिष्ट, ग्राम मण्डल, जिला चमोली 95
41. **समाज से जुड़ने का मौका मिला**–कुसुम बिष्ट, ग्राम देवलधार, जिला चमोली 96
42. **मुझे भी पढ़ने का मौका मिला**–रेनू आर्या, ग्राम कसून, जिला अल्मोड़ा 98
43. **काम शुरू किया तो मन लगने लगा**–स्मिता बिष्ट, ग्राम सिरोली, जिला चमोली 100
44. **कोशिश जारी है**–करिश्मा सगोई, ग्राम सुन्दरगाँव, जिला चमोली 102
45. **नये कौशल सीखे**–आशा बिष्ट, ग्राम कठूड़, जिला चमोली 104
46. **सपना है गरीबों की मदद करूँ**–मीता नेगी, ग्राम चौरासैंण, जिला चमोली 106
47. **महिलाएं सहयोग करती हैं**–रचना नेगी, ग्राम जाख, जिला चमोली 108
48. **लोग सम्मान की दृष्टि से देखते हैं**–प्रियंका रावत, ग्राम बणद्वारा, जिला चमोली 111
49. **मुझे सिलाई पसंद है**–मीरा कैड़ा, ग्राम भतौरा, जिला अल्मोड़ा 113

हमारी बातें

इस वर्ष 'नंदा' पत्रिका के प्रकाशन को दो दशक पूरे हुए। फरवरी 2001, उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा में उत्तराखण्ड महिला परिषद् का गठन हुआ। कुमाऊँ और गढ़वाल के पर्वतीय जिलों से आये हुए लगभग बीस संस्थाओं के प्रमुख, महिला संगठनों की कुछ अध्यक्षाओं एवं मार्गदर्शिकाओं ने परिषद् की नींव रखी। परिणामस्वरूप लगभग साढ़े चार सौ गाँवों के महिला संगठनों की एक परिषद् बनी। इसी संदर्भ में तय हुआ कि ग्रामीण स्त्रियाँ, युवतियाँ–युवक, किशोरियाँ–किशोर, संस्थाओं में जुड़े लोग स्वयं भी पढ़ें और गाँवों के विकास के बारे में सोचें। चिंतन–मनन हो, आपस में चर्चा हो और ग्रामवासी अपने विचारों तथा कार्यक्रम–जनित अनुभवों को लिखना सीखें। इन अनुभवों को एक पत्रिका में प्रकाशित किया जाये। इस तरह, 'नंदा' पत्रिका अस्तित्व में आयी।

पिछले बीस वर्षों में यह पत्रिका ग्रामीण क्षेत्रों से ऊर्जा पाती रही है। प्रकाशित लेख, अनुभव, गीत, कविताएं इत्यादि कुमाऊँ और गढ़वाल के ग्रामवासियों ने लिखे हैं। नंदा का महत्त्व इस सार में निहित है कि ग्रामवासियों के बीच पढ़ने और लिखने की एक आदत बन गयी। यूँ तो ग्राम्य–जीवन पर लगातार बहुआयामी पुस्तकें प्रकाशित होती रहती हैं परंतु अधिकतर रचनाएं ''पढ़े–लिखे'' और ''बुद्धिजीवी'' समझे जाने वाले वर्ग द्वारा सृजित हैं। इस परंपरा के इतर नंदा पत्रिका के माध्यम से एक ऐसे वर्ग को पढ़ने–लिखने और ''लेख छापने'' का मौका मिला जो कभी लेखन–प्रकाशन की धारा का हिस्सा नहीं रहे। नंदा पत्रिका में उत्तराखण्ड की ग्रामीण स्त्रियों की सामुहिक संवेदना, दैनिक जीवन की चुनौतियाँ, सामाजिक–आर्थिक सरोकार, चिंताएं और आत्मीय पुकार संकलित होती चली गयी है।

पिछले दो दशकों की इस यात्रा का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा ग्रामीण युवतियों और किशोरियों में स्वाभिमान जगाना है। दैनिक जीवन के अनुभवों से हर स्त्री यह समझती है कि कई बार बोलने की इच्छा होने के बावजूद वह कुछ कह नहीं पाती। इस कारण नहीं बोलती–लिखती कि शायद अन्य लोग पसंद न करें। ग्रामीण स्त्रियों के लिये यह चुनौती और भी व्यापक है। पहला कारण तो यही कि ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्रियों की पढ़ाई पर कम ध्यान दिया जाता है। दूसरा कारण, जो बहुत सी ग्रामीण स्त्रियाँ कहती भी हैं, यह है कि खेती–बाड़ी और घर–कारोबार की व्यस्त दिनचर्या के बीच पढने–लिखने का वक्त नहीं मिलता। अनेक महिलाएं यह मानती हैं कि बच्चों की पढ़ाई–लिखाई पर ध्यान देना है। विवाह के बाद अब स्वयं की शिक्षा का क्या औचित्य? चौथा कारण, महिलाओं की झिझक एवं सामाजिक भय से संबंधित है। लोग क्या कहेंगे–इस उम्र में पढ़ने–लिखने का शौक चर्राया है। मुझसे पढ़ना–लिखना नहीं होगा। जो स्कूल–कॉलेज में गये हैं, वो ही करें ये काम! इस प्रकार के विचार ग्रामीण महिलाओं के बीच से निरंतर सुनायी देते हैं।

इस वजह से ग्रामीण स्त्रियों को पढ़ने, सोचने और लिखने के लिये प्रेरित करने वाली राह चुनौतियों से भरी हुई है। इस राह का कोई अंत भी नहीं क्यों कि समाज में शिक्षण का काम

निरंतर चलता रहता है। विद्यालयों से प्राप्त होने वाली शिक्षा के अतिरिक्त लोक–शिक्षण की जो अन्य विधाएं उत्तराखण्ड में फली–फूली, वही ग्रामीण समाज की सोच और सृजन का आधार बनी। यह एक कारण है कि नंदा में जीवन की चेष्टा, उल्लास–उमंग, मेले–त्यौहार, अपनापन और गुस्सा इत्यादि सभी भाव दिखायी देते हैं। साथ ही, स्त्रियों के जुझाारूपन के अनुभव भी लिखे गये हैं।

पत्रिका की राह में कोलाहल, चहल–पहल तो है पर कहीं पहुँचने की हड़बड़ी नहीं दिखायी देती। नंदा बेफिक्री से ग्राम्य जीवन की आत्मा का हिस्सा बन कर उस के साथ–साथ चलती है। स्त्रियों की खुशियों, व्यथा और संघर्षों की साझी बनी रहती है। पत्रिका किशोरियों और नवयुवतियों के सपनों को समझती है। प्रौढ़ स्त्रियों के सुख–दुःख और चिंताओं को साझा करती है। बुजुर्ग महिलाओं के जीवन के पुराने दिनों की यादों के वास्तविक किरदारों और वातावरण को रचती है। पत्रिका में पहाड़ी गाँवों का इतिहास, भूगोल है। साथ ही, ग्रामीण स्त्रियों के सृजन की चेष्टा समायी है। महिला संगठन एक राह में अनेक राहें पूछते और बनाते हुए चलते हैं, यही पत्रिका के फलक का विस्तार है।

हड़बड़ी न होने का अर्थ यह नहीं कि पत्रिका से जुड़े हजारों लोग ''सब ठीक हो रहा है'' के मिथ्या–भ्रम में पड़े हैं। इस के विपरीत वास्तविकता तो यह है कि ग्रामवासी निरंतर जीवन को अच्छा बनाने में जुटे हैं। इस प्रक्रिया के पीछे स्त्रियों के आंतरिक जीवन की गहराइयाँ हैं। बाह्य और आंतरिक समाज के नियमों से टकरावों के संघर्ष भी शामिल हैं। ग्रामवासी निरंतर मौसम की मार झेल रहे हैं। तेंदुए, बंदर–सुअर, साही और काकड़–जड़याव से निरंतर टकराव बना हुआ है। साथ ही, समाज में प्राकृतिक आपदाओं से पैदा होने वाली व्यथा, उससे पार पाने के लिये विवेकपूर्ण निर्णय और सृजन का संकल्प लेने के प्रयत्न दिखायी देते हैं। भविष्य के लिये रचनात्मक कार्यों को संपादित करने की चेष्टा दिखायी देती है। दुःख–दुविधा के बीच समाज में आशा की लौ जलती रही है।

संघर्ष, वाद–विवाद जीवन का हिस्सा हैं। इन्हीं अनुभवों से सीख लेते हुए सभी साथी आगे बढ़ रहे हैं। इस राह में कभी सुखानुभूति हुई तो कभी हताशा ने भी डेरा जमाया। जुझारूपन की भावना का मूल तो यही विश्वास है कि आपदा–विपदा, व्यथा–व्याकुलता, अन्याय–अनादर, हताशा–निराशा जनित अनुभवों को राह का अंत न मानकर आगे बढ़ते रहें। उस जुनून को कायम रखें जो 2001 में पत्रिका की बुनियाद बना। इसी जज्बे के साथ पत्रिका का प्रकाशन जारी है–अथक, अविराम।

दो दशकों के इस कालखंड में नंदा कई नये साथियों के आत्मीय संसार का हिस्सा बनी। बहुत से लोग इस यात्रा में छूट गये। कुछ संस्थाओं ने किसी अन्य धन देने वाली संस्था की ओर रूख किया तो कुछ थक–हार कर निष्क्रिय हुए। कुछ ने कार्यक्षेत्र में गाँवों की संख्या कम कर दी तो कुछ नये गाँव भी परिषद् से जुड़े। नये–नये महिला संगठन बने और उन्होंने अपने अनुभव साझा किये।

साथ ही, पुराने संगठनों का कार्य चलता रहा। इस प्रकार नंदा विभिन्न आयु वर्ग की महिलाओं के साथ–साथ नये और पुराने–अनुभवी संगठनों के कार्यों का प्रतिनिधित्व करती चलती है।

पत्रिका ग्राम समुदायों को लगातार यह आश्वासन देती है कि वे जो सोचते और लिखते हैं, वह बेवजह नहीं है। ग्रामवासियों की सोच, चिंतन–मनन की क्षमता और रचनात्मक सृजन का महत्त्व है। अन्य गाँवों के महिला संगठन इन आलेखों से प्रेरणा लेते हैं। अपने क्षेत्र में भी ऐसे ही संगठनात्मक कार्य करने का प्रयास करते हैं, जैसा नंदा के लेखों में वर्णन किया गया है। लोक–शिक्षण का यह एक सर्वसुलभ और सर्वग्राही तरीका है जो कुमाऊँ–गढ़वाल में फैले हुए संगठन परस्पर मेल और संवाद से जीवंत बनाये हुए हैं। कुमाऊँ के महिला संगठन गढ़वाल से सीखते हैं और गढ़वाल के महिला संगठन कुमाऊँ से सीखते हैं। यह सीखना–सिखाना रचनात्मक कार्यों का ही नहीं बल्कि भाषा और संस्कृति के मिलन का भी माध्यम बना है। राजनीतिक या ऊपरी स्तर पर चाहे लोग कुमाऊँ और गढ़वाल को अलग–अलग क्षेत्रों के रूप में समझते और प्रचारित करते रहें, आंतरिक समाज का दर्शन यही है कि दोनों इलाकों में स्त्रियों के सुख–दुःख, दैनिक जीवन की चुनौतियाँ और संघर्ष एक समान ही हैं। पहाड़ी ग्रामीण स्त्रियों की यह पहचान जो क्षेत्रवाद, आयु–पीढ़ी और अन्य भिन्नताओं के द्वंद्व से ऊपर उठकर बनती है, नंदा के पन्नों पर स्वतः ही उभर आयी है। महिला संगठनों की सदस्याओं के बीच लंबे समय से चली आ रही दोस्ती और आपसी सद्भाव का एक पक्ष यह भी बना कि कुमाऊँ और गढ़वाल के परिवार विवाह की रस्मों से जुड़ कर एक हुए।

यह अंक एक विशेष प्रयोग के साथ तैयार हुआ है। कोविड–19 महामारी के कारण गाँवों में महिलाओं की मासिक बैठकें नहीं हो पायीं। ग्राम शिक्षण केन्द्रों के संचालन में कठिनाई होने लगी। केन्द्रों का संचालन करने वाली शिक्षिकाओं, मार्गदर्शिकाओं एवं संस्था प्रमुखों के बीच भी कार्यक्रम संचालन के संबंध में कई चुनौतियाँ बनी रहीं।

कोविड–19 लॉकडाउन से उपजे एकाकीपन को दूर करने और कुछ सृजनात्मक कार्य कर पाने की इच्छा के कारण उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान में यह तय हुआ कि सभी शिक्षिकाएं अपने जीवन और केन्द्र–संचालन के अनुभवों के बारे में लिखें। श्री कमल जोशी जी ने सभी संस्थाओं से बात की और लेखन के लिये प्रेरित किया। फलस्वरूप लगभग पचास गाँवों में शिक्षिकाओं, मार्गदर्शिकाओं एवं कुछ संस्था प्रमुखों ने अपने–अपने अनुभव लिखे। बाद में इन सभी लेखों का संकलन करते वक्त यह पता लगा कि अलग–अलग गाँवों से होने के बावजूद अधिकतर लेख लगभग एक सी बातें बताते हैं। यह ठीक भी है क्योंकि सभी रचनाकार जन्म से ही गाँवों में रहते आये हैं। दो–तिहाई लेखिकाएं विवाहित हैं, इन सभी का मायका और ससुराल भी गाँवों में ही हैं। इनमें से तीन लेखिकाएं ससुराल छोड़कर मायके में रह रही हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षिकाएं केन्द्रों के संचालन में एक समान संस्थागत ढ़ाँचे का उपयोग करती हैं।

इस अंक में शामिल चालीस प्रतिशत लेखकों के परिवार पूर्णतया कृषि पर निर्भर हैं। चौंतीस प्रतिशत प्राइवेट नौकरी, दस प्रतिशत दुकान और बारह प्रतिशत परिवार मजदूरी करके जीवन–यापन कर रहे हैं। यद्यपि गाँवों में सभी परिवार खेती करते हैं लेकिन इस काम में रूचि होने का उल्लेख किसी भी रचनाकार ने नहीं किया है। पशुओं का चारा, लकड़ी लेने के लिये जंगल जाना, खेती, गौशाला की सफाई को ''मजबूरी के काम'' लिखा गया है। अधिकतर युवा स्त्रियाँ खाना पकाना, सिलाई–बिनाई, शिक्षण केन्द्रों का संचालन, टीवी देखना और मनोरंजन के लिये मोबाइल फोन देखना पसंदीदा काम मानती हैं। लड़कियों के सापेक्ष बहुओं पर घर के कामों की ज्यादा जिम्मेदारी है पर वे भी ''फोन चलाने'' के लिये समय निकाल लेती हैं।

इस अंक के अधिकांश रचनाकार युवा स्त्रियाँ हैं, आठ प्रतिशत लेख पुरूषों ने लिखे हैं। अट्ठासी प्रतिशत रचनाकारों की उम्र अठारह से पैंतीस वर्ष के बीच है। नब्बे प्रतिशत लेखिकाओं ने बारहवीं पास की है। चालीस प्रतिशत स्नातक और पन्द्रह प्रतिशत ने एम.ए. किया है। पच्चीस प्रतिशत शिक्षिकाओं ने कम्प्यूटर या सिलाई–बिनाई सीखी है। लेखों से पता लगता है कि अठारह से पच्चीस वर्ष की लड़कियाँ पढ़ाई और घरेलू जिम्मेदारी के अतिरिक्त कुछ अन्य काम–नौकरी करना चाहती हैं। पैंतीस वर्ष से अधिक उम्र वाली स्त्रियों ने ग्राम शिक्षण केन्द्रों के संचाालन और सामाजिक हित के कार्यों को ही लक्ष्य बनाया है।

संस्था से जुड़कर सभी को लाभ हुआ हैं। अधिकतर लड़कियाँ लिखती हैं कि उनकी जिंदगी में यह एक बहुत बड़ा बदलाव है। उनका आत्म–विश्वास बढ़ा, स्वाभिमान जगा और समाज में, विशेषकर पुरूर्षों के बीच, बातचीत करने का साहस बढ़ा है। झिझक और हिचकिचाहट दूर होने से सामाजिकता बढ़ी, साथ ही व्यक्तिगत विकास भी हुआ। अधिकतर शिक्षिकाओं ने लिखा कि शिक्षण केन्द्र के कारण उनकी दिनचर्या व्यवस्थित हो गयी है। व्यर्थ समय गंवाने की बजाय वे दैनिक कामों को नियत समय पर करने की आदत बना पायी हैं। साथ ही, जिन स्त्रियों का पढ़ाई से रिश्ता टूट गया था वे पुनः किताबों और शैक्षणिक गतिविधियों से जुड़कर आत्मिक संतोष पा रही हैं। परिवार की कमजोर आर्थिक स्थिति, शादी का दबाव और माँ का स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण घर के कामों की जिम्मेदारी का उल्लेख उन बाधाओं के तौर पर हुआ है जो इन युवतियों को पढ़ने और आगे बढ़ने से रोकती हैं।

इस लेखन कार्य को करने के लिये सभी शिक्षिकाओं, मार्गदर्शिकाओं और संस्था–प्रमुखों का आभार। आशा है कि गाँवों में अन्य लोग भी इन कार्यों से प्रेरणा ले कर मुनष्य और समाज के हित में अग्रगामी बनेंगे।

अगले अंक तक शुभकामनाएं,

अनुराधा पांडे

खुद के फैसले लेना सीखा

सुमन नेगी

मेरे परिवार में माताजी, छोटा भाई और मैं रहते हैं। मेरी बड़ी बहनों की शादी हो गयी है। पहले वे दोनों भी 'नवज्योति महिला कल्याण संस्थान' गोपेश्वर में काम करती थीं। मेरी माताजी घर और खेतीबाड़ी के काम करती हैं। मैं 'संस्था' में समन्वयक का काम करने के साथ ही कॉलेज में पढ़ाई कर रही हूँ। भाई पढ़ाई के साथ प्रतियोगी–परीक्षाओं की तैयारी कर रहा है।

हमारी तीन गायें तथा दो छोटे बछड़े हैं। इनमें से दो गायें दूध देती हैं जबकि एक गाय बूढ़ी हो गयी है। घर में एक बिल्ली भी है जो मुझे बहुत अच्छी लगती है।

मैंने अपने गाँव के विद्यालयों में आठवीं तक पढ़ा और फिर नौवीं से बारहवीं तक राजकीय इंटर कॉलेज बैरांगना में पढ़ा। बैरांगना हमारे घर से चार किलोमीटर की पैदल दूरी पर स्थित है। मैंने 2013 में इंटरमीडिएट करने के बाद राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोपेश्वर में प्रवेश लिया। यहाँ से 2016 में स्नातक और 2018 में स्नातकोत्तर (भूगोल) करने के बाद वर्तमान में बी.एड. कर रही हूँ। मुझे भूगोल विषय सबसे अच्छा लगता है। इसके अलावा इतिहास और साहित्य पढ़ना भी अच्छा लगता है। अर्थशास्त्र और गणित अच्छे नहीं लगते।

मैं सुबह दस बजे तक घर के सभी काम जैसे–सफाई, नाश्ता बनाना आदि पूरा कर लेती हूँ। फिर कॉलेज या संस्था–कार्यालय में जाती हूँ। कभी–कभी ग्राम शिक्षण केन्द्रों में निरीक्षण/मार्गदर्शन, गोष्ठी आयोजित करने के लिये जाती हूँ। रात का खाना बनाने से पहले पढ़ाई करती हूँ। दस बजे खाना खाने के बाद सोने जाती हूँ। मुझे अपने सभी काम खुद करने अच्छे लगते हैं। सभी कामों को मन लगा कर पूरा करती हूँ। मेरी रुचि शिक्षा के क्षेत्र में है। सामाजिक क्षेत्र में रहना भी अच्छा लगता है। मैं वर्तमान में इन दोनों के लिये प्रयास कर रही हूँ, इनमें कोई रुकावट नहीं है।

मार्गदर्शिका के रूप में कार्य करने से पहले मैं अपने गाँव, काण्डई, में शिक्षिका थी। यहाँ मुझे काफी अनुभव मिला और तीन सालों में मैंने बहुत कुछ सीखा। जब 2011 में ग्राम पुस्तकालय खुला तो गाँव के बच्चे, महिलाएं और अन्य सभी लोग खुश हुए क्योंकि हमने पहली बार इतनी सारी किताबें एक साथ देखीं। साथ में विभिन्न प्रकार के खेलों का सामान भी था। हम प्रतिदिन केन्द्र में जाकर किताबें पढ़ते थे। इसलिए जब केन्द्र चलाने का मौका मिला तो संचालन के बारे में मुझे काफी कुछ पहले से पता था। शुरू में ज्यादा अच्छा नहीं लगा क्योंकि बच्चे कहना नहीं मानते थे और महिलाओं के साथ मीटिंग करने में परेशानी

होती थी। उसके बाद जब अल्मोड़ा में प्रशिक्षण प्राप्त किया तो मुझे बहुत अच्छा लगा। धीरे–धीरे सभी कार्य अच्छे लगने लगे और केन्द्र में मेरी रूचि बढ़ती चली गयी।

शिक्षण केन्द्र में किताबें पढ़ना मुझे बहुत अच्छा लगता था। बहुत सारी किताबें पढ़ने के साथ ही मासिक पत्रिकाओं से भी काफी जानकारी मिलती रही। बच्चों को कहानी सुनाना, जोड़ो–ज्ञान सामग्री की जानकारी देना, भावगीत कराना पसंदीदा गतिविधियाँ रही। बच्चे भी बहुत रुचि लेते थे। महिला संगठन के साथ मासिक बैठक, उनके साथ मिलकर साफ–सफाई करने के काम भी अच्छे लगते थे।

शिक्षण केन्द्र खुलने से महिलाओं और किशोरियों में काफी परिवर्तन आया है। किशोरी संगठन और महिला संगठन की गोष्ठी नियमित रूप से हो रही है। महिलाओं ने परस्पर एक दूसरे को सहयोग करना और बैठकों में अपनी बात कहना, मंचों पर आगे आना तथा गाँव के लिये कार्य करना सीखा है। *अन्य गाँवों की अपेक्षा शिक्षण केन्द्र वाले गाँवों में अंतर साफ दिखाई देता है।*

मैंने 2018 से मार्गदर्शिका के रूप में कार्य करना शुरू किया। शिक्षण केन्द्र चलाने का अनुभव मेरे पास था ही, संस्था के सचिव महानन्दजी से प्रोत्साहन भी मिला। शुरू में गोष्ठी करने में थोड़ी झिझक होती थी। अब बहुत अच्छा लगता है और *नित नए अनुभवों से सीखने का अवसर मिलता है।*

सामाजिक क्षेत्र में कार्य करने से मेरे जीवन में बहुत बदलाव आया है। शिक्षा हमें ज्ञान देती है परन्तु उसका सही उपयोग हमें हमारा समाज सिखाता है। इस क्षेत्र में जुड़ने से मुझे एक नई दिशा मिली है और लोगों के बीच जाने तथा कार्य करने एक मौका मिला है। *मैंने खुद के फैसले लेना सीखा है।*

स्वयं को सक्षम बनाया

सुनीता आर्या

कोरोना काल में पूरी दुनिया भयभीत हुई है। यह एक ऐसी महामारी है जो विगत दो वर्षों से मानव जीवन को प्रभावित कर रही है। न जाने कब तक अपना खौफ बनाये रखेगी। हमारे ग्रामीण क्षेत्रों में भी कोरोना का प्रभाव व्याप्त रहा। तेइस मार्च 2020 को माननीय प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन में कर्फ्यू के बाद लॉकडाउन प्रारम्भ हुआ और अनेक चरणों में जारी रहा।

कोरोना काल में सर्वाधिक विपदा जिन लोगों पर आयी वे प्रवासी मजदूर थे। शहरों में होटल, ढ़ाबे, कम्पनियाँ और विविध प्रकार के रोजगारों के साधन ठप्प पड़ गये। सरकारी, गैर–सरकारी संस्थाएं बंद हो गयीं। परिणामस्वरूप प्रवासी जो रोजगार के लिए शहरों को गये थे, बेघर हो गये। हाथ में काम–धन्धा कुछ नहीं था। मजबूरन मजदूर घर की तरफ लौट चले। लेकिन वे घर कैसे पहुँचें? लॉकडाउन कर्फ्यू के रूप में था। इस कारण अनेक प्रवासी भूखे–प्यासे, पैदल यात्रा करके घर पहुँचे।

कोरोना काल में पूरी दुनिया आर्थिक मन्दी से जूझ रही है। इसका प्रभाव ग्रामीण क्षेत्रों में भी हुआ। भारत गाँवों का देश है। गाँवों में रोजगार शून्य है। खाद्य–पदार्थों की समस्याएं निरंतर गाँव–घरों में आ रही हैं। चूंकि ये सामग्री गाँव में बाजार से आती हैं इसलिए लॉकडाउन के कारण बाजार से सामान लाना कठिन हो रहा है। एक समय लोगों में ऐसा भय बना कि कहीं भूखमरी न हो जाये। व्यापारी बन्धुओं पर भी भारी मार पड़ी। बगैर अनुमति के दूसरे गाँवों में जा नहीं सकते, व्यापार कर नहीं सकते हैं। इस प्रकार ग्रामीण क्षेत्रों में कोरोना वायरस विष के समान हो गया है।

इस काल में सर्वाधिक प्रभाव शिक्षा पर पड़ा। प्राथमिक शिक्षालय से विश्वविद्यालय तक सब बंद हो गये। डेढ़ वर्ष के उपरान्त भी विद्यालय बंद हैं। फलस्वरूप बच्चों से लेकर युवाओं तक सभी विद्यार्थियों की पढ़ाई का ढ़ांचा बिगड़ा हुआ है। हालांकि सरकार के निर्देशानुसार ऑनलाइन अध्ययन का साधन अपनाया गया परन्तु गाँव या पहाड़ी क्षेत्रों में ऑनलाइन पढ़ाई कर पाना कठिन है। पहाड़ी क्षेत्रों में नेटवर्क की सुविधा नहीं है। यहाँ ऑनलाइन स्टडी के लिए न कोई साध्य हैं न साधन। ऐसे में बच्चों का भविष्य खतरे में है।

आज बेरोजगारी एक प्रमुख विषय बना हुआ है। देश के युवा बेरोजगारी से जूझ रहे हैं। कोई भी रोजगार भर्तियां नहीं आ रही है। इससे युवाओं में निराशा है।

इस प्रकार एक वैश्विक आपदा के रूप में कोरोना महामारी ने मानव समाज को चारों ओर से प्रभावित किया है। इस वैश्विक आपदा में सरकार की विशेष भूमिका रही। जमीनी हालातों के अनुसार सरकार ने समय–समय पर नये कानून और नियम पारित कर के लोगों की रक्षा की। डॉक्टर, पुलिस–कर्मी एवं प्रशासनिक अधिकारियों ने निर्भय होकर निरन्तर सेवा दी और इस जंग में लगातार संघर्ष किया।

रोचक तथ्य

एक ऐसी जंग जो इतिहास में लिखी जायेगी
जो सेना ने नहीं डॉक्टरों ने लड़ी
एक जंग जो गन से नहीं साबुन से लड़ी
एक जंग जो साथ रहकर नहीं अकेले रहकर लड़ी
एक जंग जो युद्ध के मैदान में नहीं घर में रहकर लड़ी

मेरा गाँव नामिक पिथौरागढ़ जिले में मुनस्यारी तहसील से लगभग 67 किलोमीटर की दूरी पर बसा हुआ एक दूरस्थ गाँव है। इस दुरस्थ क्षेत्र में, जहाँ न संचार–साधन उपलब्ध हैं और न ही मोटर मार्ग की सुविधा है, पर्यावरण एवं शिक्षा समिति शामा ने तमाम असुविधाओं के बावजूद ग्राम शिक्षण केन्द्र खोला। मैं इस संस्था से सन् 2015 से जुड़ी हुई हूँ। संस्था के माध्यम से हमारे गाँव में अनेक सामाजिक परिवर्तन हुए हैं। गांव में शैक्षिक वातावरण पैदा होने के साथ ही बच्चों में अनेक बदलाव आये हैं।

जब मैं इस संस्था से जुड़ी तो सर्वप्रथम पाँच दिन का प्रशिक्षण लिया। उसके बाद नामिक गाँव में ग्राम शिक्षण केन्द्र में शिक्षिका का कार्य किया। प्रारम्भ में केन्द्र में बच्चे कम थे। मैं गाँव में सभी अभिभावकों से मिली। उन्हें संस्था की उपलब्धियों से परिचित करवाया। परिणामस्वरूप बच्चों की संख्या में बढ़ोत्तरी होने लगी। उसके बाद श्री केदार सिंह कोरंगा जी, जो हमारे मार्गदर्शक एवं संस्था सचिव हैं, ने गाँव में महिला संगठन एवं किशोरी संगठन बनाया। हर वर्ष संस्था द्वारा बालमेला एवं महिला सम्मेलन का आयोजन किया जाता है। इससे बच्चों एवं महिलाओं का मनोबल बढ़ता है। इस कार्य में महिला संगठन का भरपूर सहयोग रहा। समय–समय पर महिला गोष्ठी होती रही और इस कारण हमारे गाँव में विशेष सामाजिक परिवर्तन हुए।

समय–समय पर संस्था मुख्यालय अल्मोड़ा में हमारे गाँव से महिलाओं को गोष्ठी के लिए बुलाया गया। गोष्ठी में दिये गये प्रशिक्षण के माध्यम से आत्मनिर्भरता बढ़ी और उन्हें अल्मोड़ा नगर का जीवन देखने को मिला। महिलाएं वहाँ सीखी गयी गतिविधियाँ अपना

कर गाँव में बदलाव लाने का प्रयत्न करने लगीं। यह एक विशेष परिवर्तन था जो निरंतर होता रहा।

सितम्बर 2018 में संस्था के माध्यम से मुझे श्री अरबिन्दो आश्रम, दिल्ली जाने का मौका मिला जहाँ मैं मार्च 2019 तक रही। श्री अरबिन्दो आश्रम एक आध्यात्मिक केन्द्र है। यहाँ अलग–अलग राज्यों से वोकेशनल कोर्स के लिए युवक–युवतियाँ आते हैं और प्रशिक्षण प्राप्त कर बेहतरीन भविष्य का रास्ता खोजते हैं। वहाँ पर अलग–अलग विभाग हैं जैसे–टेलरिंग, हाउस–कीपिंग, हैण्डमेड पेपर, कार्पेन्ट्री, इलेक्ट्रिशयन, बेकरी और आयुर्वेदिक पैरामेडिकल। इसके साथ–साथ कम्प्यूटर और अंग्रेजी का भी कोर्स करवाया जाता है। स्पोर्टस्, योगा, म्यूजिक, डांस, आर्ट का भी कोर्स कराया जाता है। श्री अरबिन्दो आश्रम में देश–विदेश से लोग आत्मिक शान्ति के लिए आते हैं। वहाँ पर हर माह बच्चों की वर्कशॉप यानि कार्यशाला, कार्यगोष्ठी, शिक्षा–कर्मियों और ज्ञान–कर्मियों की संगत–गोष्ठी होती है। इन गतिविधियों से बच्चों को बहुत कुछ सीखने को मिलता है। हर शाम सात से साढ़े सात बजे तक मेडिटेशन होता है। यह एक मानसिक अभ्यास है। जो हमारे मन और चित्त को शांत रखता है।

श्री अरबिन्दो आश्रम बहुत सुन्दर और शांत जगह है। वहाँ से मुझे बहुत कुछ सीखने एवं देखने को मिला। सर्वप्रथम मैंने सीखा कि अपने जीवन में समय का उपयोग कैसे करें। दूसरा, प्रतिदिन *जो भी कार्य करवाया जाता था उसमें हम पूर्णरूप से सक्रिय रहा करते थे।* मैंने वहाँ पर कम्प्यूटर कोर्स किया। और इंगलिश स्पीकिंग सीखी। विशेष रूप से रूचि के अनुसार मैंने सिलाई का कोर्स किया। इन छः महिनों के कोर्स के उपरान्त हमारी परीक्षा हुई। उत्तीर्ण बच्चों का चयन हुआ। चयनित बच्चों को ट्रेनिंग के लिए एक अप्रैल 2019 को नैनीताल भेजा गया। वहाँ पर पर्वतारोहण और शिलारोहण का अभ्यास किया। इसके साथ–साथ हमें बहुत सुन्दर स्थानों पर घुमाने ले गये। सात अप्रैल को ट्रैकिंग समाप्त हुई और हम लोग आठ अप्रैल 2019 को घर वापस आये।

गाँव वापस लौटकर मैं दुबारा ग्राम शिक्षण केन्द्र से जुड़ गई। संस्था के माध्यम से ग्राम सभा गोगिना में बीस अक्टूबर 2019 से सिलाई सेन्टर खुला। मैं गोगिना व आसपास के गाँवों की महिलाओं तथा किशोरियों को सिलाई सिखा रही हूँ। शुरुआत में तीस से ज्यादा लोग आये लेकिन फिर ठंड का मौसम आया तो संख्या कम हो गयी। मार्च माह तक चौदह लोग आ रहे थे। मैंने सर्वप्रथम उन लोगों को सिलाई मशीन के बारे में बताया। उसके बाद तुरपन, बटन काज, हुक, सीधी सिलाई, बाबासूट, समीज, पेटिकोट, सादा सलवार, पटियाला

सलवार, फ्रॉक, अम्ब्रेला फ्रॉक, धोती पायजामा, ब्लाउज आदि काटना और सिलना बताया। मार्च 2020 से कोविड–19 के कारण लॉकडाउन लग गया। जुलाई 2020 में सिलाई–सेंटर पुनः खुला। जो महिलाएं पहले आती थीं उन्हें नये कपड़े काटना और सिलना सीखा रही हूँ। आजकल उन्नीस नई लड़कियाँ आ रही हैं जिन्हें प्रारंभिक कोर्स करा रही हूँ।

मेरे परिवार में छः सदस्य हैं–मम्मी–पापा, दो छोटे भाई, एक बहन और मैं। बहन की शादी हो गयी है। हमारा गाँव खेती पर निर्भर है। मेरे माता–पिता भी खेती करते हैं। ऋतुओं के अनुसार गेहूँ, जौं, राजमा, आलू, चौलाई, मडुआ, मसूर, भट्ट आदि और साग–सब्जियों में गोभी, टमाटर, प्याज, पालक, धनिया, मेथी आदि उगाई जाती है। पालतू पशुओं में दो गाय और दो बछड़े हैं।

मेरी शिक्षा बी.ए. तक हुई है। इण्टर और बी.ए. मैंने मुनस्यारी, जिला पिथौरागढ़ से किया। मैं सुबह पाँच बजे उठ जाती हूँ। सबसे पहले चाय बनाती हूँ। चाय पीने के बाद घर की सफाई और उसके बाद नाश्ता बनाती हूँ। नाश्ता करने के बाद दस से दो बजे तक सिलाई केन्द्र चलाती हूँ। उसके बाद घर आकर खाना खाती हूँ। आजकल खेतों में गुड़ाई का काम चल रहा है तो मैं भी वहाँ जाती हूँ। अक्टूबर–नवम्बर में घास काटने का समय होता है।

मुझे जीवन में टीचर बनना था पर पारिवारिक परिस्थितियों के कारण आगे की पढ़ाई नहीं कर पाई। लेकिन मैंने जीवन में खुद के लिये एक काम अपनाया जिसे मैं पढ़ाई के साथ खुशी–खुशी करती हूँ। यह कार्य मशीन से सिलाई, बुनाई और कढ़ाई करना है।

हमारे गाँव में दिसम्बर 2013 से शिक्षण–केन्द्र शुरू हुआ। आरम्भ में दुर्गा देवी शिक्षिका बनी। उनका परिवार गाँव से पलायन कर गया तो दीपा ने केन्द्र चलाया लेकिन कुछ समय बाद उसकी शादी हो गयी। जून 2015 में संस्था के प्रमुख श्री केदार सिंह कोरंगा जी द्वारा मेरा चयन शिक्षिका के तौर पर किया गया। मुझे प्रशिक्षण के लिये अल्मोड़ा बुलाया गया। वहाँ से वापस लौटने के बाद तेइस जून 2015 से मैंने केन्द्र चलाया। उस वक्त उन्तीस बच्चे आते थे। बच्चों की संख्या बढ़ने लगी तो संस्था द्वारा गाँव में एक और केन्द्र खोला गया जिसे पहले पाँच–छः महीने उत्तम सिंह ने और उनके बाद नीरा ने चलाया। उसी दौरान अक्टूबर 2018 में संस्था के माध्यम से श्री अरविन्दो आश्रम दिल्ली में व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त करने चली गयी। वहाँ बहुत कुछ सिखाया जाता है। इससे बेहतरीन भविष्य का रास्ता खोल सकते हैं।

जब मैं आश्रम में प्रशिक्षण ले रही थी उसी दौरान मेरी बहन को घास काटते वक्त चोट लग गयी थी और कुछ समय के बाद उसकी शादी तय हो गयी। इन परिस्थितियों में दुबारा अरविन्दो आश्रम दिल्ली नहीं जा पायी।

उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान द्वारा 2019 में गोगिना में सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र खोला गया मेरा चयन प्रशिक्षिका के रूप में हुआ। संस्था प्रमुख श्री केदार भाई जी और महिलाओं की बैठक में माला को शिक्षण केन्द्र की जिम्मेदारी दी गयी। मैंने 19 नवम्बर 2019 से गोगिना में सिलाई केन्द्र का संचालन शुरू किया। सिलाई सीखने वालों की संख्या 28 थी। फिर खेती का काम, कोरोना महामारी और बहुत लड़कियों/महिलाओं द्वारा सिलाई सीख लेने के कारण संख्या धीरे–धीरे कम हो गयी। हमारे गाँव के लोगों ने संस्था से सिलाई केन्द्र खोलने को कहा। पन्द्रह जून 2021 से नामिक में सिलाई प्रशिक्षण शुरू कर दिया गया। वर्तमान में 39 किशोरियाँ और महिलाएं सीख रही हैं।

हमारे गाँव में संस्था के कार्यक्रमों से बहुत परिवर्तन हुआ है। पहले परम्पराओं के कारण और स्कूल–कॉलेज दूर होने की वजह से लड़कियों को अधिक पढ़ाया–लिखाया नहीं जाता था। बहुत कम उम्र में उनकी शादी कर दी जाती थी या उन्हें घर के कामों की ज़िम्मेदारी उठानी पड़ती थी। उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान द्वारा महिलाओं और किशोरियों को गोष्ठियों में अल्मोड़ा बुलाया जाने लगा। यहाँ अनेक नये लोगों से मिलने–जुलने और उनके साथ विचार–विमर्श करने का अवसर मिला। गाँव में महिला संगठन सशक्त हुआ और उन्होंने नशा–मुक्ति जैसे अभियान चलाये।

मैं जब से संस्था से जुड़ी हूँ तभी से कुछ न कुछ नया देखने व सीखने को मिला। *मैंने पहले अपने गाँव में केन्द्र चलाया, फिर दूसरे गाँव में सिलाई सिखाने गयी और अब अपने गाँव में सिलाई सिखा रही हूँ।* मैं अपनी दिनचर्या और जीवनचर्या में पहले की अपेक्षा बहुत बदलाव देखती हूँ। *आज मैं समय बचा कर काम करती हूँ और अपने लिये भी समय निकाल लेती हूँ।* पहले मैं किसी से बात करने में हिचकिचाती थी और भीड़–भाड़ वाली जगहों में जाने से ही डरती थी। संस्था से जुड़ने के बाद व्यक्तित्व में बेहद बदलाव देखा है। अब मैं अपना कोई भी काम करने में स्वयं को सक्षम पाती हूँ।

संस्था से जीवन बदल गया

उमा बोरा

संस्था ने हमारे गाँव में बाइस साल पहले बालवाड़ी खोली थी। पहले पड़ोस के डसीलाखेत और कुसमाड़ गाँवों की लडकियाँ और बाद में हमारे गाँव की नीमा बालवाड़ी में शिक्षिका बनीं। नीमा की शादी होने के बाद एक अन्य नीमा और फिर अनीता ने बालवाड़ी चलायी। बालवाड़ी खुलने से हमारे गाँव में बहुत परिवर्तन आया। इसके बाद गाँव में महिला साक्षरता केन्द्र खुला। केन्द्र में ममता नाम की दो अलग–अलग लड़कियों ने काम किया–एक डसीलाखेत की निवासी है और दूसरी भन्याणी गाँव की रहने वाली है। इसके बाद ग्राम–पुस्तकालय खुला। रेखा ने संचालन किया। इसमें बहुत सारी किताबें और खेल–सामग्री थी। संस्था के इन सब कामों से हमारे गाँव में काफी बदलाव आया। उदाहरण के लिये इस गाँव की बालवाड़ी में पढ़ी हुई लड़की आज हमारे गाँव के कम्प्यूटर–साक्षरता केन्द्र की संचालिका है।

मेरा जन्म भन्याणी गाँव में ही हुआ है। मैं कक्षा आठ तक पढ़ी हूँ। मेरे परिवार में पिताजी, तीन भाई, दो भाभियाँ, दो भतीजे और दो भतीजियाँ हैं। मैं शिक्षण केन्द्र से 2014 से जुड़ी हूँ। पहले हमारे गाँव की एक लड़की कविता ग्राम शिक्षण केन्द्र चलाती थी। उसकी शादी होने पर मुझे मौका मिला लेकिन आत्म–विश्वास की कमी होने के कारण मैंने मना कर दिया। फिर हमारे गाँव में संस्था के बची सिंह बिष्ट जी और उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान, अल्मोड़ा से रमा दीदी लोग आये। उन्होंने मेरा हौसला बढ़ाया कि मैं यह काम कर सकती हूँ।

जब मैं पहली बार प्रशिक्षण के लिये अल्मोड़ा गयी तो बड़ी घबराहट हुई। मैंने हिम्मत दिखाने की बहुत कोशिश की। फिर भी डर लग रहा था क्योंकि मैं ज्यादा पढ़ी–लिखी नहीं हूँ। पढ़ाई छूट जाने के कारण जितना पढ़ा–लिखा था वह भी भूल चुकी थी। मुझे लगता कि मुझे ही कुछ नहीं आता है तो बच्चों को क्या सिखा पाऊँगी? अल्मोड़ा के प्रशिक्षण–कार्यक्रम में बहुत पढ़ी–लिखी लड़कियाँ आयी हुई थीं। उन्हें देखकर मुझे पुनः ऐसा लगने लगा कि मैं इस काम के योग्य नहीं हूँ लेकिन ट्रेनिंग में बहुत रोचक चीजें सिखाई जा रही थीं। धीरे–धीरे मेरा मन लग गया और मैं गतिविधियों में भाग लेने लगी। धीरे–धीरे मुझे यह काम करना अच्छा लगने लगा। एक प्रकार से मुझे फिर पढ़ने–लिखने का अवसर मिल गया।

प्रशिक्षण से लौटने के बाद मेरी एक समस्या यह थी कि बच्चों के साथ कैसे कार्य करूँगी। एक तो मैं कम बोलती थी और दूसरा मुझे बच्चे बिल्कुल पसंद नहीं थे, क्योंकि वे हल्ला करते थे। धीरे–धीरे मैं बच्चों से और बच्चे मुझसे दोस्ती करने लगे। केन्द्र में कुछ चीजें मैं बच्चों को सिखाती थी तो कुछ चीजें वे मुझे सिखाते थे। इस तरह मुझमें बहुत बदलाव आने लगा। जैसे–मैं दूसरी बार प्रशिक्षण के लिये अकेले ही अल्मोड़ा गयी। मैंने लोगों से बातचीत करना सीखा। जब कभी महिला संगठन की बैठक में राजू बिष्ट जी (समन्वयक) नहीं आते थे तो मैं ही गोष्ठी का संचालन करती थी। पहले समझ में नहीं आता था कि कैसे बात करूँ और किन मुद्दों पर बोलूँ। मैंने धीरे–धीरे यह काम सीखा क्योंकि बच्चों, किशोरियों और महिलाओं सभी के साथ बात करनी होती थी। *मुझे बच्चों के साथ बच्चा, किशोरियों के साथ किशोरी और महिलाओं के साथ महिला बनना पड़ता है।* अब बच्चों का साथ, खासकर उनके साथ खेलना, मुझे सबसे अच्छा लगता है।

हम अपने केन्द्र में विभिन्न स्थानीय व राष्ट्रीय त्यौहार मनाते हैं। उदाहरण के लिये इस बार हमने शिक्षण–केन्द्र में बच्चों, किशोरियों और महिलाओं के साथ धूमधाम के साथ होली मनाई।

हमने एक किशोरी–संगठन भी बनाया है। इसकी बैठक हर महीने की बारह तारीख को करते हैं। इसका कोष भी जमा करते हैं। संगठन से किशोरियों और महिलाओं में काफी बदलाव आया है। जैसे–महिलाओं में लड़कियों को पढ़ाने व आगे बढ़ाने की सोच तथा गोष्ठी में अपनी बात खुलकर रखने का आत्म–विश्वास आया। *किशोरियाँ घर से बाहर निकलने लगी हैं, अपनी पढ़ाई पर ध्यान देने लगी हैं और उनमें आगे बढ़ने की ललक जगी है।* संस्था से हमारे गाँव में सिलाई–प्रशिक्षण का कार्यक्रम भी चला। अधिकांश किशोरियों और महिलाओं ने सिलाई करना सीखा है। कुछ महिलायें अपने कपड़े खुद सिलने के साथ ही दूसरों के कपड़े सिलकर अपने घर का खर्चा भी चला रही है। 2019 से गाँव में संस्था द्वारा एक कम्प्यूटर साक्षरता केन्द्र खोला गया है। इस में बच्चे और किशोरियाँ कम्प्यूटर सीख रहे हैं। इस तरह संस्था के माध्यम से गाँव में अनेक महत्वपूर्ण बदलाव आये हैं।

सामाजिक हित के काम करूँगा

केदार सिंह कोरंगा

मेरा जन्म शामा गाँव, जिला बागेश्वर, में हुआ। उस समय मेरे पिताजी की उम्र पैंसठ वर्ष थी। मैं पिताजी की तीसरी शादी के उपरांत पैदा हुआ। पहली दो शादियों से कोई संतान नहीं हुई थी। मेरी चार बड़ी बहनें और एक छोटा भाई था। भाई की बचपन में ही टाइफाइड से मृत्यु हो गयी। चारों बहनों की शादी हो गयी और उनके अपने–अपने परिवार हैं। मेरे परिवार में पत्नी, दो बेटे, बहू और एक पोती है। वे सभी तराई क्षेत्र में गेहूँ और धान की खेतीबाड़ी करते हैं। तीन गायें भी पाली हैं जिनका दूध घर के उपयोग के अतिरिक्त डेरी में जाता है।

मैं शामा के घर में रहता हूँ। बड़ा बेटा भी कभी मेरे साथ रहता है। शामा में सब्जी–उत्पादन (गोभी, मटर, टमाटर, हल्दी, लहसुन आदि) तथा अपने उपयोग के लिये मक्का, राजमा, भट्ट, उड़द आदि पैदा करते हैं।

मैंने प्राथमिक विद्यालय शामा–पन्याली और जवाहरलाल नेहरू उच्चतर माध्यमिक विद्यालय शामा में पढ़ाई की। पिताजी के देहांत के कारण हाईस्कूल के पश्चात् नियमित पढ़ाई रुक गयी। व्यक्तिगत परीक्षार्थी के तौर पर इंटर उत्तीर्ण किया। हिंदी, इतिहास और अर्थशास्त्र के अलावा जीव–विज्ञान, भौतिक विज्ञान विषय भी अच्छे लगते थे। गणित और अंग्रेजी समझने में कठिनाई होती थी।

मैं सुबह चार बजे उठने के बाद नित्यकर्म से निवृत्त होकर चाय पीता हूँ। इसके बाद रात के बर्तन साफ करना, झाड़ू लगाना, कपड़े धोना आदि काम होते हैं। साढ़े आठ बजे से पॉलीहाउस में सब्जियों की सिंचाई, दस से ग्यारह बजे खेतों में काम, भोजन के बाद थोड़ी देर आराम और फिर कहानी/उपन्यास आदि पढता हूँ। शाम को घूमना, उसके बाद रात का खाना बनाना और नौ बजे तक सो जाता हूँ। जब कार्य–क्षेत्र में जाता हूँ तो दिन के समय गाँव–सम्पर्क, लोगों से बातचीत तथा शाम के समय केन्द्रों का निरीक्षण करता हूँ।

मैंने 1987 से उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान के साथ जुड़कर गाँवों में काम किया है। क्षेत्र में खेल का मैदान, पौधशाला, वनीकरण, जल संरक्षण, बालवाड़ी आदि कार्यक्रम शुरू किये। तब बालवाड़ी के संचालन के लिये आठवीं पास शिक्षिका भी नहीं मिल पाती थी। हमारी संस्था ने दूर–दूर गाँवों में छब्बीस बालवाड़ियों का संचालन किया।

एक बार शिक्षा विभाग (भारत सरकार) में संयुक्त सचिव के पद पर कार्यरत एक अधिकारी हमारा काम देखने आये। तीन दिनों तक हमारे कार्यक्षेत्र में भ्रमण के उपरांत उन्होंने मुझसे कहा, "जब मैं दिल्ली से अल्मोड़ा पहुँचा तो सोच रहा था कि इसके आगे कोई गाँव नहीं होगा, बस हिमालय होगा। लेकिन शामा आया तो देखकर चकित रह गया कि अल्मोड़ा से डेढ़ सौ किलोमीटर दूर भी गाँव हैं और इतने दुर्गम क्षेत्रों में आप जैसे युवा काम कर रहें हैं।'' बालवाड़ी कार्यक्रम बन्द होने के बाद उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान के सहयोग से महिला साक्षरता केन्द्र, संध्या–केन्द्र, ग्राम–पुस्तकालय, कम्प्यूटर साक्षरता केन्द्र और किशोरी शिक्षण कार्यक्रमों का संचालन और मार्गदर्शन किया। वर्तमान में ग्राम शिक्षण केन्द्र, कम्प्यूटर साक्षरता केन्द्र और किशोरी/महिला सिलाई–केन्द्र संचालित हो रहे हैं। गाँवों में महिला संगठन हैं जो महिलाओं को जानकारी देने तथा आगे बढ़ने के अवसर प्रदार करने के सशक्त माध्यम बने हैं।

उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान के कार्यक्रमों से जुड़कर मुझे भी काफी जानकारियाँ प्राप्त हुईं। समय–समय पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों, गोष्ठियों में भाग लेने, अन्य बहुत सी संस्थाओं के कार्यक्षेत्र में भ्रमण करने और गाँवों में जन–संपर्क करने से सामाजिकता भी बढ़ी।

बीच में आठ वर्ष परिवार के साथ तराई में रहा। इस दौरान खेतीबाड़ी के साथ ही क्षेत्र पंचायत सदस्य और दुग्ध–डेयरी का अध्यक्ष भी रहा। आगे भी जब तक कर पाऊँगा, यही सामाजिक हित के काम करूँगा। गाँवों में काम करने में कठिनाई भी आती है। लोग समझते हैं कि इनकी नौकरी है। इन्हें काफी वेतन और बजट मिलता होगा, नहीं तो इतनी दौड़–भाग क्यों करते हैं। पहले लोगों का आपस में जो जुड़ाव था उसमें भी अब काफी फर्क हो गया है। जो परिवार सम्पन्न हैं वे स्वयं को अन्य लोगों से अलग समझते हैं। इसका प्रभाव संगठनात्मक कार्यों पर होता है। तथापि, यह कहना उचित होगा कि शामा क्षेत्र में आज भी बहुत अच्छा सद्भाव और आपसी सहयोग दिखायी देता है। लोग मिलजुल कर रहते हैं, एक–दूसरे की मदद करते हैं तथा गाँवों में संगठन की भावना बनी हुई है।

झिझक दूर हो रही है

करीना बिष्ट

मेरा जन्म स्थान ग्राम कुकड़ई, जिला चमोली, में है। परिवार में मम्मी–पापा, चाचा–चाची, बुआ और भाई–बहन हैं। पापा खेती–बाड़ी करते हैं। मम्मी और चाची घर का काम करते हैं। चाचा प्राइवेट 'जॉब' करते हैं। बुआ आंगनवाड़ी कार्यकर्त्ती है। बहन की शादी हो गयी है। भाई बारहवीं में पढ़ रहा है। हमारे बहुत से खेत हैं। इनमें से आधे खेतों में मडुआ तथा धान बो रखे हैं। आजकल गुड़ाई का काम चल रहा है। हमारी एक भैंस और दो बैल हैं।

मैंने कक्षा पाँच तक कुकड़ई गाँव में पढ़ा। तत्पश्चात् जाख से इंटर पास किया। वर्तमान में कर्णप्रयाग में बी.ए. दूसरे वर्ष की पढ़ाई कर रही हूँ। मुझे गणित और विज्ञान विषय अच्छे लगे लेकिन इन्हीं विषयों को पढ़ने में कठिनाई भी आयी।

मैं सुबह साढ़े पाँच बजे उठती हूँ। हाथ–मुँह धोकर मवेशियों को घास देने जाती हूँ। गौशाला से लौटकर रोटी बनाती हूँ। सब्जी मेरी मम्मी बनाती है। रोटी खाकर मम्मी के साथ खेतों में चली जाती हूँ। वहाँ से बारह बजे वापस लौटकर दिन का खाना बनाना और इस बीच फोन देखना कि हमें क्या काम मिला है या कोई आवश्यक सूचना हो तो वह देखती हूँ। दिन में ढ़ाई से साढ़े चार बजे तक आराम करती हूँ। चाय पीकर घास लेने जाना, वापस आकर रात का खाना बनाना और खाने के बाद कॉलेज या ग्राम शिक्षण केन्द्र का काम करके ग्यारह बजे सो जाती हूँ। मजबूरी के कामों में मुख्य है कि कभी–कभी खेतों में जाने का मन नहीं होता लेकिन घर में नहीं रह सकती क्योंकि खेत ज्यादा हैं। गाँव के अन्य लोग जल्दी–जल्दी खेतों का काम खत्म करते हैं इसलिए हमें भी इसी परंपरा के अनुसार काम करना होता है। खाना बनाना मुझे अच्छा लगता है। मैं जीवन में आगे नौकरी करना चाहती हूँ। अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती हूँ। गाँव में लड़कियों की जल्दी–जल्दी शादी कर दी जाती है। लेकिन मैं सोचती हूँ कि लड़कियों को भी कुछ जॉब करना चाहिये। उसके बाद शादी करनी चाहिये।

मेरे गाँव में ग्राम शिक्षण केन्द्र एक जुलाई 2018 से शुरू हुआ। शुरू से मैंने ही केन्द्र का संचालन किया। इससे पहले केन्द्र दियारकोट गाँव में था, इसे रूपा दीदी चलाती थी। 'शेप' संस्था की मार्गदर्शिका लक्ष्मी दीदी ने हमारे गाँव में आकर ग्राम प्रधान से केन्द्र खोलने के बारे में बात की। उसने गाँव की गोष्ठी में यह बात सबके सामने रखी। ग्राम–प्रधान और महिलाओं की सहमति से संस्था द्वारा मेरा चयन हुआ। तब मैं बारहवीं

पास करने के बाद घर पर खाली बैठी थी। मैंने तुरंत मंजूरी दे दी। शुरू से ही मुझे बच्चों को पढ़ाने का बड़ा शौक रहा है, इसलिये मुझे अच्छा लगा।

हमारा ग्राम शिक्षण केन्द्र 'पंचायत घर में चलता है। इसमें एक कमरा तथा बाहर से खुला मैदान है। बच्चे वहाँ खेलते हैं। केन्द्र स्कूल के दिनों में गर्मियों में साढ़े तीन से साढ़े पाँच बजे और सर्दियों में चार से छः बजे तक चलता है। छुट्टियों के दिनों में गर्मियों में तीन से पाँच और सर्दियों में दस से साढ़े बारह बजे तक खुलता है।

केन्द्र में शतरंज, कैरम, बैडमिंटन आदि खेल सामग्री उपलब्ध है। गणित सीखने के लिये गणितमाला, जोड़ो क्यूब, रंगोंमेट्री आदि हैं। इनके आलावा नक्शे, ग्लोब और किताबें हैं। किताबों की कुल संख्या तीन सौ तीस है। केन्द्र में सबसे ज्यादा पढ़ी जाने वाली किताबें हैं–''पाजी बादल, हाथी की हिचकी, सुरीली की लम्बी टांगें, जादुई बांसुरी, मेंढक राजकुमार, गुन–गुन करती मधुमक्खी आदि।'' मैंने दो सौ के लगभग किताबें पढ़ी हैं। विज्ञान डायरी, हमारा शरीर, स्वर्ग की सैर और जीवनी की पुस्तकें मुझे रोचक लगीं। किताबों के अलावा "पहले बूझो" खेल अच्छा लगा।

केन्द्र में बच्चों को भावगीत करना सबसे ज्यादा पसंद है। इसके साथ–साथ छोटे बच्चों को पत्तियाँ इकट्ठी करके उनका वर्गीकरण करना और उनके बारे में जानकारियाँ जुटाना रोचक लग रहा है। बच्चे बैडमिंटन और शतरंज आनंद के साथ खेलते हैं।

किशोरियाँ केन्द्र में आकर पढ़ने के लिए किताबें ले जाती हैं। *वे गोष्ठी के दौरान अपनी परेशानियाँ साझा करती हैं जिनका हल ढूँढा जाता है।* महिलाओं में भी परिवर्तन हुआ। जो महिलाएं पीछे रहती थीं, उन्हें महिला–सम्मेलनों में आगे आकर अपनी बात रखने का मौका मिल रहा है। *उनकी झिझक दूर हो रही है।* महिलाओं का संगठन पहले से मजबूत बन गया है।

बच्चे पहले स्कूल के बाद इधर–उधर घूमते, फालतू काम करते और आपस में झगड़ते थे। केन्द्र खुलने के बाद वे पढ़ाई, खेल और अन्य रचनात्मक गतिविधियाँ करते हैं। *यहाँ उनका मन लगा रहता है।* वे रोज समय से पहुँच जाते हैं।

केन्द्र से जुड़कर मुझे भी बहुत सी जानकारी प्राप्त हुई, जैसे–बच्चों से कैसे बात करनी है, उन्हें पढ़ाने का ढंग क्या हो और भावगीत कैसे करें। ऐसी गतिविधियाँ मैंने पहले न की थी और न देखी थी। मेरी दिनचर्या पर भी प्रभाव पड़ा। *पहले मैं दिनभर फालतू समय नष्ट करती थी, कोई 'टाइम–टेबल' नहीं था।* लेकिन अब तीन बजे केन्द्र में जाना है और समय के हिसाब से काम करना है। मेरे कौशल और *व्यक्तित्व में भी बदलाव आया है, जैसे किताबें पढ़ना और महिलाओं व पुरुषों के साथ खुलकर बात करना सीखा है।*

ग्राम शिक्षण केन्द्र को अधिक रोचक बनाने के लिये नये–नये खेल तथा अन्य गतिविधियाँ जैसे–शैक्षिक भ्रमण कराना चाहिये। छोटे बच्चों को रंग बहुत अच्छे लगते हैं इसलिये उनके साथ चित्रांकन को खूब महत्व दिया जाना चाहिये।

गाँव में मार्च महीने के अंत में महामारी का प्रकोप बढ़ने लगा। बूढ़े, जवान और बच्चे सभी को एक–एक करके बुखार, खांसी और सर–दर्द होने लगा। लोगों के मन में डर बैठ गया। इस आशंका से कि कहीं उनकी रिपोर्ट पॉजिटिव न आ जाये लोग जाँच कराने नहीं गये। क्षेत्र में बहुत से लोगों ने घरेलू दवाओं का सेवन किया। ग्राम–प्रधान ने गाँव को सैनीटाइज कराया और मास्क वितरित किये। साफ–सफाई पर ध्यान दिया गया। लोगों ने घर की सब्जियों और अनाज (क्वैराल, झंगोरा, कोदा, हरी सब्जी आदि) का सेवन किया। इस कारण गाँव में हालात सुधरने लगे। इसके अलावा ग्रामवासियों ने नियम बनाया कि कोई भी बाहरी या अन्य गाँव का व्यक्ति गाँव में प्रवेश नहीं कर सकता। वापस आये प्रवासियों को एक अलग भवन में रखा गया। गाड़ियाँ बन्द होने के कारण लोग आवश्यक सामान लेने जीप या कार बुक करके गये।

स्कूल बन्द हो गये। ग्राम शिक्षण केन्द्र के बच्चों को मास्क वितरित किये जिन्हें वे घर में भी पहनते हैं। महामारी का प्रकोप कम होने के बाद हफ्ते में सिर्फ दो दिन केन्द्र में गये। वहाँ साफ–सफाई की। स्कूल बन्द हो जाने के कारण गाँव में शिक्षा का एकमात्र साधन ग्राम शिक्षण केन्द्र था। अभिभावकों ने कहा कि बच्चों को पढ़ाओ और केन्द्र को बन्द मत करो। मैंने कभी घर पर और कभी केन्द्र में बच्चों को पढ़ाया। वृक्षारोपण कार्यक्रम में सभी बच्चों ने पेड़ लगाये। 'योग दिवस' के दिन योग करने के साथ ही इसके फायदे बताये गये। गाँव में महामारी का डर कम होने के बाद अब हम केन्द्र को निरंतर खोल रहे हैं।

घर, जंगल और खेती के काम

रेखा रावत

मेरे परिवार में आठ सदस्य हैं–माता–पिता, दो भाई, दो भाभियाँ और एक भतीजा। पापा मिस्त्री का काम और दोनों भाई दिल्ली में प्राइवेट जॉब करते हैं। माँ घर के कामों के साथ ही खेती करती है। हमारी दो गाय व दो बछिया हैं। हमारे बहुत से खेत हैं। खेतों से हमारे लिये साल में छः महीने का अनाज और गायों के लिये घास हो जाता है।

मैंने राजनीति–विज्ञान में एम.ए. किया है। सबसे अच्छे विषय हिंदी और राजनीति–विज्ञान लगते थे। गणित और अंग्रेजी विषय अच्छे नहीं लगते थे। *अभ्यास करने के बाद समझ में आ ही जाता है लेकिन बहुत मेहनत करनी पड़ती है।*

मैं सुबह छः बजे उठकर घर की सफाई करती हूँ। उसके बाद नाश्ता बनाती हूँ। माँ के साथ खेतों में जाती हूँ, वापस घर आकर खाना बनाती हूँ। भोजन के बाद थोड़ी देर आराम करती हूँ। लॉकडाउन से पहले मैं तीन बजे केन्द्र में जाती थी और सात बजे वापस घर आती थी। आजकल शाम के समय गायों के लिये घास लेने जाती हूँ। शाम का खाना बनाने में माँ को सहयोग करती हूँ। फिर मैं कहानी की किताबें पढ़ती हूँ। मुझे घर, जंगल और खेती के सभी काम अच्छे लगते हैं इसलिए मैं इन्हें खुशी–खुशी करती हूँ।

चौण्डली में पुस्तकालय का काम 2011 में शुरू हुआ। सबसे पहले लक्ष्मी नेगी ने केन्द्र चलाया। अब वे पिछले कई सालों से मार्गदर्शिका का काम करती हैं। उनके बाद मनीषा नेगी ने संचालित किया। उनकी शादी के बाद 2014 से केन्द्र का संचालन मैं कर रही हूँ। 2014 में पुस्तकालयों को ग्राम शिक्षण केन्द्र के रूप में विकसित किया जाने लगा था।

ग्राम शिक्षण केन्द्र से जुड़ाव पहले से था। मैं वहाँ किताबें लेने आती–जाती थी। मुझे वहाँ का माहौल अच्छा लगता था। गाँव के लोगों ने भी मेरा चयन किया और मुझे तो यह काम करना ही था। इस तरह मैं शिक्षण केन्द्र की संचालिका बन गयी।

ग्राम शिक्षण केन्द्र पंचायत–भवन में संचालित होता है। कमरा बहुत बड़ा है और बाहर खेलने को काफी जगह है। केन्द्र गर्मियों में स्कूल के दिनों में चार से साढ़े छः बजे और छुट्टी के दिनों में नौ से बारह बजे तक चलता है। सर्दियों में स्कूल के दिनों में चार से साढ़े पाँच और छुट्टी के दिनों में दस से एक बजे तक केन्द्र खुलता है।

ग्राम शिक्षण केन्द्र में जोड़ो ज्ञान, गणित माला, चार्ट, ग्लोब, मानचित्र, खेल सामग्री, मापन सामग्री, डिक्शनरी व तीन सौ पचास किताबें हैं। बच्चे छोटी कहानियों वाली किताबें अधिक

पढ़ते हैं। मैंने तीन सौ किताबें पढ़ी हैं। 'मेरी विज्ञान डायरी' पुस्तक सबसे अच्छी लगी। अमर उजाला अखबार व पत्रिकाएं भी आते थे लेकिन अब लॉकडाउन के कारण नहीं आते।

केन्द्र में सबसे अच्छी गतिविधि कहानी सुनना और सुनाना लगता है। बच्चे चित्रांकन में भी खूब रुचि लेते हैं। इनके अलावा भावगीत/चेतना–गीत, भ्रमण तथा खेल–खेल में सीखने की गतिविधियाँ बच्चों को अच्छी लगती हैं। ग्राम शिक्षण केन्द्र खुलने से बच्चों में बड़ा बदलाव यह आया है कि वे शाम के समय केन्द्र में आकर खेल–कूद, किताबें पढ़ने की क्रियाओं में खुश रहते हैं। आपस में मेलजोल से रहते हैं। वे पूरा दिन स्कूल, गाँव और घर में क्या–क्या हुआ इसके बारे में बातचीत करते हैं।

किशोरियों को अपनी बात एक–दूसरे से कहने का मौका मिला है। भविष्य में क्या करना चाहती हैं उसके बारे में बात करने का मंच मिला है। किशोरियों में परस्पर सहयोग की भावना बढ़ी है। महिलाएं केन्द्र से किताबें पढ़ने के लिये ले जाती हैं। उन्हें महिला–सम्मेलनों में आगे आकर बेझिझक बोलने का मौका मिला है।

स्वयं के बदलावों के बारे में बात करूँ तो लोगों के साथ मिलने–जुलने से आत्मविश्वास बढ़ा। हर दिन के कामों का समय तय हुआ तथा सिखाने के साथ ही सीखने को भी मिला। कम्प्यूटर में काम करना केन्द्र में ही सीखा। यह कौशल आगे जीवन में भी काम आयेगा। केन्द्र को अधिक रोचक बनाने के लिये नई गतिविधियाँ और अभिभावकों के साथ बातचीत करनी चाहिये।

महामारी ने 2021 में गाँवों में पैर पसारे। लोगों में डर था लेकिन यह किसी ने नहीं सोचा था कि संक्रमण और मृत्यु के मामले बहुत ज्यादा बढ़ जायेंगे। जब गाँव और आसपास के क्षेत्रों में लोग संक्रमित हो गये तो भय का माहौल छा गया। तत्काल हमारे गाँव में बैठक बुलाई गयी और कोविड से बचाव के बारे में जानकारी दी गयी। संक्रमित व्यक्ति के परिवार से भी दूरी बना कर रखी। जब तक पूरे परिवार की रिपोर्ट नेगटिव नहीं आ गयी तब तक लोगों में डर बना रहा। बच्चे या बड़े अगर घर से बाहर गाँव में जा रहे थे तो मास्क व सैनीटाइजर का उपयोग कर रहे थे।

केन्द्र बन्द रहा लेकिन हम हफ्ते में एक बार वहाँ जाकर सफाई करते रहे। बच्चों को घर जाकर किताबें पढ़ने के लिये दीं। लोग बाहर से सब्जी व अन्य सामान धोकर घर के भीतर ला रहे थे। जो लोग बाहर से गाँव लौट कर आये उनके घर के सामने से जाने में भी लोग डर रहे थे। जो पहले टीका लगवाने में डर रहे थे, बीमारी के डर से वे भी टीकाकरण कराने लगे। अब स्थिति सामान्य हो जाने के कारण नियमित रूप से केन्द्र खोल रहे हैं। केन्द्र खुलने से अभिभावक बहुत खुश हैं।

लड़कियाँ कमज़ोर नहीं

सीता रौतेला

मैं गोगिना गाँव, जिला बागेश्वर में रहती हूँ। हिमालय की वादियों में बसा यह खूबसूरत गाँव कुछ साल पहले तक सड़क से नहीं जुड़ा था। मैंने अपना थोड़ा सा बचपन गाँव में बिताया और पाँचवीं तक यहीं पढ़ा। उसके बाद मैं दिल्ली चली गयी।

जब मैं दिल्ली गयी तो मुझे पढ़ाई में बहुत कठिनाई आई। जी.जी.एस.एस. स्कूल में दाखिला हुआ। वहाँ हर विषय की अलग–अलग अध्यापिकाएं थीं और पढ़ाई भी बहुत अच्छी होती थी। उस स्कूल में मैंने बारहवीं कक्षा तक पढ़ा और दसवीं के बोर्ड में तीसरा स्थान प्राप्त किया। ग्यारहवीं मैं मैंने कॉमर्स लिया। इसमें छः विषय थे–अकाउंटेंसी, बिजनैस, इकोनॉमिक्स, मैथ्स, इंग्लिश और इन्फॉरमेशन टेक्नोलॉजी। मैं गणित में कमज़ोर थी। मैंने गणित का ट्यूशन भी लिया। मुझे लगता था कि मैं गणित में पास नहीं हो पाऊँगी। मैं ग्यारहवीं में फर्स्ट–टर्म में फेल भी हुई। तब मेरे पापा ने हिम्मत दी। कहा कि सेकेंड सेमेस्टर बचा है। इंटर में अचानक सारे विषय अंग्रेजी में होने की वजह से मैं घबरा गयी थी पर पापा ने एक साल का इंग्लिश कोर्स कराने के साथ ही अकाउंटेंसी, इकोनॉमिक्स और मैथ्स का ट्यूशन भी लगाया। तब जाकर मैंने इंग्लिश सीखी जो पहले बहुत कठिन लगती थी लेकिन अब आसान लगती है। मेरी ट्यूशन की फीस पाँच हजार रुपये महीना जाती थी और इंग्लिश कोर्स की आठ सौ रुपये महीना। इनके अलावा एक साल का कम्प्यूटर कोर्स भी कराया। इसकी फीस पन्द्रह सौ रुपये महीना थी। फिलहाल अभी मैं बागेश्वर से कॉलेज की पढ़ाई कर रही हूँ।

मेरे परिवार में छः सदस्य हैं–पिताजी, माताजी, दीदी, मैं, भाई और छोटी बहन। मेरे पिताजी प्राइवेट जॉब करते थे। कोरोना की वजह से नौकरी छूट गयी और हमें घर आना पड़ा। अगर कोरोना ठीक हो जाता तो हम वापस दिल्ली जा सकते थे। मेरी माता जी गाँव में रह कर खेतीबाड़ी करती हैं। हमारी चार गायें, एक बकरी और दो बिल्लियाँ हैं।

मेरी दीदी ने भी दिल्ली में पढ़ाई की। वह बी.कॉम पूरा करके एम.कॉम कर रही है। दीदी को टीचर बनना है इसलिये उसने दो साल का पी.टी.टी. कोर्स किया। अब वह पता नहीं क्या करेगी? गाँव में आने की वजह से वह टीचर्स–कोर्स नहीं कर पा रही। सबसे बड़ी समस्या यह है कि हमारे गाँव में इंटरनेट भी नहीं चलता। मेरी दीदी गाँव में ट्यूशन पढ़ाती हैं और स्कूल में भी पढ़ा रही है।

मैं सुबह पाँच बजे उठती हूँ। बर्तन धोकर आग जलाती हूँ और सबके लिये गरम पानी व चाय तैयार करती हूँ। फिर साढ़े छः से साढ़े सात तक किताब पढ़ती हूँ। आठ से ग्यारह बजे तक गिरपट्टा गाँव में बच्चों को ट्यूशन पढ़ाती हूँ। फिर घर आकर खाना खाती हूँ। उसके बाद दो से चार बजे तक धारी में बच्चों को कम्प्यूटर सिखाने जाती हूँ। घर के काम भी करती हूँ। मैं रात को रोटी और दीदी सब्जी बनाती है। खाने के बाद आठ से दस बजे तक हम चारों भाई–बहन पढ़ते हैं। हम पापा की डर से पढ़ते हैं क्योंकि पढ़ाई के मामले में वे बहुत सख्त हैं।

हमेशा मेरा काम एक जैसा होता है। इतवार को ट्यूशन की छुट्टी होती है तो उस दिन मेरा काम थोड़ा अलग हो जाता है। मैं और मेरा भाई सात से दस बजे तक गिट्टी तोड़ते हैं। उसके बाद बारह बजे तक पत्थर ढ़ोते हैं। हमारा मकान बन रहा है। खाना खाने के बाद एक से तीन बजे तक मैं गाय चराती हूँ। उसके बाद मैं, मम्मी और दीदी तीनों मिलकर मिट्टी ढोते हैं। इसी में हमारा दिन बीत जाता है।

पापा ने हम सभी को बहुत से काम सिखाये हैं। *किसी भी लड़की को घर और बाहर, दोनों काम आने चाहिये। गाँवों में लड़कियाँ घर के सब काम जैसे खेतीबाड़ी, गाय–भैंस की देखरेख कर लेती हैं पर बाहर के काम नहीं कर पातीं। मुझे यह बहुत बुरा लगता है।* गाँव में बारहवीं पास करते ही लड़कियों की शादी करा देते हैं। *अगर घरवाले साथ दें तो लड़कियाँ स्वयं को कमज़ोर नहीं समझेंगी। मैं यह नहीं कहती कि हमें अपने माता–पिता का कहना नहीं मानना चाहिये पर उन्हें अपनी बात समझाना भी हमारा कर्तव्य है।* माता–पिता को बच्चों के साथ मित्र की तरह व्यवहार करना चाहिये ताकि कोई भी लड़की डरे नहीं और उन्हें सारी बातें, अपनी पसंद–नापसंद बता सकें। कुछ लड़कियाँ भाग जाती हैं और कुछ मर भी जाती हैं, ऐसा क्यों होता है, यह हम सभी को सोचना चाहिए।

मुझे आर्मी में जाना बहुत पसंद था परन्तु स्वास्थ्य–सम्बन्धी समस्या के कारण नहीं कर सकती। मैं बैंकिंग का कोर्स करूँगी, यह कोरोना खत्म हो गया तब! नहीं तो कैसे कर सकती हूँ?

हमारे गाँव में कम्प्यूटर केन्द्र 2018 में शुरू हुआ। त्रिलोक जी और उनके बड़े भाई ने 2020 तक केन्द्र को चलाया। फिर छोटा भाई नौकरी के लिए दिल्ली चला गया जबकि बड़े भाई ने गाँव में ही दुकान संभाल ली। 2020 में रजनी ने भी कम्प्यूटर केन्द्र को चलाने की कोशिश की। वह स्कूल भी जाती थी। उसका स्कूल घर से बहुत दूर होने के कारण वापस आने में कम से कम दो घंटे लग जाते थे। इस कारण वह केन्द्र नहीं चला पा रही थी।

इसके अलावा बारहवीं में होने के कारण उसे पढ़ाई में ज्यादा ध्यान देना था। साथ में घर का काम भी करना पड़ता था। इस कारण वह केन्द्र का संचालन नहीं कर पायी।

मैं दिसम्बर 2020 से केन्द्र से जुड़ी। हम दिल्ली से घर आ गये थे। मेरी धारी गाँव की चाची ने केन्द्र के बारे में जानकारी दी और मुझे इससे जोड़ा। तब मैं ट्यूशन भी नहीं पढ़ाती थी। इस कारण यह सोचा कि खाली बैठने से अच्छा है बच्चों को कम्प्यूटर सिखाऊँ।

मुझे बच्चों के साथ हंसी–मजाक करना बहुत पसंद है। उनके साथ फ्रैंडली रहती हूँ ताकि उन्हें जो समझ में न आ रहा हो वे बिना डरे हुए मुझसे पूछ लें। अगर मैं बच्चों को मारूँगी तो वे डर के कारण कुछ नहीं पूछेंगे और उनका नुकसान होगा। मैं बच्चों को कम्प्यूटर पर टाइपिंग और ड्रॉइंग सिखाने के साथ ही कट, कॉपी, पेस्ट, फाइल सेव करना इत्यादि बहुत सी क्रियाएं बताती हूँ। बच्चों को सबसे अच्छा कार्य ड्रॉइंग और पेंटिंग लगता है।

हमारा कम्प्यूटर केन्द्र गोगिना–धारी गाँव में संचालित होता है। कमरा अच्छा और बड़ा है। इसमें तीन मेजें, चार कुर्सियां और एक अलमारी रखी हुई है। साथ ही बच्चों के बैठने के लिए पर्याप्त खाली जगह है। जो बच्चे अपनी बारी के इन्तजार में खाली बैठे रहते हैं

उन्हें किताबें पढ़ने के लिये दे देती हूँ। वहाँ वातावरण बहुत अच्छा व शांत है। मेरा केन्द्र दो बजे खुलता है और चार बजे बंद हो जाता है। बच्चे सादे कागज में रंगीन चित्र भी बनाते हैं। इनमें से कई चित्र मैंने वहाँ दीवार पर चिपका दिये हैं।

बच्चों के माता–पिता महसूस करते हैं कि केन्द्र में कुछ नया सीखने को मिल रहा है। मैं मानती हूँ कि बच्चों को पढ़ाने से पहले हमें खुद भी देखना चाहिये कि वह गतिविधि हमें आती है या नहीं। अगर नहीं आती है तो पढ़ कर समझने की कोशिश करनी होगी। कुछ बच्चों ने मुझे बताया कि पहले उन्हें रोज गाय चराने के लिये जंगल जाना पड़ता था। अब वे ग्राम शिक्षण केन्द्र और कम्प्यूटर साक्षरता केन्द्र में आते हैं। साथ ही ट्यूशन पढ़ने भी जा रहे हैं। इस तरह अब उन्हें गाय नहीं चरानी पड़ती और घर के काम भी नहीं करने पड़ते। इस बदलाव से बच्चे बहुत खुश हैं। उनके माता–पिता कह रहे थे कि बच्चे घर में बैठे–बैठे गंवार बन जायेंगे और बिगड़ जायेंगे, इसलिये बच्चों के माता–पिता भी खुश हैं।

ग्राम शिक्षण केन्द्र से जुड़ने के बाद मेरे व्यक्तित्व में भी बहुत बदलाव आए। पहले मैं घर पर बैठी रहती थी पर अब समय का सदुपयोग हो रहा है। साथ ही ज्ञान और अनुभव भी बढ़ रहा है। मुझे यह पता चलता है कि बच्चों को कैसे पढ़ाना है। यह भी पता चलता है कि जो बच्चे पढ़ने में कमज़ोर हैं उन्हें अलग से किस तरह समझाना है। केन्द्र में रोचकता बढ़ाने के लिये बच्चों को चित्रकारी के लिये प्रोत्साहित करना चाहिये। सभी बच्चों को चित्र बनाना, रंग भरना अच्छा लगता है। इससे उनका मन लगा रहता है। साथ ही, एक काम में ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता का विकास होता है। धीरे–धीरे बच्चे पढ़ने और लिखने में ध्यान लगाने लगते हैं।

गाँव को समझना चुनौतीपूर्ण

राजेन्द्र सिंह बिष्ट

मेरा जन्म नैनीताल जिले के सूपी गाँव में एक किसान परिवार में हुआ। परिवार की आय का स्रोत कृषि और बागवानी ही रहा है। क्षेत्र में अधिकांश परिवारों की निर्भरता खेती पर रही है। गाँव में बच्चों के समय का अधिकांश हिस्सा खेती, लकड़ी, घास इत्यादि जुटाने में बीतता था। इस कारण अनेक बच्चों की पढ़ाई बीच में छूट जाती थी। परिवार में लोग कम पढ़े–लिखे होने के कारण भी बच्चों को पढ़ाई के लिये अनुकूल परिवेश नहीं मिल पता था। परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने और विद्यालय दूर होने के कारण बच्चे दसवीं–बारहवीं के आगे नहीं पढ़ पाते थे। क्षेत्र के सब्जी व फल उत्पादन में प्रमुख होने के कारण भी बच्चों को इन कामों में सहयोग करना होता, इस कारण भी पढ़ाई छूट जाती।

मैंने पाँचवीं तक की पढ़ाई प्राथमिक विद्यालय सूपी से, छठी से दसवीं तक राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सूपी से तथा बारहवीं (विज्ञान–वर्ग) नारायण स्वामी राजकीय इंटर कॉलेज रामगढ़ से की। कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल से एम.ए. किया। बीच में एक वर्ष सम्पूर्ण क्रांति विद्यालय गुजरात में सामाजिक कार्य का प्रशिक्षण लिया। इस दौरान सामाजिक–कार्य की अलग–अलग विचारधाराओं को पढ़ने–समझने तथा गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य–प्रदेश व राजस्थान के कई संगठनों/संस्थाओं के साथ काम करने और उनके कामों को प्रत्यक्ष देखने का अवसर मिला। गुजरात की सांप्रदायिक हिंसा, आदिवासियों द्वारा अपने प्राकृतिक संसाधनों को बचाने के लिये संघर्ष, खदानों व बाँधों के कारण विस्थापित समुदायों की कठिनाइयाँ, महाराष्ट्र के लातूर में आये भूकम्प से हुई तबाही और राहत के कार्यों को नजदीक से देखने का मौका मिला।

गुजरात से आने के बाद एक वर्ष स्कूल में पढ़ाया। 1995 से गणाई–गंगोली क्षेत्र, जिला पिथौरागढ़, में संस्था से जुड़कर ग्राम समुदाय को संगठित करके उनके साथ पर्यावरण–शिक्षा, परंपरागत स्वास्थ्य, अनौपचारिक शिक्षा, जल–संरक्षण आदि कार्य किये। उत्तराखण्ड सेवा निधि का सहयोग और मार्गदर्शन 1995–96 से निरंतर मिलता रहा है। मेरे लिए यह क्षेत्र पूर्व–परिचित नहीं था इसलिये गाँव के तौर–तरीकों को समझना और लोगों को जोड़ना भी चुनौतीपूर्ण था। उन दिनों गाँवों में एक–दो घरों में ही शौचालय की सुविधा थी। छोटे बच्चों की शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं थी। हमने शुरू से ही समुदाय के शिक्षण को लक्ष्य बनाया। इसके लिये गोष्ठी, जन–संवाद, प्रशिक्षण, शैक्षिक–भ्रमण, सम्मलेन आदि को आधार बनाया। संस्था ने बालवाड़ी, स्वच्छ–शौचालय, नौलों का संरक्षण, पौधशाला

निर्माण व वृक्षारोपण आदि कार्य किये। खेतों की मवेशियों से सुरक्षा के लिए मुक्त–चराई की प्रथा बन्द करने का प्रयास किया। सभी कार्यक्रमों में महिलाओं की भागीदारी ज्यादा रही।

वर्तमान में पाँच गाँवों में ग्राम शिक्षण केन्द्रों तथा एक गाँव में कम्प्यूटर साक्षरता केन्द्र के माध्यम से गणाई–गंगोली क्षेत्र के कुल दस गाँवों में बच्चों, किशोरियों और महिलाओं के साथ शैक्षिक गतिविधियाँ की जा रही हैं।

वर्ष 2020 में और इस साल पुनः कोविड महामारी के कारण सामुदायिक कामों को चलाने में समस्याएँ आ रही हैं लेकिन बच्चों को किसी न किसी तरह शैक्षिक गतिविधियों से जोड़े रखने का प्रयास कर रहे हैं। इसके साथ ही गाँव में महामारी के प्रति जन–जागरूकता की है। सूती कपड़े के मास्क तैयार करके लोगों को उपलब्ध कराये ताकि कोविड महामारी को फैलने से रोका जा सके।

केन्द्र बन्द मत करना

सुन्दरी बिष्ट

मेरा जन्म–स्थान ग्राम खल्ला, पोस्ट मण्डल, जिला चमोली है। परिवार में माँ, भैया–भाभी, दो भतीजियाँ और एक भतीजा है। भैया नौकरी करता है। माँ और भाभी घर के काम करते हैं। भतीजा और दोनों भतीजियाँ स्कूल में पढ़ रहे हैं।

हमारा खेतीबाड़ी का काम है। सिंचित और असिंचित, दोनों तरह की भूमि है। सिंचित भूमि में अनेक प्रकार की फसलें उगाई जाती हैं। असिंचित भूमि में घास और चारा–प्रजाति के पेड़ जैसे तिमुल, भीमल, क्वैराल, शहतूत, खड़िक आदि लगाए हुए हैं। हमारे दो बैल, एक बछड़ा तथा एक गाय है।

मैंने एम.ए. तक पढ़ाई की है। हाईस्कूल और इंटर राजकीय इंटर कॉलेज बैरांगना से किया और आगे राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोपेश्वर में पढ़ा। सबसे अच्छे विषय हिंदी और संस्कृत लगते थे जबकि गणित और अंग्रेजी अच्छे नहीं लगते थे। ये विषय समझ से बाहर ही रहे।

सुबह छः बजे उठना, हाथ–मुँह धोकर पानी भरना, चाय पीना, सात बजे सब्जी–रोटी बनाना, आठ बजे नाश्ता करना, नहाने के बाद अपने और बच्चों के कपड़े धोना, दस बजे गाय को पानी पिलाकर गौशाला में बाँधना, साढ़े ग्यारह बजे से खाना पकाना, एक बजे खाना खाने के बाद बर्तन धोना और पोछा लगाना, ढ़ाई से साढ़े तीन बजे तक आराम करना, पौने चार बजे चाय, चार से छः बजे शिक्षण केन्द्र, साढ़े छः से सात बजे तक बुनाई करना, फिर पानी भरना, रात का खाना बनाना, नौ से दस बजे तक बच्चों को पढ़ाना और खाना खाने के बाद सो जाना, यह मेरी दिनचर्या है।

मेरे गाँव में बाइस नवम्बर 2013 को शिक्षण केन्द्र खुला। केन्द्र पंचायत भवन में चलता है। आसपास बच्चों के खेलने के लिये अच्छी जगह है। शिक्षण केन्द्र गर्मियों में साढ़े चार से साढ़े छः बजे तक चलता है लेकिन जाड़ों में स्कूल के दिनों में चार से पाँच बजे तक ही चलता है। ठंड और छोटे दिन हो जाने के कारण जाड़ों में कठिनाई आती है।

मैं शुरुआत से इस केन्द्र को चला रही हूँ। संस्था के मुख्य कार्यकर्त्ता महानन्दजी ने गाँव की महिलाओं और लड़कियों की एक गोष्ठी आयोजित कर के सबसे पूछा कि क्या उनमें से कोई केन्द्र चलाना चाहता है। सबने मना कर दिया। मेरा चयन किया गया। चर्चा

के समय भी मेरा बहुत मन हो रहा था कि मैं ही केन्द्र चलाऊँ। अंततः चयन हुआ तो मैं बहुत खुश हुई।

शुरू में तीस–चालीस बच्चे आ गये तो मैं घबरा गयी कि इन्हें किस तरह संभालूँ। जब अल्मोड़ा में प्रशिक्षण के लिये गयी तो वहाँ सिखाया गया कि बच्चों को उम्र के अनुसार किस तरह बैठाना है और क्या–क्या गतिविधियाँ की जा सकती हैं। किशोरियों और महिलाओं के साथ बैठक करने के तरीकों के बारे में भी बताया गया।

केन्द्र खुलने के बाद महिलाओं की बैठकें केन्द्र में ही होती हैं, जबकि पहले अलग–अलग घर में हुआ करती थी। पहले बहुत कम महिलाएं बैठकों में आती थीं। सामाजिक कार्यक्रमों में बुलाने पर भी भाग नहीं लेती थीं। महिला सम्मेलन में भी हमारे गाँव की महिलाएं इस संकोच के कारण भाग नहीं लेती थीं कि इतने सारे लोगों के सामने क्या और कैसे बोलेंगी। केन्द्र खुलने के बाद महिलाओं में बहुत परिवर्तन हुआ। शिक्षण केन्द्र के प्रति उनका अच्छा जुड़ाव है। सबसे अच्छा यह हुआ कि उन्हें अल्मोड़ा जाने का मौका मिला जहाँ उनके हित की जानकारियाँ दी जाती हैं।

पहले किशोरियाँ खाली बैठी रहती थीं और बैठकों में नहीं आती थीं लेकिन अब वे केन्द्र में आकर किताबें, अखबार और पत्रिकाएं पढ़ती हैं तथा घर को भी लेकर जाती हैं। युवा भाइयों का केन्द्र से अच्छा जुड़ाव है। वे भी केन्द्र से अखबार, किताबें पढ़ने के लिये ले जाते हैं।

पहले बच्चों की दिनचर्या ठीक नहीं थी। वे फालतू इधर–उधर घूमते और गाँव में चीजों को नुकसान पहुँचाते थे। केन्द्र खुलने से उनका निश्चित टाइम बन गया है कि चार बजे केन्द्र में जाना है। अभिभावकों का भी कहना है कि केन्द्र खुलने से बच्चों के खाली समय का सदुपयोग हो रहा है। साथ ही यह *बच्चों के भविष्य के लिये एक अच्छा माध्यम है।* बच्चों का जुड़ाव शुरू से ही अच्छा था लेकिन उनकी किताबें पढ़ने में कम रुचि थी। लिखने में मात्राओं की बहुत ज्यादा गलतियाँ करते थे। केन्द्र खुलने से बच्चों में अच्छा परिवर्तन हुआ। उन्हें सबसे ज्यादा रुचि खेल–खेल में पढ़ने, अक्षर मिलाकर शब्द बनाने, लम्बाई नापने और चित्रकारी में होती है। कैरम और शतरंज सबसे ज्यादा रुचिकर खेल प्रतीत होते हैं। *बुजुर्गजन भी केन्द्र में आकर अखबार पढ़ते हैं और बच्चों को कहानियाँ सुनाते हैं।*

सबसे ज्यादा असर तो मुझमें हुआ क्योंकि मैं पहले पुरुषों और महिलाओं से कम बात करती थी। *अब मैं महिलाओं, पुरुषों, युवाओं सभी से बिना झिझक के खुलकर बातचीत*

करती हूँ। अब मैं बच्चों के साथ खुश होकर बातें करती हूँ। अपने काम समय पर पूरे करती हूँ और लोगों तक जानकारियाँ और सुझाव पहुँचाती हूँ। कभी–कभी लोग यूँ ही बोलते हैं कि अगर केन्द्र बन्द हो गया तो क्या होगा? मैं उनसे कहती हूँ कि मैं केन्द्र बन्द नहीं होने दूँगी क्योंकि मैं भगवान से यही प्रार्थना करती हूँ कि हमारा केन्द्र बन्द मत करना। मेरा केन्द्र से इतना लगाव हो गया है कि एक भी दिन वहाँ न जा सकी तो ऐसा लगता है कि आज कुछ छूट गया। जब अल्मोड़ा प्रशिक्षण में जाती हूँ तो वहाँ हर जगह से शिक्षिकाएं आई रहती हैं। वहाँ अलग–अलग गाँवों की किशोरियों और महिलाओं से जानने–सीखने को मिलता है।

केन्द्र में कैरम, लूडो, शतरंज, रस्सी–कूद, रंगोमेट्री, जोड़ो–ज्ञान, गणितमाला, ग्लोब व लगभग पाँच सौ किताबें उपलब्ध है। अलग–अलग उम्र के बच्चों के लिये उनकी रुचि के अनुसार किताबें रखी हैं। इनमें बच्चों द्वारा सबसे ज्यादा पढ़ी जाने वाली किताबें हैं–मेंढक राजकुमार, मेंढक का नाश्ता, कजरी गाय, बुढ़िया की रोटी, पाजी बादल, भावगीत, चेतना गीत आदि। मैंने स्वयं तीन सौ किताबें पढ़ी हैं।

ग्राम शिक्षण केन्द्र के बारे में बच्चों के विचारः

- अनिकेत (कक्षा–चार) : ''हम खूब खेलते हैं और बहुत मजा आता है। हमारे केन्द्र में घड़ी भी है जिससे हमें समय का ज्ञान होता है। घड़ी में तीन सुइयाँ होती हैं– एक घंटे की, दूसरी मिनट की और तीसरी सेकंड की सुई।''
- हर्षित (कक्षा–आठ): "हम केन्द्र में राष्ट्रीय पर्व मनाते हैं। हमारे कार्यक्रम देखने ग्रामवासी भी आते हैं। महिलाओं की तरफ से बच्चों को टॉफी और मिठाई दी जाती है।''
- हिमानी (कक्षा–छः): "केन्द्र में पानी का मापन किया जाता है साथ ही हमारा भी वजन मापा जाता है। हमें खेतीबाड़ी तथा तरह–तरह के पेड़–पौधों के बारे में जानकारी दी जाती है।"

कार्यक्रम समय से पूरे किये

पीताम्बर गहतोड़ी

मैं 1980 से 'पर्यावरण संरक्षण समिति' नाम की स्वयंसेवी संस्था में कार्यरत हूँ। मेरे परिवार में पत्नी, दो बेटे, माता–पिता, भाई, उनकी पत्नी और दो बच्चे हैं। पिताजी और माताजी की उम्र क्रमशः नब्बे व अठ्ठासी वर्ष है और दोनों स्वस्थ हैं। मेरा बड़ा लड़का, जो तीस साल का है, अल्मोड़ा जिले के स्याल्दे ब्लाक में जूनियर इंजीनियर के पद (संविदा) पर कार्यरत है। छोटा लड़का (बी.टेक. पास) वर्तमान में घर पर है। भाई की पाटी में फर्नीचर की दूकान है। उसकी पत्नी पाटी में 'आशा' कार्यकत्री है।

हमारे घर में एक गाय है। पिछले दस सालों से आड़ू, सेब, प्लम और कीवी की बागवानी कर रहे हैं। इसके अलावा कृषि, सब्जी–उत्पादन, मत्स्य–पालन और मौन–पालन करते हैं लेकिन जंगली जानवरों और पक्षियों के कारण इन कार्यों को करने में परेशानी हो रही है।

मैंने 1985 में रा.इ.का. चौड़ामेहता से सेकंड डिवीजन में हाईस्कूल पास किया। उसके बाद 1987 में एग्रीकल्चर विषय के साथ कोटाबाग (नैनीताल जिला) से इंटर पास किया। बी.ए. 1995 में पी.जी. कॉलेज लोहाघाट से किया। पढ़ने में कमजोर नहीं था क्योंकि सदैव अध्यापकों के संरक्षण में पढ़ा। मैं बी.एस.सी. एग्रीकल्चर करना चाहता था लेकिन परिवार की स्थिति ठीक न होने के कारण नहीं कर पाया।

मेरी दिनचर्या इस प्रकार है। कि मैं प्रातः पाँच बजे उठकर एक लीटर गुनगुना पानी पीता हूँ। साढ़े आठ बजे नाश्ता होता है और फिर संस्था के कामों के लिये कार्य–क्षेत्र में जाता हूँ। अगर घर में होता हूँ तो नौ से एक बजे तक संस्था के काम करता हूँ। फिर भोजन का समय होता है। शाम चार से छः बजे के बीच बागवानी, मत्स्य–पालन आदि की देखरेख करनी होती है। सप्ताह में तीन या चार दिन सब्जी–उत्पादन और खेती का काम होता है। शाम को छः से आठ बजे तक पूजा और अन्य काम और फिर भोजन के बाद नौ बजे रात्रि–विश्राम का समय हो जाता है। ये सभी काम खुशी से करता हूँ। *बागवानी का अच्छा शौक है।* अब कमर–दर्द के कारण ज्यादा शारीरिक–काम नहीं कर पाता और न मोटर बाइक चला पाता हूँ।

मेरी उम्र पचपन वर्ष की हो गयी है। हमारी संस्था ने उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान से जुड़ने के बाद 1994 से 2008 के दौरान लगभग पचास गाँवों में बालवाड़ी

कार्यक्रम का संचालन किया। इसमें लगभग आठ हजार बच्चों तथा तीन हजार किशोरियाँ व महिलाओं का जुड़ाव रहा है। मेरी भूमिका मार्गदर्शक की रही। वर्तमान में कम्प्यूटर साक्षरता केन्द्र, ग्राम शिक्षण केन्द्र तथा किशोरियों व महिलाओं के लिये सिलाई और बुनाई के प्रशिक्षण कार्यकम संचालित हो रहे हैं। इसके अलावा गाँवों में बागवानी, मस्त्यपालन, मौनपालन आदि को बढ़ावा देने के सफल प्रयास किये हैं।

कमजोर वर्ग के लोगों को सरकारी योजनाओं से जोड़ने के साथ ही मैंने व्यक्तिगत तौर पर पिछले तीस सालों के बीच साँप के काटने से बीमार हुए तीन हजार से अधिक लोगों को अपने मन्त्रों से स्वस्थ किया है। मेरी स्वाभाविक *इच्छा है कि मैं समाज की सेवा करता रहूँ।*

हमारे गाँव में मछली–पालन का काम श्री कृष्णानन्द गहतोड़ी जी (संस्था के अध्यक्ष) और मैंने 1988 में शुरू किया। वर्तमान में मेरे पास ढ़ाई सौ वर्गमीटर, सौ वर्ग मीटर और अस्सी वर्ग मीटर के कुल तीन तालाब हैं। मैंने इन तालाबों में आठ किलो तक बड़ी मछलियाँ पाली हैं। संस्था के माध्यम से कई जिलों के गाँवों में मत्स्यपालन का प्रशिक्षण भी दिया। इस काम को जिले से राष्ट्रीय स्तर तक मान्यता, पुरस्कार और सम्मान मिले हैं इस में प्रमुख हैं–मत्स्य अनुसन्धान ब्यूरो लखनऊ से अवार्ड (2003), राष्ट्रीय मत्स्य अनुसन्धान संस्थान से प्रशस्ति–पत्र (2004), केन्द्रीय कृषि मंत्री द्वारा अवार्ड (2007), भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् के महानिदेशक द्वारा अवार्ड (2008), केन्द्रीय मत्स्य–शिक्षा संस्थान द्वारा अवार्ड (2010), उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री द्वारा अवार्ड (2011), चम्पावत के जिलाधिकारी द्वारा किसान–भूषण (2011), डी.सी.एफ.आर. भीमताल द्वारा सिल्वर जुबली अवार्ड (2019)।

मैं 1990 से निरंतर सामाजिक क्षेत्र में कार्य कर रहा हूँ। गाँव के निवासियों, विशेषकर महिलाओं, से बात करना और उन्हें समझाना बहुत कठिन लगा। इसका कारण यही है कि यह एक दुर्गम क्षेत्र है। कठिनाइयाँ आयी हैं, असफलता भी मिली है लेकिन हमने उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान से *जो कार्यक्रम लिये हमेशा उन्हें पूरा करने का प्रयास किया।* आगे भी इसी तरह के कार्यक्रम जारी रखे जायेंगे।

सीधे कक्षा चार में मेरा दाखिला हुआ

पुष्पा रौतेला

मेरा जन्म ग्राम भनार टिकटा, शामा क्षेत्र, में हुआ जो बागेश्वर जनपद का एक दूरस्थ गाँव है। मुझे घर से स्कूल आने–जाने में चार घंटे लगते थे। गाँव में बालवाड़ी के अलावा शिक्षा का कोई साधन नहीं था। *उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान, अल्मोड़ा के सहयोग से खुली इस बालवाड़ी में मेरे पिताजी शिक्षक बने।* बचपन में परिवार में माँ–पिताजी, दादा–दादी, एक भाई और एक बहन रहते थे। ताऊ–ताई और चाचा–चाची गाँव से बाहर रहते हैं लेकिन गर्मियों में गाँव आते हैं। मेरे माता–पिता खेतीबाड़ी करते हैं। उनकी गायें और तीस–चालीस बकरियाँ हैं।

स्कूल बहुत दूर होने के कारण कक्षा तीन तक की पढ़ाई बालवाड़ी में ही हुई। उस समय बालवाड़ी में तीस–चालीस बच्चे आते थे, दूर–दूर के गाँवों से भी बच्चे आते थे। बालवाड़ी के दिन भुलाए ही नहीं जाते। बालवाड़ी के बाद शामा के प्राइमरी स्कूल में सीधे कक्षा चार में मेरा दाखिला हुआ। शामा, इंटर कॉलेज से दसवीं तक की पढ़ाई करने के बाद मैंने स्वयं बालवाड़ी चलाई। मैंने जुलाई 2008 में अल्मोड़ा में प्रशिक्षण भी लिया। इंटर प्राइवेट पास किया। आगे दो साल बी.ए. की पढ़ाई की और 2011 में मेरी शादी हो गयी। मैंने बी.ए. शादी के बाद पूरा किया।

मेरी ससुराल गोगिना में उन्नीस लोगों का परिवार है। सास–ससुर, जेठ–जेठानियाँ और सबके बच्चे हम सभी एक साथ ही रहते हैं। मेरी दो बेटियाँ हैं–पल्लवी सात और नीरजा चार साल की है। पति प्राइवेट नौकरी करते हैं। ससुर और जेठजी दुकान सँभालते हैं।

खेतीबाड़ी और गाय–भैंसों का काम सब मिलकर करते हैं। हमारे क्षेत्र में खेतों में गेहूँ, जौ, मडुआ चौलाई, राजमा और आलू उगाते हैं। हमारे पास दो गायें, एक भैंस और दो बैल हैं। एक कुत्ता भी है। मेरे घर में एक 'होम–स्टे' भी चलता है। होम–स्टे में हिमालय में घूमने आने वाले कई देशों के लोग रुकते हैं।

सुबह साढ़े चार बजे उठकर आग जलाकर पानी गर्म करने रखना, परिवार में सबको गर्म पानी और चाय देना, रात के बर्तन साफ करना, कभी–कभी गोबर निकालना, दूध दुहना, नाश्ता बनाना और सबको खिलाना आदि रोज की दिनचर्या है। दिन में शिक्षण केन्द्रों को देखने जाना, कभी–कभी महिलाओं की मीटिंग में जाना, कभी जंगल जाना या फिर घर के काम करने होते हैं। शाम को खाना बनाती हूँ, कहानी की किताबें पढ़ती हूँ

और बच्चों को पढ़ाती हूँ। केन्द्रों को देखने या महिला मीटिंग में जाना–ये काम मैं खुशी से करती हूँ लेकिन कभी कभी थकान होने पर भी घर के काम करने पड़ते हैं। यह ठीक भी है क्योंकि परिवार में सबके मन के अनुसार कार्य किये जाते हैं। सभी मिलकर काम करेंगे तभी संयुक्त परिवार में रह सकेंगे और आपस में प्रेम भी बना रहेगा। जीवन में आगे बढ़ने का बहुत मन है लेकिन कठिनाइयाँ और बाधाएँ भी हैं। परिवार में सब चीजें देखनी पड़ती हैं।

मैं एक दिन अपने मायके से ससुराल आ रही थी तो शामा में संस्था के सचिव केदार सिंह जी मिले। मैंने उनसे बच्चों की शिक्षा के लिये कुछ करने को कहा। गाँव में पहले महिला साक्षरता केन्द्र और फिर सन्ध्या केन्द्र खुला। मैंने सन्ध्या केन्द्र चलाने के साथ–साथ उमा के साथ मिलकर गाँव में महिला संगठन बनाया। उन दिनों लोग जरूरत से ज्यादा लकड़ियाँ काट देते थे। हमने महिलाओं की गोष्ठी में इस मुद्दे को रखा। ग्रामवासियों ने जरूरत से ज्यादा लकड़ी काटना बन्द किया। उसके बाद शराब और जुआ बन्द करने की बात गोष्ठी में उठी। महिलाओं ने एक रैली भी निकाली। धीरे–धीरे सड़क पर जुआ खेलना बन्द हुआ। इस बीच स्वास्थ्य खराब होने कारण मैं चंडीगढ़ चली गई। 2016 में वापस लौटने के बाद संस्था और उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान ने मेरा चयन मार्गदर्शिका के रूप में किया। आज मैं नामिक, मलखा–दुगर्चा, गोगिना–धारी, हिनारी–गोगिना के शिक्षण केन्द्रों/कम्प्यूटर केन्द्रों और लोहारकुड़ा के महिला/किशोरी सिलाई केन्द्र का मार्गदर्शन करने के साथ ही किशोरी/महिला संगठनों के साथ काम कर रही हूँ।

महिला संगठन शुरू होने के बाद महिलाएं बहुत जागरूक हुई हैं। अब विद्यालयों में आयोजित होने वाली अभिभावक–बैठकों में ज्यादातर महिलाएं ही जाती हैं। हम हर महीने संगठन की गोष्ठी करते हैं। अगर कोई आयोजन होना हो तो स्वयं ही साफ–सफाई कर लेते हैं। एक बार आँगनवाड़ी में समय से पोषाहार नहीं मिला था तो महिलाओं ने गोष्ठी में यह मुद्दा रखा। परिणामस्वरूप हर महीने पाँच तारीख को पोषाहार मिलने लगा। कोविड महामारी के दौरान महिलाओं ने मास्क पहनने के बारे में जागरूकता का खूब काम किया।

पहले बच्चे स्कूल से वापस आकर इधर–उधर घूमते और घर में परिजनों को परेशान करते थे। अब वे ग्राम शिक्षण केन्द्र में किताबें पढ़ते हैं और चित्रांकन करते हैं। उनका सामान्य–ज्ञान पहले से अच्छा है। इसके साथ ही बड़ों को देखते ही नमस्ते या जय–जगत कहते हुए अभिवादन करते हैं। लॉकडाउन में जब स्कूल बन्द थे, अभिभावक परेशान हो गये कि बच्चे सब–कुछ भूल गये हैं। तब महिलाओं ने गोष्ठी करके ग्राम शिक्षण केन्द्र खोलने की माँग रखी। लॉकडाउन में घर आये हुए बच्चे भी केन्द्र से जुड़ गये। किशोरियों ने इस समय सिलाई सीखी। गाँव में केन्द्र का संचालन होने से महिलाएं खुश हैं। कुछ महिलाएं किताबें पढ़कर आपस में चर्चा करती हैं कि किताब में सबसे अच्छा क्या लगा। किशोरियों का कहना है कि हमें जो किताबें स्कूल की लाइब्रेरी में नहीं मिलतीं वे शिक्षण केन्द्र में मिल जाती हैं।

मार्गदर्शिका और संगठनकर्त्ता का काम करते हुए मेरी जिन्दगी में भी बदलाव आये हैं। लिखने–पढ़ने की आदत छूट गयी थी। केन्द्र से जुड़कर पुनः अभ्यास हुआ। गाँव के लोगों से बातचीत करने का मौका मिला। पहले दूसरों से बात करने में झिझक होती थी। अगर शिक्षण केन्द्र से नहीं जुड़ती तो घर–खेत के कामों के अलावा कुछ भी नहीं कर पाती। अब मैं सिलाई करके भी अपनी आमदनी बढ़ा रही हूँ। शिक्षण केन्द्र से जुड़ने से दिनचर्या पूरी तरह व्यस्त और व्यवस्थित हो गयी है तथा समय का सदुपयोग हो रहा है।

कठिन कामों को करने की हिम्मत है

जीवन्ती आर्या

मेरा जन्म पनुवानौला कस्बे के नजदीक स्थित खोला–रौतगाँव, जिला अल्मोड़ा, में हुआ। मेरे परिवार में पाँच सदस्य हैं–मैं, मेरे पति और हमारे तीन बच्चे। मेरे पति मजदूरी करते हैं। मैं अपने गाँव में 'आशा' कार्यकर्त्ता होने के साथ ही ग्राम शिक्षण केन्द्र का संचालन करती हूँ। बड़ा बेटा राजस्थान में नौकरी करता है। दो छोटे बच्चे, एक लड़का और एक लड़की, गाँव में रहकर पढ़ाई कर रहे हैं।

मैंने इंटर तक पढ़ा है। शुरूआत में प्राइमरी स्कूल खोला में पढ़ाई की और फिर गाँधी इंटर कॉलेज पनुवानौला से शिक्षा ग्रहण की। मुझे कृषि, गृह–विज्ञान, हिंदी, आर्ट, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र विषय अच्छे लगते थे। संस्कृत और अंग्रेजी समझ में नहीं आती थी। मेरी अंग्रेजी बहुत कमजोर है।

मैं खेती का काम नहीं करती। पालतू जानवर भी नहीं रखे हैं। मुझे शौक तो है लेकिन मेरे पैर कमजोर हैं। अगर गाय–भैंस होते तो बच्चे भी दूध–दही, घी खाते लेकिन अपनी कमजोरी के कारण काम नहीं कर पाती। मैंने तीन मुर्गियाँ पाल रखी हैं। इनमें से दो हर तीसरे दिन अंडा देती हैं जो मेरे बच्चों के लिये एक अच्छा आहार हो जाता है।

सुबह उठने से रात को सोने तक मेरी दिनचर्या बहुत व्यस्त रहती है। सुबह उठकर हाथ–मुंह धोने के बाद चाय और फिर खाना बनाती हूँ। बच्चों को खिलाने के बाद खुद खाना खाकर ग्राम–भ्रमण करती हूँ। इस दौरान दवा बाँटना, वैक्सीन लगवाने के काम भी हो जाते हैं। कभी–कभी बच्चों से शिक्षण केन्द्र और महिलाओं से संगठन के बारे में भी बातचीत करती हूँ। आजकल मेरा घर बन रहा है इसलिए वहाँ के काम, जैसे–सामग्री लाना, मिस्त्रियों के काम की निगरानी इत्यादि भी करती हूँ। इतने कामों को तो मैं खुशी–खुशी करती हूँ। लेकिन आजकल मुझे लोगों को वैक्सीन लगवाने के लिये उन्हें अस्पताल लेकर जाना पड़ता है। उनकी लिस्ट बना कर फोटो सहित देने का काम भी हैं। कभी समय न होने के बावजूद मजबूरी में भी लोगों के साथ जाना पड़ता है।

मुझे अपने जीवन में बहुत कुछ करने का शौक है। *अपने कामों को मैं जिम्मेदारी से पूरा करती हूँ।* ग्राम शिक्षण केन्द्र, महिला व किशोरी संगठन के माध्यम से स्वयं के साथ–साथ अपने बच्चों और अपने गाँव को आगे बढ़ाने में सहयोग कर रही हूँ। *मैं कठिन से कठिन कामों को करने की हिम्मत रखती हूँ* और हार नहीं मानती। उत्तराखण्ड सेवा

निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान के माध्यम से मैंने महिला संगठन के साथ मिलकर अपने गाँव में बहुत से काम किये। कुछ ऐसे काम भी हुए जो पहले असंभव लगते थे। महामारी के कारण इन कामों में रुकावट आ गयी है। बच्चों का शिक्षण, महिला गोष्ठी, किशोरी गोष्ठी, बालमेला, महिला सम्मलेन, इत्यादि सब रूके हुए हैं। कोविड महामारी खत्म होने या कम होने पर इन सभी कार्यों को फिर शुरू करा देंगे।

मेरे गाँव में ग्राम शिक्षण केन्द्र बाइस फरवरी 2018 को खुला। उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान की रमा दीदी और कैलाश भाई, विनोद आदि ने इसके लिये बहुत कोशिशें कीं। शुरुआत में गाँव में महिला संगठन बनाया गया। मेरा चयन अध्यक्ष पद के लिये हुआ। मैंने संगठन के साथ काम किया और अल्मोड़ा में आयोजित गोष्ठियों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया। वहाँ अन्य जगहों से आयी हुई महिलाओं की बातें सुनी और उनके द्वारा किये गये कामों के बारे में जाना। उनसे सीखकर तथा अन्य क्षेत्रों में हुए संगठनों के कामों को देखकर (पल्यूं गाँव की महिलाओं का मैचून क्षेत्र में शैक्षिक भ्रमण) अपने गाँव में बहुत से काम किये। मेरी रुचि और कार्य को देखकर मुझे ग्राम शिक्षण केन्द्र में संचालिका की जिम्मेदारी दी गयी।

ग्राम शिक्षण केन्द्र गाँव के बारात–घर में चलता है। यहाँ बच्चों के लिये काफी जगह है। बारात घर में ही किशोरियों व महिलाओं के लिये सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र भी खुला है। ग्राम शिक्षण केन्द्र शाम को रोजाना दो–ढाई घंटे चलता है। छुट्टियों के दौरान सुबह ग्यारह से एक बजे तक खुलता है। इतवार के दिन ज्यादा समय तक केन्द्र को खोलती हूँ क्योंकि पहली से आठवीं कक्षा तक के सभी बच्चे उपस्थित रहते हैं और प्रार्थना, पढ़ना–लिखना, भाव–गीत, चेतना–गीत, खेल आदि आराम से किये जा सकते हैं।

हमारे केन्द्र में लगभग चार सौ किताबें हैं। इसके अलावा गणित सीखने के लिये जोड़ो–ज्ञान सामग्री, खेलों की सामग्री, ग्लोब और मापन की सामग्री है। मैंने बहुत कम किताबें पढ़ी हैं। एक तो मुझे समय नहीं होता है और दूसरा किताब पढ़ने के बाद कुछ याद नहीं रहता। किताब पढ़ने में मेरी रुचि बहुत कम है। कुछ किताबें जो मुझे उपयोगी और रोचक लगीं, उनके नाम हैं, 'बहादुर दीदी', 'वंशी और हिरन', 'मनोरमा इयर बुक' तथा पर्यावरण व स्वास्थ्य सम्बन्धी कुछ अन्य किताबें। मेरे ग्राम शिक्षण केन्द्र में पत्रिकाएँ व अखबार नहीं आते हैं।

ग्राम शिक्षण केन्द्र खुलने के बाद किशोरियों व महिला संगठन की सामूहिक गतिविधियों में रुचि बढ़ी है। मुझे खेल और कहानी के माध्यम से भाषा व गणित सिखाने में रूचि है। बच्चों को भी यह कार्य रुचिकर लगता है।

केन्द्र खुलने के बाद हमारे गाँव के बच्चों, किशोरियों और महिलाओं में बदलाव आया है। पहले बच्चे स्कूल से आकर इधर–उधर घूमते, मिट्टी से खेलते, आपस में लड़ते–झगड़ते और गलत संगत में रहते थे। केन्द्र खुलने के बाद इसमें सुधार आया। किशोरियाँ और महिलाएं घर से बाहर नहीं निकलती थीं और बात करने में झिझकती थीं। अब संगठन बनने से किशोरियाँ व महिलाएं जागरूक हो गयी हैं और हर काम के लिये आगे आती हैं। वे सम्मेलनों में गाँव की समस्याएं रखती हैं। स्वयं मुझ में भी परिवर्तन आया है। मेरे कौशल बढ़े, सीखने में रुचि और अभ्यास बढ़ा, तथा बच्चों को पढ़ाने से अपनी जानकारी भी बढ़ी है।

ग्राम शिक्षण केन्द्र को अधिक रुचिपूर्ण व उपयोगी बनाने के लिये बच्चों के साथ लगातार काम, महिला–संगठन की बैठक सहित अपने सभी कार्यों को जारी रखने की कोशिश करूँगी।

कोरोना महामारी के कारण शिक्षण केन्द्र में बच्चों का आना–जाना और किताबों का लेन–देन बन्द हो गया है। जो अन्य सामग्री है उसका उपयोग भी बच्चों के साथ नहीं कर पा रहे हैं। भाषा, गणित, भावगीत, चेतना–गीत, रचनात्मक–कार्य, खेल, नाटक इत्यादि सभी गतिविधियाँ रुक गयी हैं। बच्चे पढ़ना–लिखना भूल गये हैं। स्कूल बन्द होने से भी बच्चों पर बहुत असर हुआ है। अब केन्द्र खुलने के बाद सभी गतिविधियों को पुनः गंभीरता से करना होगा।

जो सीखा वह आगे काम आयेगा

नीता बिष्ट

मेरा गाँव, ग्वाड़, मुख्यालय गोपेश्वर से पाँच कि.मी. दूर स्थित है। मेरे परिवार में छः सदस्य हैं–माँ, पापा, मेरा छोटा भाई और दो बहनें। मेरे पापा मिस्त्री का काम करते हैं और माँ गृहणी हैं। भाई गोपेश्वर में प्राइवेट 'जॉब' करता है। मेरी दीदियों की शादी हो चुकी है।

गाँव में हमारी चार नाली जमीन है लेकिन सड़क आने से लगभग एक नाली जमीन काट दी गयी है। हमारे यहाँ मुख्यतः धान, गेहूँ, सरसों, मडुआ तथा झंगोरा की फसलें उगाई जाती हैं। हमारे घर में पाँच पालतू पशु हैं–एक गाय, दो बछड़े और एक जोड़ी बैल।

मैंने बी.ए. तक पढ़ा है। कक्षा एक से पाँच तक ग्वाड़ में, कक्षा छः से आठ तक अपने ननिहाल किमाणा (जोशीमठ ब्लॉक) में और कक्षा नौ से बारह तक पुनः ग्वाड़ में पढ़ा। बी.ए. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोपेश्वर से किया। मैंने हाईस्कूल में गणित विषय लिया था लेकिन ठीक से समझ नहीं पायी। इंटर में मैंने साइंस के विषय नहीं चुने। इंटर में मुझे सबसे अच्छे विषय इंग्लिश और भूगोल लगते थे। मैंने इन्हें बी.ए. में भी लिया। राजनीति–विज्ञान समझ में बहुत कम आता था।

मैं सुबह साढ़े पाँच बजे उठकर पहले हाथ–मुँह धोती हूँ और फिर घर की साफ–सफाई करती हूँ। उसके बाद कभी–कभी नाश्ता बनाती हूँ। फिर मैं घास, लकड़ी आदि लाने जंगल जाती हूँ। कभी–कभी गाय के साथ भी जंगल जाती हूँ जो मजबूरी में करना पड़ता है। कभी–कभी माँ के साथ खेतों में जाती हूँ। दिन का खाना खाने के बाद बर्तन साफ करने के बाद थोड़ा आराम करती हूँ। शाम को चार बजे से छः बजे तक ग्राम शिक्षण केन्द्र में रहती हूँ। वहाँ से वापस आने के बाद पानी भरना, रात का खाना बनाना इत्यादि काम करती हूँ। हम लोग नौ बजे तक खाना खा लेते हैं। उसके बाद शिक्षण केन्द्र से लायी हुई किताबें पढ़ती हूँ। फिर सो जाती हूँ। मुझे अपने जीवन में आगे पढ़ाई करने का मन था लेकिन घर की परिस्थिति के कारण एम.ए. की पढ़ाई नहीं की। माँ के साथ घर का काम करने वाला कोई नहीं था। इस कारण पढ़ाई रोक कर माँ की मदद करने लगी।

ग्राम शिक्षण केन्द्र सबसे पहले बसंती बुआ ने मार्च 2012 तक केन्द्र चलाया। उनके बाद अरुणा बिष्ट ने अप्रैल 2012 से जून 2013 तक केन्द्र चलाया। उन्होंने एम.ए. किया है। केन्द्र चलाने के साथ वह घर का काम भी करती थी। उनका व्यवहार भी बहुत अच्छा था और केन्द्र में बहुत कुछ सिखाती थीं। केन्द्र छोड़ने के कुछ समय बाद उनकी शादी नगरासू

गाँव में हो गयी। वे अपने ससुराल में खुश रहती हैं। जब कभी मायके आये तो केन्द्र में भी आती हैं। उसके बाद मीना बिष्ट जुलाई 2013 से जुलाई 2015 तक शिक्षिका रहीं। उन्होंने शिक्षण केन्द्र चलाने के साथ–साथ एम.एस.सी. की पढ़ाई भी की। केन्द्र छोड़ने के बाद उन्होंने दो साल का जी.एन.एम. कोर्स किया। उसके बाद उनकी शादी हो गयी। वे भी जब गाँव आती है तो अपनी छोटी सी बेटी को साथ लेकर केन्द्र में मिलने आती है। रीता ने अगस्त 2015 से अक्टूबर 2017 तक केन्द्र चलाया। उसने बारहवीं तक पढ़ाई की है। रीता की शादी हो जाने के बाद मैं केन्द्र में शिक्षिका का कार्य करती हूँ।

ग्राम शिक्षण केन्द्र से मेरा जुड़ाव पहले से ही था। मैं वहाँ किताबें पढ़ने जाती और पेंटिंग भी बनाती थी। जब रीता शिक्षिका बनी तब मैं केन्द्र में जाकर छोटे बच्चों को जोड़–घटाना सिखाती थी। कभी रीता एक–दो दिन के लिए कहीं चली जाती तो मैं उसके बदले केन्द्र में चली जाती थी। संचालिका के रूप में मेरा चयन नवम्बर 2017 को हुआ। तब मैं बी.ए. प्रथम वर्ष में पढ़ती थी। सिद्दी दीदी (मार्गदर्शिका) जब केन्द्र में आयी तो उस समय मैं ही केन्द्र संचालित कर रही थी। उस वक्त रीता की शादी होने वाली थी। दीदी ने कहा कि अगर मुझे रुचि है तो मैं शिक्षिका बन सकती हूँ।

मेरा शिक्षण केन्द्र पंचायत भवन में संचालित होता है। पहले बड़े कमरे में चलता था लेकिन वहाँ ग्राम प्रधान ने ग्राम–सभा का सामान रखा हुआ है। अब एक छोटा कमरा, बरामदा तथा खेलने के लिये बड़ा चौक भी है। केन्द्र में ग्रीष्मकाल का समय स्कूल के दिनों में चार से छः बजे तथा शीतकाल का साढ़े चार से साढ़े पाँच बजे तक है।

हमारे केन्द्र में किताबें, ब्लैक–बोर्ड, जोड़ो ज्ञान सामग्री इत्यादि के साथ ही खेल सामग्री जैसे–कैरम, लूडो, शतरंज, बैडमिंटन, रस्सी–कूद, फुटबॉल आदि रखे हुए हैं। केन्द्र में लगभग छः सौ किताबें हैं। मैंने लगभग दो सौ किताबें पढ़ी हैं। हमारे केन्द्र में दैनिक अखबार (राष्ट्रीय सहारा) आता है। उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान से 'नंदा' और 'मुस्कान' पत्रिकाएँ भी आती हैं। बच्चों की रूचि खेल, भावगीत और हाव–भाव के साथ कहानी सुनने–सुनाने में बहुत ज्यादा है।

शिक्षण केन्द्र खुलने से बच्चों में परिवर्तन आया है। उन्हें पढ़ने को नई–नई किताबें तथा प्रयोग करने को नई–नई गतिविधियाँ मिलीं। सबसे अच्छी बात यह है कि शाम को इधर–उधर भटकने के बजाय केन्द्र में आने का मौका मिला। किशोरियों को उपयोगी किताबें उपलब्ध हुई तथा मंच पर बोलने का मौका मिला। महिलाओं का संगठन बना। महिला–सम्मेलनों/गोष्ठियों में जाने तथा अपनी बात कहने का अवसर मिला है। मुझे बच्चों

को कुछ सिखाने का मौका मिला है। अल्मोड़ा में प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बच्चों को सिखाने के लिये बहुत सी नयी गतिविधियाँ सीखीं। मुझे महसूस होता है कि जो मैंने केन्द्र में सीखा वह आगे चल कर जरूर काम आयेगा।

शिक्षण केन्द्र को और अधिक रोचक बनाने के लिये बच्चों को नई–नई शैक्षिक व खेल गतिविधियाँ सिखा सकते हैं। साथ ही बच्चों को पढ़ाने का माध्यम स्कूल से अलग हो, क्योंकि बच्चे स्कूल में भी पढ़ते हैं और यहाँ भी पढ़ाई करनी होगी। लोगों, खासकर, महिलाओं के साथ अधिक जुड़ाव रखेंगे।

मेरे केन्द्र में आने वाली कुछ किशोरियों ने निम्नलिखित बातें कहीं :

- मानसी बिष्ट (कक्षा दस, शिक्षण केन्द्र से जुड़ी हैं) : ''मैं केन्द्र में बचपन से लेकर आज तक आती हूँ। पहले माइक पर बोलने में घबराती थी लेकिन अब हिचकिचाहट दूर हो गयी है। केन्द्र में मैंने कैरम और बैडमिंटन खेलना सीखा। खेल में मेरी अधिक रुचि है।"
- दिया कुंवर (कक्षा सात) : ''मैं केन्द्र में जाकर किताबें पढ़ती हूँ। मैंने वहाँ जाकर बैडमिंटन खेलना सीखा। मैंने केन्द्र में बहुत सारे चित्र बनाये हैं।''
- काजल बिष्ट (कक्षा दस) : "मैंने केन्द्र में लगभग डेढ़ सौ किताबें पढ़ी हैं। यहाँ अनेक प्रकार के खेल सीखे जिनमें सबसे अच्छा कैरम लगता है। मैंने कई बार बाल–मेले में भाग लिया। जो सामग्री शिक्षण केन्द्र में मिलती हैं वह अन्य जगह नहीं मिलतीं। मुझे कहानी तथा सामान्य ज्ञान की किताबें पढ़ने में बहुत रुचि है। 'दे दे मेरे अधरों को ज्ञान स्वर' प्रार्थना और 'आ रे बादल–काले बादल' भावगीत बहुत अच्छा लगा।''

जुनून है कि कुछ अच्छा करूँ

सावित्री आर्या

मेरा जन्म 2002 में मल्खा दुगर्चा गाँव, जिला बागेश्वर में हुआ। परिवार में चार सदस्य हैं–मम्मी–पापा, भैया और मैं। पापा दिल्ली में प्राइवेट नौकरी करते हैं। माँ घर का काम करती है। भाई अल्मोड़ा में बारहवीं की पढ़ाई कर रहा है। मैं ओपन यूनिवर्सिटी से बी.ए. प्रथम वर्ष की पढ़ाई करने के साथ घर पर सिलाई का काम करती हूँ और ग्राम शिक्षण केन्द्र भी चलाती हूँ।

हमारे यहाँ दो तरह की फसलें उगाई जाती हैं–रबी एवं खरीफ। गेहूँ, जौ, मडुआ, मटर, बाजरा, सरसों, धनियाँ, मक्का, आलू आदि। मेरे परिवार में दो गाय और एक बकरी है जिनकी देखभाल मम्मी करती है।

मैंने कक्षा एक से पाँच तक राजकीय प्राथमिक विद्यालय मल्खा दुगर्चा में और छः से बारहवीं तक राजकीय इंटर कॉलेज रातिरकेठी में पढ़ा। हिंदी, विज्ञान, राजनीति–विज्ञान और संस्कृत प्रिय विषय थे। गणित और कला विषय अच्छे नहीं लगते थे क्योंकि ऐसे टीचर नहीं मिले जो मुझे अच्छे से समझा सकें। इसलिए नौवीं कक्षा से मैंने गणित की जगह अंग्रेजी ले ली।

मैं सुबह साढ़े चार बजे उठती हूँ। दौड़ने जाती हूँ। और फिर रस्सी–कूद खेलती हूँ। उसके बाद पढ़ाई करती हूँ। नाश्ता बनाती हूँ तथा नाश्ते के बाद सिलाई का काम करती हूँ। दोपहर का खाना खाने के बाद एक से तीन बजे तक शिक्षण केन्द्र में जाती हूँ। वहाँ सबसे पहले परिसर की सफाई करती हूँ। उसके बाद प्रार्थना, भावगीत/चेतनागीत, व्यायाम और दैनिक समय–सारिणी के अनुसार पढ़ाना, बच्चों की विशेष जानकारी लेना, कागज का काम, खेल, मिट्टी का काम और चित्रांकन आदि गतिविधियाँ होती है। ये सब मैं खुशी–खुशी कर लेती हूँ। घर आकर रात का खाना बनाती हूँ, केन्द्र की पुस्तकें पढ़ती हूँ और पूर्व–पश्चात् डायरी भरती हूँ। टीवी देखती हूँ और फिर सो जाती हूँ। मजबूरी में कोई काम नहीं करने पड़ते।

मैं जीवन में पढ़ाई करके पुलिस बनना चाहती हूँ और अपने परिवार, गाँव, देश तथा अपना नाम रोशन करना चाहती हूँ। कोविड–19 की वजह से मैं अपनी पढ़ाई तो कर पा रही हूँ परन्तु परीक्षा के लिये तैयारियाँ नहीं कर पा रही हूँ।

हमारे गाँव में ग्राम शिक्षण केन्द्र से पहले ग्राम पुस्तकालय चलता था। शिक्षण केन्द्र 2016 से शुरू हुआ। केन्द्र को आठ महीने भागीरथी ने चलाया और उनके छोड़ने के बाद पुष्पा भाभी चलाती थी। तबियत खराब होने के कारण उन्होंने छोड़ दिया। फिर दीदी ने चलाया लेकिन दो–तीन महीने बाद उन्होंने भी छोड़ दिया। वर्तमान में सभी पूर्व–शिक्षिकाओं की शादी हो गयी है और वे गृहणी का काम कर रही हैं। मैं मई 2018 से शिक्षण केन्द्र से जुड़ी। महिलाओं की गोष्ठी कराकर मुझे शिक्षिका चयनित किया गया। पहले मेरा मन नहीं था लेकिन मार्गदर्शिका दीदी ने बताया कि कैसे काम किया जाता है। मुझे अल्मोड़ा में एक हफ्ते की ट्रेनिंग दी गयी। पिछले तीन वर्षों से मैं केन्द्र चला रही हूँ।

मेरे गाँव में ग्राम शिक्षण केन्द्र प्राथमिक विद्यालय में संचालित होता है। एक बड़ा सा कमरा है। इसमें दो दरवाजे और तीन खिड़कियाँ हैं। बच्चों के खेलने के लिये एक बड़ा सा मैदान भी है। चारों तरफ फूल लगाये हैं और एक कूड़ेदान भी है। केन्द्र एक से तीन बजे तक खोलती हूँ। स्कूल के दिनों में गर्मियों में तीन से पाँच बजे तथा जाड़ों में एक से तीन बजे तक खोलती हूँ।

मेरे केन्द्र में लगभग तीन सौ किताबें हैं जिन्हें बच्चे केन्द्र में पढ़ने के साथ ही घर ले जाते हैं। *मैंने अधिकतर किताबें पढ़ ली हैं।* मेरी प्रिय पुस्तक 'मनोरमा' इयर–बुक है क्योंकि इसमें हर प्रकार की जानकारी दी हुई है। 'मुस्कान' पत्रिका भी आती है। बच्चे सबसे अधिक रुचि भावगीत और चित्रांकन में लेते हैं। अधिकतर बच्चे गणित की सामग्री और खेल में रुचि लेते हैं।

ग्राम शिक्षण केन्द्र खुलने के बाद महिलाओं और किशोरियों में अत्यधिक परिवर्तन आया है। हर महीने महिलाओं की गोष्ठी रखी जाती है। महिला संगठन के माध्यम से महिलाएं अधिकतम सामाजिक कार्य कर रही हैं, जैसे–रास्तों की सफाई, परस्पर मदद करना इत्यादि। पहले लड़कियों की शादी जल्दी कर दी जाती थी लेकिन अब बीस–इक्कीस वर्ष के बाद कर रहे हैं। पहले लड़के स्कूल से आने के बाद खेलने या घूमने चले जाते थे, जबकि लड़कियों को घर के कामों से फुर्सत नहीं मिलती थी। अब सभी बच्चे छुट्टी के दिन केन्द्र में आ जाते हैं। यहाँ खेलते हैं और गृह–कार्य पूरा करते हैं। अभिभावकों से यह सुनने को मिलता है कि केन्द्र खुलने के बाद बच्चों की पढ़ाई, गतिविधियों और दिनचर्या में काफी परिवर्तन आया है।

ग्राम शिक्षण केन्द्र में जुड़ने के बाद मेरी जीवनचर्या, जानकारी, कौशल और व्यक्तित्व में बहुत बदलाव आये हैं। पहले केवल घर के काम और स्कूल जाने तक सीमित थी लेकिन शिक्षण केन्द्र से जुड़ने के बाद अनेक काम करती हूँ। जैसे शिक्षण केन्द्र चलाना, सिलाई, नयी–नयी जानकारी अर्जित करने के लिये किताबें पढ़ना आदि। लोगों से बातचीत करके भी अन्य जगहों के बारे में जानकारी मिलती है। अब एक जुनून है कि मैं जीवन में कुछ अच्छा काम कर दिखाऊँगी।

सभी को लाभ

पूजा नेगी

मेरा जन्म ग्राम ग्वाड़, पोस्ट बैनोली, जिला चमोली में हुआ। परिवार में तीन सदस्य हैं–मेरे पति, सास और मैं। पति प्राइवेट नौकरी करते हैं। हमारा खेतीबाड़ी का काम नहीं है। मैं बारहवीं तक पढ़ी हूँ। मैंने आठवीं तक बैनोली और उसके आगे राजकीय इंटर कॉलेज नैणी में पढ़ा। मुझे सभी विषय अच्छे लगते थे।

मैं सुबह पाँच बजे उठती हूँ। चाय बनाती हूँ। पानी भरती हूँ और नाश्ता बनाती हूँ। उसके बाद घर की सफाई करती हूँ। इन कामों को पूरा करके कभी–कभी नौ बजे लकड़ी लेने जंगल जाती हूँ। वहाँ से एक–दो बजे तक घर आ जाते हैं। दिन का खाना खाने के बाद ढ़ाई बजे तक आराम करते हैं। फिर चाय पीकर शाम को तीन बजे केन्द्र में जाती हूँ। शाम छः बजे तक बच्चों के साथ विभिन्न गतिविधियाँ करती हूँ। उसके बाद क्यारियों में पानी डालती हूँ और फिर रात का खाना बनाती हूँ। मैं अपने घर के काम के साथ सिलाई–बुनाई का काम करना चाहती हूँ।

हमारे गाँव में ग्राम–पुस्तकालय एक मई 2012 से शुरू हुआ। मुझसे पूर्व तीन शिक्षिकाओं जायसी, सपना और शिवानी ने संचालित किया। जायसी और सपना की शादी हो गयी है जबकि शिवानी पढ़ाई कर रही है। मैं अगस्त 2017 से केन्द्र चला रही हूँ। मेरा चयन ग्राम–प्रधान और गाँव की महिलाओं ने किया।

हमारा केन्द्र पंचायत भवन में संचालित होता है। खेलने की जगह कम होने की वजह से बच्चे आँगन में खेलने आते हैं। केन्द्र गर्मियों में तीन से छः बजे तक और सर्दियों में साढ़े तीन से पाँच बजे तक खुलता है। रविवार को दस से एक बजे तक केन्द्र चलाती हूँ।

मेरे केन्द्र में कुल साढ़े तीन सौ किताबें हैं। सबसे ज्यादा पढ़ी जाने वाली किताबें पेड़ हो सकता है, सुजाता की सास, हाथी की हिचकी, सांवरी, मेंढक राजकुमार आदि हैं। मैंने पच्चीस किताबें पढ़ी हैं। बच्चों को प्रार्थना, भावगीत और खेल में ज्यादा रुचि है, हाव–भाव के साथ कहानी कहने में भी रुचि लेते हैं।

शिक्षण केन्द्र के माध्यम महिलाओं की गोष्ठी की जाती है। वे गाँव की सफाई, सरकारी जंगल, और उन के लाभ, पंचायत, स्वास्थ्य योजनायें आदि विषयों पर आपस में चर्चा करती हैं और अपनी समस्याएं सुलझाती हैं जिससे सभी को लाभ होता है।

मुझे भी केन्द्र से जुड़कर अच्छा लगा है। *पहले मैं घर का काम करने के बाद यूँ ही समय बिताती थी। अब केन्द्र में बच्चों के साथ पढ़ाई, खेल व अन्य गतिविधियाँ करती हूँ।* अब मैं समय पर अपना काम करती हूँ।

कोविड महामारी से बचने के लिये गाँव के लोग एक–दूसरे से नहीं मिले। न ही दूसरे गाँवों में किसी से मिलने गये। हमारे गाँव में महिलाओं और किशोर–किशोरियों ने मिलकर मास्क बनाये तथा वितरित किये। व्यक्तिगत सफाई का ध्यान रखा गया। लोग सामान लेने बाहर जाते तो सैनीटाइज करने के बाद ही घर के अन्दर आते थे। महंगाई के कारण लोगों ने अपने खेतों में उपजे चावल, गेहूँ, दालों और सब्जियों का उपयोग ज्यादा किया।

गाँव के लोगों में खांसी, बुखार, जुकाम आदि लक्षण तो आये लेकिन डर के कारण लोग डॉक्टर के पास नहीं गये। आशा कार्यकत्री द्वारा बाद में टेस्ट कराये गये। ग्राम शिक्षण केन्द्र भी नहीं खुले लेकिन सप्ताह में दो–तीन दिन केन्द्र की साफ–सफाई और दूरी बनाकर कुछ गतिविधियाँ की। बच्चों की पढ़ाई पर भी बहुत प्रभाव पड़ा है। अब नियमित रूप से केन्द्र को संचालित कर रही हूँ।

बच्चों को समझाना चुनौतीपूर्ण

शिवानी

मेरा जन्म अपने ही गाँव बधाणी, जिला चमोली, में हुआ। परिवार में कुल सात लोग हैं। माता–पिता, दादी, दो भाई और एक बहन हैं। माता–पिता खेतीबाड़ी और मजदूरी करके परिवार का भरण–पोषण करते हैं। *मेरी बुजुर्ग दादीजी घर पर ही रहती हैं। वे पूरे परिवार की मार्गदर्शिका हैं।* मेरे भाई–बहन भी अभी मेरी तरह पढ़ाई कर रहे हैं।

हमारे नौ खेत हैं। मेरा पूरा परिवार मिलजुल कर खेती करता है। आजकल धान की फसल बोई गयी है। पालतू पशुओं में एक भैंस और एक गाय है। दूध बेचकर भी परिवार की आर्थिक जरूरतों को पूरा किया जाता है। घर के आसपास छोटी–छोटी क्यारियाँ भी बनायी हैं जिनमें शाक–सब्जियाँ उगाते हैं।

मैंने प्राथमिक व पूर्व–माध्यमिक शिक्षा गाँव के ही सरकारी स्कूलों से प्राप्त की। मेरे पसंदीदा विषय हिंदी और संस्कृत हुआ करते थे। हाईस्कूल और इंटरमीडिएट की पढ़ाई राजकीय बालिका इंटर कॉलेज कर्णप्रयाग से प्राप्त की। हिंदी, जीव–विज्ञान और आपदा–प्रबंधन मेरी पसंद के विषय थे। ये सभी विषय मुझे अभी भी अच्छे लगते हैं। डॉ. शिवानन्द नौटियाल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कर्णप्रयाग, चमोली से बी.कॉम. करने के बाद अब एम.कॉम. की पढ़ाई कर रही हूँ।

मैं सुबह साढ़े चार बजे उठकर साढ़े पाँच बजे तक पढ़ाई करती हूँ। इसके बाद थोड़ी देर टहलती हूँ। पानी भरकर सबके लिये चाय–नाश्ता तैयार करती हूँ। मेरी छोटी बहन घर की साफ–सफाई का काम करती है। साढ़े सात बजे नाश्ता करने के बाद बर्तन धोना, मवेशियों को पानी पिलाना व नहलाना इत्यादि काम करती हूँ। सुबह साढ़े नौ से साढ़े बारह बजे तक मेरी 'ऑनलाइन क्लास' का समय रहता है। आजकल छुट्टियाँ होने से माँ के साथ घास–लकड़ी लेने जाती हूँ और कपड़े धोती हूँ। दिन का खाना खाकर दो घंटे आराम करती हूँ। कभी–कभी खेत की गुड़ाई करने जाना पड़ता है। शाम को शिक्षण केन्द्र में जाती हूँ। आजकल केन्द्र बन्द होने से घर पर रहकर पढ़ाई करती हूँ। थोड़ा वक्त क्यारियों में पानी डालने में लगाती हूँ और फिर केन्द्र में कम्प्यूटर सीखती हूँ। इसके अलावा बच्चों को किताबें वितरित करती हूँ। कोविड महामारी से बचने के लिये उन्हें मास्क वितरित करने के साथ ही महामारी से बचने के प्रति जागरूक करती हूँ। घर आकर चाय पीती हूँ और टीवी देखती हूँ। कभी शाम को भी घास लेने के लिये जाना पड़ता है। रात का खाना माँ या कभी–कभी बहन, बनाती है। इस समय मैं स्वयं पढ़ती हूँ और छोटे भाई को पढ़ने में मदद

भी करती हूँ। खाना खाने के बाद पढ़ती हूँ, फिर थोड़ी देर दोस्तों के साथ ूींजे।चच पर बात करके साढ़े दस बजे सो जाती हूँ।

घर के सभी काम मुझे पसंद हैं इसलिए खुशी–खुशी से करती हूँ। *दिन का खाना लकड़ी के चूल्हे में पकाने में मुझे दिक्कत महसूस होती है* इसलिए यह काम मजबूरी में करना पड़ता है। कभी–कभी मन नहीं होने पर भी 'ऑनलाइन' कक्षाओं में उपस्थित रहना पड़ता है।

मैं अपने जीवन में एक अच्छी सरकारी नौकरी करके अपने माँ–बाप का नाम रोशन करना चाहती हूँ। इसके लिये मैं काफी मेहनत भी करती हूँ। घर की बड़ी बेटी होने के कारण मेरे माँ–बाप को मेरी शादी की चिंता लगी रहती है। कभी–कभी घर का ज्यादा काम होने के कारण मैं अपनी पढ़ाई पर कम ध्यान दे पाती हूँ।

ग्राम शिक्षण केन्द्र 2014 से शुरू हुआ। सबसे पहले केन्द्र का संचालन कमलेश नेगी ने किया। उनके बाद 2018 से 2021 तक दीपक गुसाईं ने चलाया। मार्च 2021 से मैं इसे चला रही हूँ।

मैं पहले से शिक्षण केन्द्र में जाती थी। वहाँ से कहानी की किताबें पढ़ने के लिये लाती, जो मुझे बहुत पसंद हैं। फरवरी के महीने में दीपक भाई ने मुझे बताया कि वह पढ़ाई के लिये गाँव से बाहर जा रहे हैं। उन्होंने गाँव में बहुत से लोगों को केन्द्र चलाने को कहा। मैं पहले भी अपने घर पर छोटे बच्चों को पढ़ाती थी। मुझे यह काम बहुत अच्छा लगता है। कुछ दिनों के बाद गाँव में शिक्षण–केन्द्र संचालक के चयन के सम्बन्ध में संस्था द्वारा बैठक की गयी जिसमें मुझे चुन लिया गया। हमारा केन्द्र पंचायत भवन में संचालित होता है। यहाँ पर दो बड़े कमरे हैं। आसपास खेलने की जगह कम होने के कारण खेल के दिन बच्चों को बड़े मैदान में ले जाया जाता है। स्कूल के दिनों में केन्द्र सर्दियों में साढ़े तीन से पाँच बजे तक जबकि गर्मियों में तीन से पाँच बजे तक खुलता है। इसके बाद बच्चे कम्प्यूटर–सेंटर में आते हैं।

ग्राम शिक्षण केन्द्र में 406 पुस्तकें हैं। इनमें 375 हिंदी में तथा 31 अंग्रेजी में हैं। मैंने बहुत सी किताबें पढ़ी हैं। 'कुछ सामान्य रोग', 'कश्मीर से कन्याकुमारी', 'मुक्ति का मार्ग', 'विज्ञान–माला', विज्ञान–प्रसंग' आदि मुझे ज्यादा अच्छी लगीं। बच्चों द्वारा सबसे ज्यादा पढ़ी गयी किताबें हैं: 'कुदरत के रंग', 'इन्द्रधनुष पर बैठी 'तितली', 'पूंछ', 'मेरी कहानी', 'मुक्ति का मार्ग', 'मेंढक राजकुमार', 'हाथी की हिचकी', गुनगुन करती 'मधुमक्खी', 'विज्ञान–माला', विज्ञान–प्रसंग' आदि।

ब्लैक–बोर्ड क्रिकेट (गणित सीखने के लिये सुझाई गयी लूडो जैसी एक खेल–गतिविधि) में बच्चों की सबसे अधिक रुचि है। इसके आलावा बच्चे शतरंज, बैडमिंटन, जोड़ो–स्ट्रॉ, रंगोंमेट्री में भी अधिक रुचि लेते हैं।

ग्राम शिक्षण केन्द्र खुलने से बच्चे नियमित रूप से साफ होकर यहाँ पढ़ने और खेलने आते हैं। किशोरियाँ केन्द्र से किताबें घर ले जाकर पढ़ती हैं तथा केन्द्र की दैनिक गतिविधियों में रुचि के साथ भाग लेती हैं। वे अपने जीवन में आने वाली समस्याओं पर चर्चा करती हैं और प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेती हैं। मेरे जीवन में भी बड़ा बदलाव आया है। पहले मेरा समय घर पर ही बीतता था। अब केन्द्र में बच्चों के साथ उन्हें पढ़ाने में मुझे बहुत अच्छा लगता है। मेरे कौशल पर भी प्रभाव पड़ा, जैसे रोचक गतिविधियों द्वारा कोई विषय बच्चों को समझाना अच्छा लगता है और यह चुनौतीपूर्ण भी है।

इस वर्ष महामारी होने से ग्रामवासी काफी भयभीत हो गये। सभी को चिंता होने लगी। गाँव में रह रहे छोटे दुकानदार, मिस्त्री, वाहन चालक एवं छोटे व्यवसायियों की आमदनी पर काफी प्रभाव पड़ा। दैनिक जरूरत की चीजों की दुकानें हफ्ते में एक दिन खुलने से भी परेशानी हुई। धार्मिक–सामाजिक आयोजनों को स्थगित कर दिया गया। गाँव के लोग छोटी–मोटी मौसमी बीमारी होने पर घबराने लगे। ग्राम शिक्षण केन्द्र को बहुत कम खोला, अधिकतर बच्चों को घर में जाकर किताबें दी। हमने ग्रामवासियों को महामारी से बचाव की जानकारी व सुझाव दिये। टीकाकरण के लिये जागरूकता की। अब हालात ठीक हैं लेकिन लोग अभी भी मास्क, स्वच्छता और सुरक्षित दूरी का ख्याल रख रहे हैं।

परिवर्तन आया

अंजली

मेरा जन्म ग्राम मालई, जिला चमोली, में हुआ। परिवार में माँ, भाई और भाभी हैं। भाई दिल्ली में प्राइवेट 'जॉब' करते हैं। माँ और भाभी खेती करती हैं। कभी–कभी मैं भी खेती के काम करती हूँ। हमारे कुल छः खेत हैं। इनमें तीन खेत हमारे घर से दूर हैं। उनमें जून के महीने में रोपाई की जाती है। हमारे पास एक गाय, उसका छोटा बछड़ा और एक भैंस है। भैंस अभी छोटी है। हम शाम को इनके लिये चारा लेने खेतों में जाते हैं।

मैंने पाँचवी तक अपने गाँव के स्कूल में और इसके आगे, कक्षा छः से बारह तक जी. आई.सी. नंदासैण में पढ़ा। मुझे दसवीं कक्षा में गृह–विज्ञान और इंटर में राजनीति–शास्त्र और हिंदी विषय सबसे अच्छे लगते थे। होम साइंस में सबसे अच्छा बुनाई और बेकार पड़ी सामग्री से उपयोगी चीजें बनाना लगता था।

मैं सुबह साढ़े छः बजे उठकर सबसे पहले चाय पीती हूँ। फिर पूरे घर की सफाई करती हूँ। उसके बाद मैं सब्जी बनाती हूँ और भाभी रोटी। दोपहर तक पालतू–पशुओं को पानी पिलाना, नाश्ता, भैंस को नहलाने गधेरे तक लेकर जाना और वापस लाना (नौ से साढ़े ग्यारह बजे), वापस आकर दिन का खाना तैयार करना इत्यादि काम भी करने होते हैं। जब कॉलेज रहता है तब मैं इतने काम नहीं कर पाती। वैसे सभी काम खुशी से करती हूँ लेकिन कभी–कभी मजबूरी में भी कुछ काम करने पड़ जाते हैं।

हमारा ग्राम शिक्षण केन्द्र पंचायत भवन में चलता है। एक ही कमरा है लेकिन खेलने–कूदने को खुली जगह है। यह मेरे घर के पास ही स्थित है। स्कूल के दिनों में केन्द्र का समय शीतकाल में शाम चार से साढ़े पाँच बजे, ग्रीष्मकाल में तीन से छः बजे तक है। जाड़ों में दिन छोटे तथा अधिक ठण्ड होने से केन्द्र कम समय तक खुल पाता है। छुट्टी के दिन सवा नौ से साढ़े बारह बजे तक केन्द्र खोलती हूँ।

केन्द्र की किताबों में से बच्चे ज्यादातर कहानी व कविताओं की किताबें पढ़ते हैं। मैंने कुल छः–सात किताबें पढ़ी हैं। हिंदी, पर्यावरण, भावगीत, कहानी और कविता की किताबें ही पढ़ी हैं। बच्चों को सबसे रोचक प्रार्थना और चेतना–गीत गाना तथा कहानी की किताबें पढ़ना लगता है। खेल–कूद में उन्हें ज्यादा आनंद आता है।

केन्द्र से जुड़कर कुछ अच्छी बातें सीखने को मिली हैं। बच्चों को पढ़ाना और उनसे बातें करना, सुबह जल्दी उठना और अपने काम समय पर करना, किताबें पढ़ना, महिलाओं

के साथ बातें करना इत्यादि मुझे अच्छा लगता है। केन्द्र को साफ–सुथरा रखना, इसकी सजावट, प्रत्येक चीज को ठीक तरह से रखना, बच्चों को अच्छे से बैठाना और नई–नई गतिविधियाँ करके हम ग्राम शिक्षण केन्द्र को ज्यादा रुचिकर बना सकते हैं।

अपनी पढ़ाई पूरी करने का मेरा बहुत मन है और जीवन का लक्ष्य भी यही है। मैं भविष्य में पुलिस बनना चाहती हूँ। वैसे अभी पढ़ लूँ, इतना ही काफी है। पढ़ने में मुझे किसी तरह की कठिनाई नहीं आ रही है और घर वाले भी साथ दे रहे हैं।

ग्राम शिक्षण केन्द्र से मेरा जुड़ाव नया है। पन्द्रह मार्च 2021 से मैंने केन्द्र का संचालन शुरू किया। हमारे गाँव में शिक्षण केन्द्र 2018 से शुरू हुआ। मुझसे पहले हमारे गाँव का केन्द्र शुभम चलाते थे। तीन साल काम करने के बाद आई.टी.आई. के पेपर होने तथा आगे 'जॉब' की तैयारी के लिये उसे यह काम छोड़ना पड़ा। मैंने पहले इस काम के लिए 'ना' बोला क्योंकि मेरा पहले से ही बहुत काम था। कॉलेज जाना होता और सिलाई मशीन चलाना भी सीख रही थी। सोचा कि एक साथ इतने काम कैसे करूँगी। लेकिन जब से ग्राम शिक्षण केन्द्र में जुड़ी तो अच्छा लगा। अब मशीन का काम कम होने से थोड़ा 'टाइम' निकल आता है। बच्चों को अच्छी बातें सिखाना मुझे भी अच्छा लगता है। ग्राम शिक्षण केन्द्र खुलने से बच्चों और किशोरियों में काफी परिवर्तन आया है। केन्द्र में पढ़ने और खेलने की सामग्री रखी है, उसे देखकर वे एकदम केन्द्र में एकत्र हो जाते हैं। आजकल लॉकडाउन लगा है। बच्चे पढ़ना–लिखना भूलें नहीं इसलिए वे केन्द्र में अध्ययन करने आ जाते हैं। शुरू में, जब नया केन्द्र खुला, बच्चे हमेशा इस बारे में ही बातें करते थे कि कब, कितने बजे केन्द्र खुलेगा। माता–पिता भी अपने बच्चो को केन्द्र में जाने को कहते हैं।

कोविड महामारी की दूसरी लहर के बढ़ते हुए प्रभाव को देखकर लोगों में भय बढ़ गया। लोगों का घर से निकलना बन्द हो गया। स्कूल–कॉलेज भी बन्द हो गये। ग्रामवासियों ने अपने घर पर ही उद्यम किया। इस बार बीमारी गाँव में ज्यादा ही संक्रामक हो रही थी। लोगों ने बचाव के लिये हर समय मास्क पहना और अपने बच्चों से भी पहनने को कहा। बाहर से गाँव वापस लौटे हुए लोग अलग स्थान पर रहने लगे और लोगों के बीच दूरियाँ बढ़ गयीं। लोग दूसरे गाँव में जाने से भी डरने लगे। पहले लोग साफ–सफाई पर ध्यान नहीं देते थे पर कोविड–19 महामारी के बाद वे इस तरफ ध्यान देने लगे हैं।

अब हम ग्राम शिक्षण केन्द्रों को सप्ताह में पाँच दिन खोल रहे हैं। केन्द्र खुलने पर हमने बच्चों के साथ मिलकर साफ–सफाई की और साथ ही खेल–कूद भी किया। पर्यावरण दिवस पर सब ने मिलकर पेड़ लगाये तथा बहुत सी अन्य गतिविधियाँ की। अब गाँव में डर का माहौल कम होने के कारण केन्द्रों को नियमित खोल रहे हैं।

अपनी पहचान के बारे में सोचा

कौशल्या रौतेला

मेरा जन्म बागेश्वर जिले के लीती गाँव में हुआ। मेरे पापा सरकारी ठेकेदार रहे हैं और माँ खेती करती है। मेरी दो बहनें और एक भाई है। मेरे बचपन के दिन अच्छे गुजरे। घर के काम मेरी बहनें करती थीं जबकि मैं और भाई हमेशा खेलते रहते। मैं स्कूल में कक्षा एक से ही हमेशा प्रथम स्थान पर आती। मेरे पापा मुझे ट्यूशन लेने भेजते थे।

जैसे ही मैं आगे की कक्षा में गयी, बहनों की शादी हो गयी। उसके बाद स्कूल की पढ़ाई के साथ–साथ मुझे घर के कामों, खेतीबाड़ी और गाय–भैसों का भी ध्यान रखना पड़ा। *जब मैं हाईस्कूल में प्रथम श्रेणी में पास हुई तो मेरे पापा ने पाँच किलो मिठाई बाँटी।*

ग्यारहवीं से शामा इंटर कॉलेज में पढ़ने जाती थी। *स्कूल पहुँचने के लिये दस किलोमीटर पैदल चलना पड़ता था।* मोटर सड़क तो है लेकिन कभी गाड़ी का समय आगे–पीछे रहता तो कभी टिकट खरीदने को पैसे नहीं होते थे। 2013 में मैंने प्रथम श्रेणी में इंटर पास किया।

2014 में मेरी शादी गोगिना गाँव में हो गयी। शादी होते ही मैं पति के साथ दिल्ली चली गयी। पति पेशे से ड्राइवर हैं। मैंने दिल्ली का लाल किला, इंडिया गेट, कुतुब मीनार और आगरा में स्थित ताजमहल देखा। एक साल बाद मेरा बेटा पैदा होने के बाद मेरी तबियत बहुत खराब हो गयी जिस कारण मैं गांव आकर बच्चे का खयाल रखने लगी।

मेरे परिवार में पति, लड़का और स्वयं मैं तीन लोग हैं। हमारी खेती की जमीन है। एक गाय, एक बछड़ा और एक बकरी पाली है। एक कुत्ता और एक बिल्ली भी पाल रखी है।

मैं सुबह पाँच बजे उठती हूँ। झाड़ू लगाना, बर्तन धोना, गाय को बाहर बाँधना, गोबर निकालना और नाश्ता बनाना–इन सभी कामों को करने के बाद नौ बजे या तो खेतों को या घास/चारा लेने चली जाती हूँ। फिर ग्यारह बजे वापस घर आकर एक बजे तक खाना बनाना, मवेशियों को चारा और पानी देना, कपड़े धोना, नहाना, बच्चे को नहलाना और बर्तन साफ करना आदि काम रहते हैं। इसके बाद एक घंटा आराम करती हूँ। मैं दिन में सोती नहीं लेकिन कपड़े सिलना, किताब पढ़ना जैसे काम करती हूँ। दिन में दो से साढ़े तीन बजे तक बच्चों के साथ समय बिताती हूँ। चार बजे खेतों को या जंगल में चली जाती हूँ। कभी वार्ड मेम्बरों की मीटिंग होती है। फिर छः बजे हमेशा घर आ जाना हुआ। गाय को गोठ में बाँधना, सब्जी–रोटी बनाना आदि काम साढ़े आठ बजे तक पूरे कर लेती हूँ।

रात दस बजे तक टीवी पर समाचार, पिक्चर आदि देखती हूँ और उसके बाद सो जाती हूँ। मैं सभी काम खुशी–खुशी करती हूँ क्योंकि सभी काम मुझे ही करने हैं कोई दूसरा तो काम करने के लिये हुआ नहीं।

मेरा जीवन ठीक ही चल रहा है। घर का काम, बच्चे का ख्याल रखना हुआ। शिक्षण केन्द्र चलाना और वार्ड–मेम्बर का काम, ये सब मैं कर ही रही हूँ।

मुझसे पहले गोगिना धारी में ग्राम शिक्षण केन्द्र पुष्पा देवी, उमा देवी और गंगा देवी ने चलाया था। पुष्पा देवी वर्तमान में मार्गदर्शिका हैं। उमा और गंगा की शादी हो गयी और वर्तमान में दोनों घर संभाल रही हैं। गंगा की शादी हो गयी तो ग्रामवासियों और संस्था के मार्गदर्शक ने मुझसे पूछा, क्योंकि मेरी शिक्षा ठीक है। इस तरह 2018 में शिक्षिका बन गयी। अब मैं अपने घर के काम करती हूँ और साथ में शिक्षण केन्द्र भी चलाती हूँ।

केन्द्र धारी में दो कमरों के मकान में चलता है। एक कमरे में पोस्ट ऑफिस चलता है और दूसरे कमरे में बच्चे पढ़ते हैं। कमरा ठीक है लेकिन बच्चों के खेलने की जगह और शौचालय की कमी है।

ग्राम शिक्षण केन्द्र खुलने से बच्चे साफ–सुथरे रहते हैं और ठीक से उठना– बोलना सीख रहे हैं। बच्चों की हिचकिचाहट कम हुई है। केन्द्र में आते ही 'जय–जगत' बोलते हैं। पहले उनकी जानकारी कम थी और स्कूल से आते ही अपना बस्ता एक कोने में रखकर मिट्टी–पत्थर के खेलों में लग जाते थे। कपड़े गन्दे हो जाते लेकिन अक्सर पूरे हफ्ते उन्हीं कपड़ों को पहनते। अब ये आदतें बदल गयी हैं। किशोरियाँ 'अपनी पहचान' के बारे में सोचने लगी हैं। वे पढ़ाई के साथ–साथ सिलाई भी सीख रही हैं। महिलाएं हर महीने गोष्ठी के लिये जमा हो जाती हैं और उन्हें बोलने का अच्छा अभ्यास हो गया है।

केन्द्र से जुड़ने के बाद मेरे जीवन में भी बदलाव आया। पहले मैं तीन–चार दिनों में कभी एक दिन बाल बनाती थी। दिन और तारीख का भी पता नहीं रहता था। अब हमेशा साफ–सफाई से जाती हूँ। तभी बच्चों से भी साफ–सुथरा बनकर आने को कह सकती हूँ। केन्द्र में किताबें, पत्रिकाएँ आदि भी पढ़ती हूँ। जब कभी अल्मोड़ा जाते हैं तो वहाँ अलग–अलग गाँवों के लोगों से जान–पहचान होती है तथा आपस में मेलजोल बढ़ता है।

सोचती थी पिताजी ने पढ़ाया क्यों

किरन जोशी

मेरा जन्म खेतीखान के गोशनी ग्राम–सभा के अंतर्गत ओलीगाँव, जिला चम्पावत में हुआ। परिवार में तीन बड़े भाई और मैं सबसे छोटी एक बहन थी। पिताजी जूनियर हाईस्कूल में अध्यापक रहे। माताजी खेती में अत्यधिक रुचि के साथ–साथ घर के काम करती रही।

तीन भाइयों की इकलौती बहन होने के कारण पिताजी मुझसे बहुत अधिक लाड़–प्यार करते थे। बचपन में मुझसे कुछ भी काम नहीं कराया। जब बड़ी होने लगी तो पिताजी ने मेरी पढ़ाई–लिखाई की तरफ विशेष ध्यान दिया ताकि मैं आत्म–निर्भर बन सकूँ। उन्होंने इंटर पास करने तक मेरी शादी की बात भी नहीं की जबकि उस समय ऐसी सोच बहुत कम आदमियों की होती थी। पिता ने मुझे खुला माहौल दिया। बावजूद इसके कि अन्य रिश्तेदारों ने उनसे कहा लड़कियों को इस तरह से सिर पर नहीं रखा जाता, उन्होंने कहीं आने–जाने पर कभी प्रतिबन्ध नहीं लगाया। जब मैंने हाई–स्कूल में गृह–विज्ञान में अठहत्तर प्रतिशत अंक के साथ डिस्टिंक्शन और कुल छः सौ में से तीन सौ तीस अंक प्राप्त किये तो पिताजी ने गाँव में मिठाई बाँटी। मेरे साथ की लड़की को उसके परिजन आगे नहीं पढ़ाना चाह रहे थे तो पिताजी ने उसके घर जाकर अभिभावकों को समझाया–बुझाया। उसके बाद हम दोनों का एक साथ एडमिशन कराया गया। इंटर के बाद मेरा एडमिशन लोहाघाट महाविद्यालय में किया लेकिन फिर समाज के भय से शादी कर दी। शादी के बाद बी.ए. की परीक्षा नहीं दे पायी।

ससुराल में सास, पति, देवर–देवरानी और हमारे बच्चे हैं। हम सभी एक साथ रहते हैं। परिवार में सभी कृषि का कार्य करते हैं। परिवार बड़ा हो गया तो देवर ने अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए लोहाघाट भेज दिया। अब मैं बच्चों के साथ घर में रहती हूँ।

सबसे बड़ी बेटी पढ़ने में अच्छी है लेकिन मेरी चिंता यह रही कि पर्याप्त धन का अभाव था। मुझसे खेतीबाड़ी और शारीरिक श्रम वाला काम नहीं होता था। इस कारण मेरा मन घर के कामों में नहीं लगता था। मैं सिलाई–बुनाई और पढ़ाई करना चाहती थी लेकिन ये सुविधाएँ तब यहाँ पर थी ही नहीं और लोग इस तरह का काम पसंद भी नहीं करते थे। मैं सोचा करती कि पिताजी ने मुझे पढ़ाया क्यों? गाँवों में तो सब लोग रात–दिन खेतों, पशुओं का काम करते हैं और इसे ही अच्छा समझते हैं। मेरे तीनों बच्चें पढ़ने–लिखने में अच्छे हैं जिससे मुझे बहुत खुशी मिलती है।

1996 में अपने गाँव की कुछ महिलाओं से 'सहारा' मिला, जब मैं प्रौढ़–शिक्षा कार्यक्रम से जुड़ी। उस समय मैं ग्राम पंचायत की वार्ड–मेम्बर भी थी। मैंने निरक्षर महिलाओं को अक्षर–ज्ञान, अपना और अपने परिवार के सदस्यों का नाम लिखना सिखाया। मैंने तीन साल तक इस काम को किया। इसके लिए ग्राम–प्रधान द्वारा कुछ धनराशि भी दी जाती थी। इसके बाद स्वास्थ्य–विभाग में महिलाओं को शिशुओं के टीकाकरण के लिये जागरूक करने तथा घर–घर जाकर विटामिन 'ए' और कैल्शियम बाँटने का काम किया। फिर मेरा चयन 'महिला समाख्या' कार्यक्रम में हो गया। यहाँ गाँव का सर्वेक्षण और समस्याओं को समझने का काम था। अपने छोटे–छोटे बच्चों को छोड़कर दूसरे गाँव में रहना थोड़ा मुश्किल होता था। मुझे अनेक बार 'महिला समाख्या' के जिला व राज्य–मुख्यालय तथा उत्तराखण्ड के अन्य गाँवों में जाने का मौका मिला। 'जेंडर', स्वास्थ्य, शिक्षा, पंचायत, खाद्य सुरक्षा, वन पंचायत आदि विषयों पर अनेक जानकारियाँ भी मिलीं।

इस दौरान परिवार में दिक्कतें भी हुई। इसी बीच मैंने 2010 में बी.ए. प्रथम वर्ष की परीक्षा दी और 2012 में बी.ए. पास कर लिया। 2015 में 'महिला समाख्या' कार्यक्रम समाप्त हो गया। मैं 2016 में दुग्ध–डेरी से जुड़ कर अपने गाँव की अध्यक्ष बनी। इसके साथ ही 'नाबार्ड' से जुड़कर गाँव में महिला–समूह बनाये और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। एक सिलाई की ट्रेनिंग भी आयोजित की जिसमें तीस महिलाओं ने भाग लिया।

एक दिन पाटी जाकर 'पर्यावरण संरक्षण समिति' के प्रमुख श्री पीताम्बर गहतोड़ी जी से मिली और संस्था से जुड़ने के बारे में चर्चा की। कुछ दिनों के बाद उन्होंने संस्था की मार्गदर्शिका हिमानी के साथ अल्मोड़ा उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान में आयोजित महिलाओं की गोष्ठी में भाग लेने का प्रस्ताव मेरे समक्ष रखा। बताया कि वहाँ कुमाऊँ और गढ़वाल के अलग–अलग क्षेत्रों से बहुत सारी महिलाएं आयेंगी और नई–नई जानकारियाँ मिलेंगी। घर छोड़कर अल्मोड़ा जाने में दिक्कत थी लेकिन बेटी ने कहा कि घर के काम वह कर लेगी और मुझे ऐसा मौका नहीं छोड़ना चाहिये। इस तरह 2017 के अगस्त माह में अल्मोड़ा पहुँची। मुझे वह प्रशिक्षण कार्यक्रम और अनुराधा दीदी, रमा दीदी, कैलाश भाई और पाण्डेजी की बातें बहुत अच्छी लगीं। तब से आज तक मैं मार्गदर्शिका के रूप में संस्था से जुड़ी हूँ। दस गाँवों में महिला संगठनों का काम देखती हूँ। इसके साथ ही पाँच गाँवों में ग्राम शिक्षण केन्द्र भी चला रहे हैं।

सर्वप्रथम 'संगठन क्या है' यह विषय महिलाओं को समझाने के लिये "जब बन ही गया बहनों का संगठन" गीत गाया। फिर इस गीत पर चर्चा की। महिलाओं को एक गोल घेरे में

बैठकर उन्हें एक–एक लकड़ी बाँटी और उनसे कहा कि इनका एक गट्ठर बनाकर रस्सी से बाँधते हैं। उनसे गठ्ठर को तोड़ने के लिये कहा। सबने कोशिश की और कहा कि लकड़ियाँ टूट नहीं रही हैं। तब हमने कहा कि अगर संगठन इस तरह से मजबूत रहेगा तो हमें भी कोई नहीं तोड़ सकता है।

एक और कहानी बनाकर महिलाओं को सुनाई। इस कहानी में बताया कि हम महिलाएं जंगल जाकर इधर–उधर से एक–एक लकड़ी बीन कर लकड़ी का गठ्ठर सर पर रखकर घर वापस लाते हैं। इसे हम आसानी से लेकर आ जाते हैं और रख देते हैं। जरूरत के समय–खाना पकाना, आग तापना, सामूहिक काम–काज के समय यह कितना काम आता है! ऐसे ही हम संगठन से जुड़कर अनेक काम कर सकते हैं। मैं लखनपुर गाँव का उदाहरण देती हूँ। गाँव की महिलाओं ने उत्तराखण्ड महिला परिषद् अल्मोड़ा में आयोजित बैठक में भाग लिया। जब वे वापस आयीं तो उन्होंने मिलकर गाँव के रास्तों को साफ किया तथा दुबारा गन्दगी नहीं होने दी। इसके अलावा ग्राम शिक्षण केन्द्र के प्रति रुचि और सहयोग की भावना पैदा हुई। मल्ला कमलेख गाँच की महिलाओं ने संगठन के माध्यम से पाली–हाउस तैयार किये और सब्जी उत्पादन का कार्य शुरू किया। यह काम गाँव में पहले भी होता था लेकिन अब मिलजुल कर होने लगा। पाँच–छः महिलाओं ने गोभी, टमाटर, बैंगन, शिमला मिर्च इत्यादि की खेती से पन्द्रह हजार से बीस हजार रुपये की वार्षिक आमदनी प्राप्त की है।

तल्ला कमलेख गाँव की महिलाओं ने संगठन के दम पर आवारा मवेशियों की समस्या के समाधान हेतु सरकार व प्रशासन पर दबाव बनाने के लिये धूनाघाट में सड़क पर धरना दिया। महिलाओं ने कहा कि जब तक एस.डी.एम. हमारी बात नहीं सुनेंगे हम नहीं हटेंगी। किसी अन्य अधिकारी की बात नहीं सुनेंगी। पिकअप में भर कर बाहर से जो गायें यहाँ लायी गयी हैं, उन्हें वापस भेजा जाय। संगठन के दबाव के कारण एस.डी.एम. को हमारा प्रस्ताव लेकर कार्यवाही करनी पड़ी। उन्होंने तीन चौकियों को ऐसी घटनाएँ रोकने के लिये सक्रिय किया और जिम्मेदारी भी दी।

भट्यूणा गाँव की महिलाओं ने कृषि विभाग से सहायता प्राप्त करके अपने गाँव में पाली–हाउस, जल–संग्रहण टैंक आदि बनाये हैं। इसके साथ ही आवारा जानवरों से खेती को बचाने के लिये सामूहिक प्रयास कर रहे हैं। कोरोना–काल में महिलाओं ने लोगों को जागरूक किया और उत्साह बनाये रखा। साथ ही, सबने मिलकर कमजोर लोगों की मदद की है।

नया सीखने को मिला

मनीषा भट्ट

मेरा जन्म गूम गाँव, पाटी, जिला चम्पावत, में हुआ। वर्तमान में राजकीय महाविद्यालय पाटी में बी.ए. द्वितीय वर्ष की पढ़ाई कर रही हूँ। मैंने पाँचवी तक की शिक्षा गूम के प्राथमिक विद्यालय में ली। उसके बाद राजकीय इंटर कॉलेज पाटी में पढ़ा।

परिवार में माँ और दो बड़े भाई हैं। मेरे पिताजी की मृत्यु हो चुकी है। हम छः भाई–बहन हैं। मैं सबसे छोटी हूँ। तीनों बहनों की शादी हो गयी है। हम खेतीबाड़ी करते हैं। हमारे पास खेती के योग्य काफी जमीन है।

हमारे परिवार में पाँच बिल्लियाँ हैं। मैं अपना ज्यादा वक्त उनके साथ खेलने में बिताती हूँ। हमने पाँच गायें भी पाली हैं। इनमें से एक गाय दूध देती है। हम मधुमक्खी–पालन भी करते हैं।

मेरे गाँव की जनसंख्या आठ सौ सत्रह है। गाँव में लोग आपस में प्रेम–भाव से रहते हैं तथा *हर काम को मिलकर करते हैं।* पहले की अपेक्षा अब काफी सुविधाएं हो गयी है। सड़क आ जाने से बहुत सुविधा हो रही है। यहाँ प्राइमरी स्कूल में बहुत अच्छी पढ़ाई होती है। कोरोना महामारी के कारण आजकल ऑनलाइन पढ़ाई हो रही है। *मेरे गाँव में पानी की समस्या है।* बहुत दूर से पानी आता है जो गर्मियों में या अधिक वर्षा होने के कारण अचानक बन्द हो जाता है। मेरे गाँव में पन्द्रह नौले हैं जिनमें से बारह गर्मी बढ़ने पर सूख जाते हैं। गाँव काफी बड़ा है। यहाँ चौदह मंदिर हैं। महिलाएं संगठन में मिलकर कार्य करती हैं तथा एक–दूसरे का सहयोग करती हैं। गाँव के किशोर–किशोरियाँ भी हर काम में आगे रहते हैं और खेल–कूद प्रतियोगिताओं में भाग लेते हैं। गाँव में अधिकतर लोग शिक्षित हैं।

मैं सुबह छः बजे उठती हूँ और हाथ–मुँह धोकर आग जलाती हूँ। तब तक माँ भी उठ जाती है और हम मिलकर चाय पीते हैं। उसके बाद मेरी माँ गाय का दूध दुहती है, उन्हें चारा देती है और गोबर निकालती है। इस दौरान मैं बिस्तर उठाने और झाड़ू लगाने का काम करती हूँ। तब तक मेरे भाई भी उठ जाते है और हम सब मिलकर चाय पीते हैं। उसके बाद मैं पानी भरती हूँ और नाश्ता बनाती हूँ। हम नौ बजे नाश्ता करते हैं। नाश्ते के बाद माँ गायों का काम और मैं घर के काम करती हूँ, जबकि भाई अपने काम पर चला जाता है। इसके बाद मैं थोड़ी देर फोन चलाती हूँ। हमारी ऑनलाइन क्लास ग्यारह से बारह बजे तक लगती है। उसके बाद माँ और मैं साथ मिलकर दिन का खाना तैयार करते

हैं। इस के बाद थोड़ी देर आराम और फिर तीन बजे चाय पीते हैं। उसके बाद खेतों में काम करते हैं। कोरोना से पहले तीन बजे केन्द्र में जाती थी लेकिन आजकल केन्द्र बन्द होने के कारण माँ का हाथ बँटाती हूँ। मैं पाँच बजे घर आ जाती हूँ। मेरे भाई क्रिकेट खेलने जाते हैं और मैं रात के खाने की तैयारी करती हूँ। शाम को जब सब लोग घर आ जाते हैं तो हम आरती करते हैं। उसके बाद चाय पीते हैं और फिर खाना बनाते हैं। खाना खाने के बाद मैं थोड़ी देर फोन चलाती हूँ और फिर कहानियाँ पढ़कर सो जाती हूँ।

मुझे पढ़ाई करना, कहानियाँ पढ़ना और सुनाना अच्छा लगता है। गाने गाना, फोन चलाना, खाना बनाना, घूमना–फिरना भी अच्छा लगता है। *मैं छोटे बच्चों को पसंद करती हूँ और उन्हें कहानी सुनाना, उनसे बात करना तथा पढ़ाना अच्छा लगता है।* मैंने 2019 में बुनाई और सिलाई का प्रशिक्षण लिया था लेकिन घर में मशीन नहीं होने के कारण ज्यादा सीख नहीं सकी।

ग्राम शिक्षण केन्द्र से मैं मार्च 2020 से जुड़ी। कोरोना के कारण अल्मोड़ा में पाँच दिन का प्रशिक्षण तीन दिन में ही पूरा करना पड़ा। अल्मोड़ा प्रशिक्षण में बहुत सी बातें पता चली। जैसे–केन्द्र को रुचिकर कैसे बनायें, बच्चों को पढ़ाने के नये–नये तरीके भी सीखने को मिले। मैंने मई माह से केन्द्र चलाया। इसमें पैंतीस बच्चे आये लेकिन लॉकडाउन खुलने के बाद शहरों में पढ़ाई कर रहे बच्चे वापस चले गये। इसलिये अब मेरे केन्द्र में पच्चीस बच्चे आते हैं। आजकल केन्द्र बन्द होने से बच्चे परेशान हैं और पढ़े हुए पाठों को भूलते जा रहे हैं।

मेरे केन्द्र में लगभग पाँच सौ किताबें हैं। इनमें से बहुत सारी पुस्तकें कहानियों की हैं। बच्चों के खेलने के लिये रस्सी–कूद, कैरम, फुटबॉल, बैडमिंटन, लूडो आदि सामग्री है। केन्द्र के नजदीक दो मैदान हैं जहाँ बच्चे मजे से खेलते हैं। ग्राम शिक्षण केन्द्र की प्रार्थनाएं और भावगीत बच्चों को बहुत पसंद हैं।

केन्द्र पहले पंचायत घर में खुलने वाला था लेकिन वहाँ बहुत सा सामान रखा होने के कारण मैं अपने चाचा के घर में चलाती हूँ। वे लोग पाटी में रहते हैं। उन्होंने अपने खाली मकान में, जो अत्यंत सुविधाजनक है, शिक्षण केन्द्र चलाने की अनुमति दे दी।

बच्चे पहले बेकार इधर–उधर घूमते थे लेकिन अब केन्द्र में पढ़ने और खेलने आते हैं। बच्चों के माता–पिता का कहना है कि बच्चे पढ़ी–लिखी चीजें भूल रहे थे अब फिर से याद कर रहे हैं। केन्द्र से मुझे भी कुछ नया सीखने को मिला है।

पहले समय व्यर्थ जाता था अब नहीं

रितु आर्या

मेरा जन्म–स्थान ग्राम मनिआगर, धौलादेवी ब्लॉक, अल्मोड़ा जिला है। परिवार में माता–पिता और भाई–बहन हैं। माँ घर का काम करती है और पिताजी कृषि करते हैं। भाई–बहन पढ़ रहे हैं।

हमारे यहाँ गेहूँ, मडुआ, मादिरा, जौ और दालों की खेती होती है। हमारे परिवार के पास गाय, भैंस और बकरियाँ हैं।

मैं सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय अल्मोड़ा में बी.ए. चौथे सेमेस्टर में पढ़ रही हूँ। पाँचवी तक प्राइमरी स्कूल मनिआगर, फिर हाई–स्कूल तक राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मनिआगर और उसके बाद गाँधी इंटर कॉलेज पनुवानौला में पढ़ाई की। मुझे अर्थशास्त्र को छोड़कर अन्य सभी विषय अच्छे लगते हैं। अर्थशास्त्र समझ में तो आता है लेकिन मुझे पसंद नहीं है।

मैं सुबह छः बजे उठती हूँ। सबसे पहले चाय बनाती हूँ। हम लोग सात बजे नाश्ता करते हैं। उसके बाद घर के काम करती हूँ। फिर ग्राम शिक्षण केन्द्र का जो काम मिला है उसे करती हूँ। एक बजे खाना बनाती हूँ और फिर घर के काम करती हूँ। थोड़ा आराम करने के बाद शाम को फिर से चाय बनाती हूँ। शाम को सात से नौ बजे तक पढ़ाई करती हूँ और रात का खाना खाकर दस बजे सो जाती हूँ। मुझे घर के काम करने से खुशी मिलती है और *मैं कोई भी काम मजबूरी में नहीं करती।* मैं टीचर बनना चाहती हूँ और इसके लिये पढ़ाई भी कर रही हूँ। इसमें कोई कठिनाई या बाधा नहीं है।

ग्राम शिक्षण केन्द्र की शिक्षिका के रूप में मेरा चयन अप्रैल 2021 में हुआ। पहले की शिक्षिका नौकरी करने कहीं बाहर गयी है। मेरी शिक्षण में रूचि है और शिक्षण–केन्द्र में शिक्षिका बनने का मन था। यहाँ मुझे *नई जानकारियाँ तथा कुछ नई चीजें सीखने को मिली हैं।*

हमारा ग्राम शिक्षण केन्द्र पंचायत भवन में संचालित होता है। इसमें दो कमरे हैं। एक में बच्चे बैठते हैं। बच्चों के खेलने के लिये एक बड़ा मैदान भी है। मैं उन्हें रोज नए–नए खेल कराती हूँ। उपयुक्त कमरा और आसपास खुली जगह होने से बच्चों का मन लगा रहता है। बच्चों को पहले पढ़ाया जाता है और फिर सब खेलते हैं।

केन्द्र का समय शाम चार से छः बजे (ग्रीष्मकालीन) तक है। इतवार के दिन सुबह दस से दिन के एक बजे तक केन्द्र चलता है। सोमवार को छुट्टी होती है।

ग्राम शिक्षण केन्द्र में बच्चों के पढ़ने के लिये नई–नई किताबें हैं और बहुत सी खेल–सामग्री भी रही है। जैसे फुटबॉल, कैरम, रस्सी कूद आदि। किताबों की कुल संख्या तीन सौ नब्बे है। मैंने कुल तीन किताबें पढ़ी हैं। इनमें 'वंशी और हिरन' अत्यधिक रोचक लगी। इस किताब में पर्यावरण के बारे में जानकारी है। हमारी धरती में ही हमारा जीवन है। पेड़–पौधों से हमें ऑक्सीजन मिलती है। ऑक्सीजन नहीं मिलेगी तो हम मर जायेंगे। केन्द्र में बच्चे सबसे ज्यादा रुचि खेलकूद, खासकर क्रिकेट में लेते हैं।

ग्राम शिक्षण केन्द्र से जुड़ने के बाद मेरे जीवन में परिवर्तन आया है। *पहले जो समय व्यर्थ गुजर जाता था अब उसमें केन्द्र चलाती हूँ* और बच्चों को नई–नई चीजें सिखाती हूँ। मेरे व्यक्तित्व में भी बदलाव आये हैं। मुझे अलग–अलग तरह के नए–नए लोगों से मिलने का मौका मिला। *लोगों के साथ कैसे बोलचाल करनी है* तथा *अपना व्यवहार कैसा रखना है,* यह मैंने शिक्षण केन्द्र से जुड़कर सीखा। *इसके साथ ही अनुशासन में रहना सीखा है।*

ग्राम शिक्षण केन्द्र को ज्यादा उपयोगी और रोचक बनाने के लिये सुझाव होगा कि पढ़ाई के साथ–साथ नए–नए खेल और नृत्य को भी बढ़ावा देना चाहिये। इसके अतिरिक्त चित्रकला और सुलेख की प्रतियोगिताएं आयोजित हों।

किताबें पढ़ने की आदत बनी

गिरीश चन्द्र जोशी

मेरा जन्म अल्मोड़ा जिले के मौनी गाँव में हुआ। परिवार में एक बेटा और एक बेटी है। लड़की ससुराल में है और बेटा–बहू बाहर रोजगार करते हैं। पालतू पशु के नाम पर एक भैंस है।

मेरी शिक्षा बारहवीं तक है। बचपन में पढ़ते वक्त सब विषय अच्छे लगे। गरीबी के कारण आगे नहीं पढ़ पाया।

सुबह चार बजे उठकर रसोई में झाड़ू लगाने से मेरी दिनचर्या शुरू होती है। फिर रसोई की लिपाई, आग जलाकर पानी गरम करना, दो गिलास गर्म पानी पीकर नित्य–कर्म और स्नान, नौले से पानी भरकर लाना और फिर पूजा का काम रहता है। मैं प्रतिदिन सुबह और शाम को ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि आज के दिन हमसे कोई गलत काम न हो। इन सभी कामों में तीन घंटे निकल जाते हैं। सुबह सात से आठ बजे तक घर–आँगन की सफाई करता हूँ। इसके बाद आठ से नौ और नौ से दस बजे तक दो समूहों में बच्चों को पढ़ाता हूँ। फिर नाश्ता करते हैं। उसके बाद मवेशियों की देखरेख का काम होता है। लगभग ग्यारह से दो बजे तक खेतों में जाते हैं। वहाँ से लौटकर दिन का खाना और फिर एक घंटा आराम का समय नियत किया है। इन दिनों ग्राम शिक्षण केन्द्र बन्द है इसलिए शाम को चार से छः बजे तक किताबें लेकर गाँव में बच्चों को पढ़ने के लिए देता हूँ। उनके साथ बैठ कर कुछ शैक्षिक वार्तालाप होता है तथा कुछ शैक्षिक–रचनात्मक कार्य भी करते हैं। मैं बच्चों से कहानी सुनता हूँ और उन्हें सुनाता भी हूँ। अंत में पूछता हूँ, "इस कहानी से तुम्हें क्या सीख मिली?" बातचीत के दौरान ही मैं उन्हें उस दिन स्वयं के किये कामों के बारे में बताते हुए पूछता हूँ कि उन्होंने क्या कार्य किये? नई किताबें पढ़ने को देता हूँ और पढी़ गयी किताबें वापस लेकर आता हूँ। शाम को पुनः नौले से पानी भरकर लाता हूँ। फिर खेतों में जाता हूँ। वापस लौटकर ईश्वर का ध्यान करता हूँ। रात का खाना खाकर दस बजे के करीब सोने जाता हूँ। मुझे बच्चों को पढ़ाना अच्छा लगता है इसलिए जब तक चल–फिर सकूँगा, यह काम करता रहूँगा।

हमारे गाँव मौनी में 2009 में सन्ध्या केन्द्र खुला। सर्वप्रथम मेरी बेटी विद्या ने केन्द्र चलाया। फिर उसकी शादी हो गयी। 2012 में दूसरी शिक्षिका की शादी हो जाने के कारण मेरा चयन हुआ। स्कूल अध्यापक के तौर पर मैं पहले से ही शिक्षण कार्य से जुड़ा था।

हमारा शिक्षण केन्द्र गाँव के जन–मिलन केन्द्र में संचालित होता है। केन्द्र के भीतर और बाहर बच्चों के लिये अच्छी खासी जगह है। केन्द्र का समय गर्मियों में शाम चार से सात बजे तक और सर्दियों में चार बजे से क्रमशः पौने छः, साढ़े पाँच और सवा पाँच बजे तक रहता है। स्कूल की छुट्टियों में केन्द्र सुबह दस से अपरान्ह एक बजे तक खुलता है। हमारे केन्द्र में लगभग तीन सौ किताबें हैं। *मैंने करीब–करीब सारी किताबें पढ़ी हैं।* पहले केन्द्र में दैनिक अखबार 'अमर उजाला' और कुछ पत्रिकाएं भी आती थीं लेकिन वर्तमान में नहीं आ रहीं।

केन्द्र खुलने से पहले बच्चे शाम को खाली घूमते थे। अब वे अपने *समय का सदुपयोग कर पाते हैं। बच्चों में किताबें पढ़ने की आदत बनी है।* वे सबसे ज्यादा रुचि कहानी की किताबें पढ़ने में लेते हैं। डाइन्स ब्लाक, भिन्न (फ्रैक्शन) किट और जोड़ो ज्ञान सामग्री की सहायता से गणित सीखना काफी रोचक अनुभव होता है। बच्चे खेल–खेल में सीखना पसंद करते हैं। मैंने बच्चों के माता–पिता/अभिभावकों से बातचीत की। उनका कहना है कि शिक्षण–केन्द्र का खुलना हमारे लिये स्कूल से भी अच्छा है। बच्चे जो स्कूल में नहीं सीखते, ग्राम शिक्षण केन्द्र में खेल–खेल में सीख लेते हैं। बच्चे केन्द्र में कहानियाँ पढ़ते हैं और घर आकर परिजनों को भी रोचक–ज्ञानवर्धक कहानियाँ सुनाते हैं। किशोरियाँ और महिलाएं आपस में मीटिंग करके अपना संगठन बनाती हैं। वे आपस में मिलकर गाँव की भलाई के अनेक काम करती हैं।

महिलाएं हिम्मत जुटा रही हैं

पूनम रावत

मेरा जन्म ग्राम वीणा मल्ला, पोखरी, जिला चमोली में हुआ। परिवार में मेरे पति, सास, जेठ–जेठानी और दो बच्चे हैं। मेरे पति की गोपेश्वर में सब्जी और दूध–डेरी की दुकान है। जेठजी इंटर कॉलेज निजमुला में बाबू की पोस्ट पर कार्यरत हैं। मैं, सासूजी और जेठानीजी घर का काम करते हैं। मैं खेती का काम भी करती हूँ। पालतू पशुओं में दो गाय और दो बछड़े हैं। दोनों गायें काले रंग की हैं।

मैंने बी.ए. तक शिक्षा प्राप्त की। कक्षा एक से आठ तक वीणा मल्ला में और नवीं से बारहवीं तक राजकीय इंटर कॉलेज देवीखेत में पढ़ा। बी.ए. पोखरी कॉलेज से किया। मुझे हिंदी विषय अच्छा लगता था परन्तु गणित कभी भी अच्छा नहीं लगा।

मैं सुबह पाँच बजे उठती हूँ। हाथ–मुँह धोकर गौशाला जाती हूँ और गोबर साफ करती हूँ। गोबर के हाथ धोकर एक गिलास गुनगुना पानी पीती हूँ। आँगन व कमरों की सफाई करने के बाद चाय पीती हूँ। नाश्ता मेरी जेठानी बनाती है। तब तक मैं बच्चों के साथ ही हाथ–मुँह धोने, बाल बनाने आदि कार्यों में व्यस्त रहती हूँ। नाश्ता करने के बाद खेतों की तरफ चली जाती हूँ। बारह बजे खेतों से वापस आकर हम लोग दिन का भोजन करते हैं। बर्तन धोने के बाद सभी लोग आराम करते हैं। साढ़े तीन बजे उठ कर चाय पीते हैं। जब केन्द्र खुला हो तो मैं ठीक चार बजे केन्द्र में पहुँच जाती हूँ। लॉकडाउन के कारण केन्द्र बन्द था तो मैं शाम को घास लेने या खेतों में जाती थी। केन्द्र से वापस आकर गौशाला से दूध लेकर आती हूँ। रात नौ बजे हम भोजन करते हैं। बच्चों को सुलाकर रात दस बजे तक सो जाती हूँ। सर्दियों में आठ बजे तक सो जाते हैं। वैसे तो सभी काम खुशी–खुशी करती हूँ मगर गौशाला दूर होने के कारण सुबह–सुबह गौशाला जाना मजबूरी ही है।

मैं अपने जीवन में एक छोटी सी कार्यकर्त्ता ही रहना चाहती हूँ। *मुझे सामाजिक कामों को करना अच्छा लगता है। इसके लिए सबसे पहले अपने गाँव के निवासियों को समझना होगा।* कठिनाइयाँ भी हैं क्योंकि कुछ महिलाएं गोष्ठी में शामिल नहीं होती हैं या समय पर नहीं आती हैं। *उन्हें इकठ्ठा करना मेरी जिम्मेदारी है।* मुझे शिक्षिका बनना बहुत अच्छा लगता है। मैं बच्चों को सिखाना चाहती हूँ और कुछ उनसे सीखना चाहती हूँ। मुझे अपना यह काम बहुत पसंद है।

मेरे गाँव में शिक्षण केन्द्र 2011 में शुरू हुआ। सबसे पहले निधि नेगी ने 2014 तक केन्द्र को चलाया। अपनी पढ़ाई और घर का काम होने के कारण उसने बाद में काम छोड़ दिया। वर्तमान में वह जोशीमठ अपनी ससुराल में है। निधि के बाद 2014 से 2016 तक सिद्दी नेगी ने केन्द्र का संचालन किया। उन्होंने बहुत अच्छे से केन्द्र को चलाया और कम्प्यूटर का प्रशिक्षण भी प्राप्त किया। 2016 में हमारी संस्था की मार्गदर्शिका के रूप में उनका चयन हो गया तो सुमन नेगी संचालिका बनी। सुमन ने 2018 तक केन्द्र को चलाया और कम्प्यूटर का प्रशिक्षण भी प्राप्त किया। सिद्दी की शादी के बाद सुमन हमारी संस्था की मार्गदर्शिका बन गयी। 2018 से मैं शिक्षण केन्द्र का संचालन कर रही हूँ।

गाँव में सुमन का मार्गदर्शिका के रूप में चयन होने के बाद संस्था एवं महिलाओं की एक बैठक की गयी। इस बैठक में शिक्षिका के लिये मेरा चुनाव हुआ। जब संस्था के प्रमुख और महिलाओं ने मुझसे पूछा तो मैंने सच्चे मन से हाँ कर दी। हमारा केन्द्र पंचायत भवन में संचालित होता है। केन्द्र के आसपास बच्चों के खेलने के लिए उपयुक्त जगह नहीं है। इस कारण पढ़ाई करने के बाद बच्चे खेलने के लिये सड़क पर आते हैं। सड़क पर वाहनों की आवाजाही बहुत ही सीमित है।

हमारा केन्द्र निर्धारित समय पर ही खुलता है–गर्मियों में साढ़े चार से साढ़े छः या सात बजे तक। जाड़ों में साढ़े चार से साढ़े पाँच बजे तक ही चल पाता है क्योंकि बच्चे स्कूल से देर में घर आते हैं और दिन छोटे होते हैं। सर्दियों में छुट्टी के दिन साढ़े तीन से साढ़े पाँच बजे तक चलता है।

हमारे केन्द्र में लगभग छः सौ किताबें हैं। छोटे बच्चों, बड़े बच्चों, किशोरियों, महिलाओं के लिये अलग–अलग तरह की किताबें हैं। महिलाओं द्वारा 'नंदा' पत्रिका और घर–परिवार से सम्बंधित किताबें सबसे अधिक पढ़ी जाती हैं। बच्चों द्वारा कहानी तथा सामान्य ज्ञान से सम्बन्धित किताबें ज्यादा पढ़ी जाती हैं। ज्यादा पढ़ी जाने वाली कुछ किताबें हैं–सुन्दर गीत सुनूँ मैं, हठी की हिचकी, मिमि और भैंसा, गुन–गुन करती मधुमक्खी, बाल कविताएं, कजरी गाय आदि। मैंने केन्द्र से लगभग पचास किताबें पढ़ी हैं। इनमें ज्यादातर पुस्तकें कहानी की हैं। जापान की लोककथाएँ और बच्चों की किताबें भी पढ़ी हैं। किशोरियों के लिये महान पुरुषों की जीवनी, सामान्य–ज्ञान की किताबें और पत्रिकाएं उपयोगी लगती है। हमारे केन्द्र में पहले 'राष्ट्रीय सहारा' अखबार आता था, वर्तमान में अमर उजाला और दैनिक जागरण आते हैं। नंदा पत्रिका और सामान्य ज्ञान की किताबें पहले भी आती थीं और वर्तमान में भी आती हैं।

केन्द्र में पाँच से दस साल की उम्र के बच्चों की रुचि भावगीत, हाव–भाव वाली कविताओं तथा कुछ खास खेलों जैसे–गिनती वाला, मूर्ति वाला, पानी–किनारा, बर्फ–पानी, जंजीर, घोड़ा–जमान शाही आदि में है। बड़े बच्चे कैरम, फुटबॉल खेलने में ज्यादा रुचि लेते हैं। लडकियाँ ज्यादातर रस्सी–कूद खेलना पसंद करती हैं।

ग्राम शिक्षण केन्द्र खुलने से बच्चों में बहुत परिवर्तन आया है। पहले बच्चे इधर–उधर घूमते, आपस में लड़ाई–झगड़ा तथा घरवालों को परेशान करते थे। वे किसी का कहना नहीं मानते थे। *केन्द्र खुलने से सभी बच्चे व्यवस्थित तरीके से बैठकर पढ़ाई करते हैं।* विभिन्न प्रकार की खेल सामग्री से खेलते हैं। सभी बच्चों में सुधार हुआ है। बच्चों की दिनचर्या भी बदल गयी है।

किशोरियों में भी परिवर्तन हुआ है। उन्हें कहानी की किताबों से बहुत लाभ हुआ और सीखने को मिला। किशोरी–गोष्ठी में भी शारीरिक–मानसिक बदलावों की जानकारी दी जाती है।

महिलाओं में भी बहुत बदलाव आया है। पहले उनकी हर महीने नियत तिथि पर बैठक नहीं होती थी। इसके अलावा कुछ महिलाएं गोष्ठी में आतीं लेकिन कुछ नहीं आती थीं। जो महिलाएं गोष्ठी के लिए आतीं, वे आपस में बातें और शोरगुल करतीं। जब से शिक्षण केन्द्र खुला तब से शिक्षिका के माध्यम से हर महीने नियत तिथि को महिलाओं की बैठक होती है। बैठक की शुरुआत चेतना–गीत गाकर करते हैं। *महिलाएं शांतिपूर्वक बैठकर बातें सुनती हैं और अंतिम निर्णय को मानती हैं।* इसके अलावा पहले वे घर पर ही रहती थीं और बाहर जाने में हिचकिचाती थीं लेकिन केन्द्र खुलने के बाद सम्मेलनों में आने लगी हैं और अपनी प्रतिभा दिखाती हैं। अब *गाँव की महिलाएं दूसरे गाँवों की महिलाओं को देखकर हिम्मत जुटा रही हैं* और बहुत सक्रियता से काम कर रही हैं। वे उत्तराखण्ड महिला परिषद् की बैठकों में भाग लेने अल्मोड़ा जाती हैं। वहाँ पर कुमाऊँ और गढ़वाल के अन्य महिला संगठनों से चर्चा करती हैं, सीखती हैं। इस प्रकार सभी महिलाओं में बदलाव हो रहा है।

ग्रामवासियों से सीखा है

विनोद कुमार

मेरा जन्म खोला ग्राम, जिला अल्मोड़ा में हुआ। हमारा संयुक्त परिवार है–माता–पिता, भाई, उनके बच्चे और मेरा परिवार सभी साथ रहते हैं। पिताजी वन विभाग से सेवानिवृत्त हुए हैं। माता घर संभालती हैं। बड़ा भाई दिल्ली में नौकरी करता है। छोटा भाई धौलछीना में प्राइवेट स्कूल में अध्यापक है। मेरे दो बच्चे हैं। बेटी पहली कक्षा में पढ़ती है जबकि बेटा डेढ़ साल का है। पत्नी आंगनबाड़ी में काम करती है।

परिवार के सभी सदस्य थोड़ा–थोड़ा खेती का काम भी करते हैं। यूँ तो हमारे पास खेती की जमीन कम है और जो है उसे भी जंगली जानवरों के प्रभाव के कारण छोड़ दिया है लेकिन गाँव में सब्जी का उत्पादन अच्छा होता है। अब हम घर के आसपास के खेतों में ही सब्जी–उत्पादन करते हैं। घर में एक भैंस, एक गाय, एक बैल और दो बकरियाँ हैं। पहले गाँवों में पशु ज्यादा संख्या में पाले जाते थे, अब ऐसा नहीं है। पशुओं की देखरेख माँ और भाभी मिलकर करती हैं।

मेरी प्राथमिक शिक्षा प्राइमरी पाठशाला खोला में और छठी कक्षा से इंटर तक की शिक्षा गांधी इंटर कॉलेज पनुवानौला में हुई। बी.ए. और एम.ए. सोबन सिंह जीना परिसर अल्मोड़ा से किया। मुझे हिंदी, अंग्रेजी और सामाजिक–विषय अच्छे लगते थे लेकिन बीजगणित कभी समझ में नहीं आया।

अगर दिनचर्या की बात करूं तो मैं सुबह साढ़े पाँच बजे उठता हूँ। नित्य–कर्म के बाद आँगन और कमरे में झाड़ू–पोछा करके एक घंटा व्यायाम करता हूँ। इसके बाद स्नान करके नाश्ता करता हूँ। प्रातः आठ बजे अपने काम पर चला जाता हूँ। कभी ग्राम शिक्षण केन्द्रों के मार्गदर्शन के सिलसिले में गाँवों के भ्रमण पर तो कभी अपनी खेतीबाड़ी के काम पर निकलता हूँ। वापस लौटने के बाद घर के कार्यों जैसे पानी भरना, पौधों में पानी डालना, सब्जी काटना इत्यादि में हाथ बटाँता हूँ। फुर्सत मिलने पर बच्चों के साथ क्रिकेट, वॉलीबॉल, कैरम आदि खेलता हूँ। शाम को पूजा–पाठ के बाद आठ से नौ बजे तक टेलीविजन पर समाचार देखता हूँ। साढ़े नौ बजे खाना खाना खाने के बाद अखबार, किताबें, पत्रिकाएं आदि पढ़ कर रात ग्यारह बजे के करीब सोने जाता हूँ।

मुझे बच्चों को पढ़ाना अच्छा लगता है। मेरा सपना जीवन में अध्यापक बनने का था लेकिन सही समय पर उचित मार्गदर्शन न मिलने के कारण यह स्वप्न साकार न हो सका।

शिक्षण केन्द्रों में बच्चों के साथ बातचीत और पढ़ने–पढ़ाने का काम मुझे अच्छा लगता है। मेरे सामने कठिनाइयाँ तो नहीं हैं लेकिन परिवार में बच्चों की जिम्मेदारी है। इसे निभाने का प्रयास कर रहे हैं।

ग्राम शिक्षण केन्द्रों में आने वाले बच्चों की भाषा को सुधारने के लिये शिक्षिकाओं के साथ मिलकर सभी आयामों जैसे बोलना, सुनना, लिखना और पढ़ना आदि पर काम किया। किताबों, पत्रिकाओं, समाचार–पत्रों से बोलकर लिखना, कठिन शब्दों का सही उच्चारण व लेखन, अशुद्ध शब्दों को बोर्ड पर शुद्ध लिखकर बताना आदि क्रियाएं हम लगातार केन्द्रों में करते हैं।

शिक्षण केन्द्रों की गतिविधियों में किताबों का पठन–पठान और लेन–देन एक मुख्य गतिविधि है। केन्द्र में अलग–अलग आयु के बच्चों के लिये किताबें हैं। बच्चे अपनी रूचि के अनुसार किताबें घर ले जाते हैं और पढ़कर वापस कर देते हैं। वे अक्सर पढ़ी हुई किताब के बारे में शिक्षिका व संगी–साथियों के साथ चर्चा करते हैं। इस गतिविधि से बच्चों को नई–नई जानकारियाँ मिलने के साथ ही किताबें पढ़ने की रूचि बढ़ी है और पढ़ने की आदत हो रही है।

खेल–कूद भी ग्राम शिक्षण केन्द्र की बहुत महत्वपूर्ण गतिविधि है। इससे बच्चों का शारीरिक और मानसिक विकास होता है। निरीक्षण के दौरान मैंने पाया है कि बच्चे खेलों में सबसे ज्यादा रुचि लेते हैं और नए–नए खेल कराने से केन्द्र रूचिपूर्ण बनता है।

हमारा 'पर्यावरण चेतना मंच' हर वर्ष गाँवों में बाल–मेलों का आयोजन करता है। बच्चे इसके लिये उत्साहपूर्वक तैयारी करते हैं। आयोजन की तारीख के बारे में अक्सर पूछते रहते हैं। मेले में शिक्षण–केन्द्र के अलावा आसपास के सात–आठ गाँवों के बच्चे, किशोरियाँ, महिलाएं और कुछ पुरुष भी शामिल होते हैं। क्विज, कहानी, नाटक, लोक–गीत, लोक–नृत्यों से युक्त सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेलकूद इत्यादि गतिविधियों में बच्चे और किशोरियाँ अपनी–अपनी रुचि के अनुसार भाग लेते हैं। यह एक खुले मंच जैसा है जिसमें बच्चे बिना झिझक के अपने विचार और कौशल प्रस्तुत कर पाते हैं। इससे उनका उत्साह और आत्म–विश्वास बढ़ता है।

ग्राम शिक्षण केन्द्रों से गाँव की किशोरियाँ और महिलाएं भी जुड़ी हैं। गाँवों में महिला और किशोरी संगठन बने हैं। माह में एक–एक दिन इनकी गोष्ठी आयोजित की जाती है। ग्राम शिक्षण केन्द्र का संचालन, स्वास्थ्य एवं पोषण, ग्राम–स्वच्छता, खेती में जंगली जानवरों के कारण आ रही समस्याएं और संभावित समाधान, सरकार के द्वारा शुरू की गयी कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी देना इत्यादि चर्चा के विषय रहते हैं। गाँव में जंगली

जानवरों से खेती को बचाने के लिये महिला संगठनों ने हल निकाला है। बारी–बारी से दो–दो महिलाएं रोज खेतों का पहरा करती हैं। इससे फसल बच पाती है। महिलाएं पहले सामूहिक गोष्ठियों में बहुत कम या बिल्कुल नहीं बोलती थीं लेकिन अब गोष्ठियों–सम्मेलनों में बिना डर या संकोच के अपनी बातें कहती हैं। कुछ गाँवों में संगठनों की सदस्याएँ ग्राम–सभा की बैठकों में भी भाग ले रही हैं।

मनिआगर के जालबगाड़ी तोक में संस्था के द्वारा एक सिलाई–बुनाई केन्द्र खोला गया है। इसमें लगभग बीस गाँवों की किशोरियों और महिलाओं ने सिलाई–बुनाई सीख ली है। व्यावसायिक कौशल और आत्म–विश्वास तो बढ़ा ही है, अनेक किशोरियाँ और महिलाएं सिलाई–बुनाई को व्यवसाय के तौर पर सफलतापूर्वक चला रही हैं। कुछ ने अपनी टेलरिंग शॉप खोल ली है।

मैं पिछले आठ–नौ वर्षों से 'पर्यावरण चेतना मंच मैचून' में मार्गदर्शक के तौर पर ग्राम शिक्षण केन्द्र के बच्चों, महिला और किशोरी संगठनों के साथ काम कर रहा हूँ। यद्यपि मैंने पहले अन्य संस्थाओं के साथ भी काम किया था लेकिन मार्गदर्शक के रूप में ग्रामीण बच्चों, महिलाओं और किशोरियों से बहुत कुछ सीखा है। मैं शिक्षण कार्य से पहले से जुड़ा था, थोड़ा अनुभव भी था, लेकिन महिलाओं और किशोरियों के साथ गोष्ठी करने में मुझे परेशानी होती थी। मैंने उत्तराखण्ड सेवा निधि के कार्यकर्त्ताओं के साथ मिलकर गाँवों में गोष्ठियाँ संचालित की और उनसे सीखा कि इस कार्य को कैसे करना है। क्या–क्या मुद्दे हो सकते हैं। कहते हैं मनुष्य जीवनभर सीखता रहता है। मैं भी कोशिश करता हूँ कि बच्चों के साथ कुछ नया काम हो, कुछ नया सीखें। अब महिला व किशोरी संगठनों की गोष्ठी करने में कठिनाई नहीं होती। मैं और टीम के अन्य साथी अपनी योग्यता और क्षमता के अनुसार काम करते रहते हैं।

संचालिका को समय–समय पर प्रशिक्षण देने, उचित मार्गदर्शन एवं बच्चों के साथ नई–नई गतिविधियाँ और नियमित अंतराल पर महिला/किशोरी गोष्ठियाँ करने से शिक्षण केन्द्र गाँव के लिये शिक्षा का एक अच्छा माध्यम बन जाता है। इससे बच्चों, किशोरियों और महिलाओं के व्यक्तित्व का विकास हुआ है और भविष्य में भी होगा, यह मेरा विश्वास है।

सामाजिक कार्य से पहचान बनी

उर्मिला देवी

मेरा जन्म ग्राम कुजौं मैकोट, जिला चमोली में हुआ। परिवार में ग्यारह सदस्य हैं। सास–ससुर बूढ़े हैं और घर पर ही रहते हैं। जेठजी घर में खेती और पशुपालन करते हैं। जेठानी घर का काम करती हैं और जंगल जाती हैं। उनका बेटा महाराष्ट्र में नौकरी करता है। बेटियाँ दसवीं और बारहवीं में पढ़ रही हैं। मेरे पति हरिद्वार में नौकरी करते हैं। मैं सुबह घर के काम करती हूँ और शाम को शिक्षण केन्द्र का संचालन करती हूँ। मेरे बेटे अभी छोटे हैं। हमारे पास दो भैंस, चार गाय (तीन छोटी और एक बड़ी), दो बैल और दो बछिया हैं।

मैंने बी.ए. द्वितीय वर्ष तक शिक्षा ग्रहण की है। कक्षा एक से पाँच तक की शिक्षा कुजौं मैकोट में ली। कक्षा छः से आठ जूनियर हाईस्कूल डुंगरी मैकोट और फिर राजकीय इंटर कॉलेज माणा–घिंघराण में पढ़ा। उसके बाद बी.ए. प्रथम और द्वितीय साल की प्राइवेट परीक्षा दी लेकिन पढ़ाई पूरी नहीं की। मुझे सिलाई सीखने का बहुत शौक था। मैंने आई. टी.आई. का फॉर्म भरा और दो महीने तक कोर्स ज्वाइन किया, तभी मेरी शादी हो गयी। मुझे गणित विषय बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता था। हिंदी और पोलिटिकल साइंस विषय अच्छे लगते थे। शादी के बाद घर पर सिलाई का काम नहीं किया और सामाजिक काम में जुट गयी।

मेरी दिनचर्या सुबह साढ़े पाँच बजे उठने के साथ ही शुरू हो जाती है। हाथ–मुँह धोकर गौशाला जाना पहला काम है। गौशाला से आकर चाय पीना, साढ़े छः बजे जंगल जाना, जंगल से दस बजे तक वापस आकर नहाना और बच्चों को नहलाना, कपड़े धोना आदि कार्य करती हूँ। कभी–कभी खाना बनाती हूँ। खाना खाने के बाद डेढ़ से तीन बजे तक आराम करती हूँ। उसके बाद पौने चार बजे तक गौशाला से गोबर निकाल कर पशुओं को चारा दे देती हूँ। उसके बाद ग्राम शिक्षण केन्द्र को प्रस्थान करती हूँ। *मैं घर के सारे काम खुशी–खुशी करती हूँ।* किसी काम में मजबूरी महसूस नहीं होती। *मैं जीवन में सामाजिक कार्य करके अपनी पहचान बनाना चाहती हूँ।*

हमारे गांव में ग्राम शिक्षण केन्द्र 2014 में शुरू हुआ। मुझसे पहले इसे दो अन्य शिक्षिकाओं ने संचालित किया। बबीता ने मार्च 2016 तक केन्द्र चलाया। फिर शादी होने के कारण उसे छोड़ना पड़ा। दूसरी शिक्षिका नेहा ने अप्रैल से जून 2016 तक केन्द्र का

संचालन किया लेकिन बारहवीं की पढ़ाई होने के कारण उसे काम छोड़ना पड़ा। वह इस समय बी.ए. फाइनल कर रही है।

संचालिका के रूप में मेरा चयन जुलाई 2016 में हुआ। दिसम्बर 2015 में शादी के बाद जब मैं गाँव में आई तो देखा कि बहुत से छोटे–छोटे बच्चे पंचायत–भवन में एकत्र होकर अनेक प्रकार की गतिविधियाँ कर रहे थे। मैंने सोचा, "यहाँ ऐसा क्या है?" घर के लोगों से पूछा तो उन्होंने बताया कि वहाँ एक लाइब्रेरी है। इसमें प्रार्थना, भावगीत, पेंटिंग आदि काम एक शिक्षिका कराती है। अगले दिन मैं वहाँ गयी तो संयोग से शिक्षिका पहले से परिचित निकली। इंटर कॉलेज में वह मुझसे एक साल जूनियर थी। उसने बताया कि यह ग्राम शिक्षण केन्द्र है। यहाँ बच्चे पढ़ते और खेलते हैं साथ में किशोरियाँ तथा महिलाएं भी जुड़ी हैं। जब उसने केंद्र के बारे में बातें बतायीं तो मैंने कहा कि मैं भी यह काम करना चाहती हूँ। उसने कहा, "हाँ–हाँ, जरूर करो। वैसे भी मेरी शादी होने वाली है।'' मैंने अपने परिवार में बात किये बगैर ही संचालिका से कह दिया कि केन्द्र चलाना चाहती हूँ। उससे यह भी कहा कि वह इस बारे में गाँव में अन्य लोगों से बात करे। बाद में जब यह बात फैली तो छोटा सा विवाद हो गया। कुछ लोगों का मानना था कि नयी–नयी आई हुई बहू केन्द्र नहीं चला सकेगी। जब मैंने पूछा कि क्यों नहीं केन्द्र चला सकती तो यह मुद्दा हो गया कि गाँव में नई आयी है। जब गाँव को समझे तब ही केन्द्र चलाये। दोनों पक्षों में विवाद के कारण तय हुआ कि पर्ची निकाली जाए। पर्ची में दूसरी लड़की का नाम आया। वह संचालिका बन गयी। उसने बारहवीं के पेपर दिए थे लेकिन बाद में वह पढ़ने के लिये गाँव से बाहर चली गयी। तब गाँव में बैठक हुई और सभी महिलाओं ने कहा कि अब मैं केन्द्र को चला सकती हूँ। इस तरह जुलाई 2015 से केन्द्र का संचालन आरम्भ किया।

पंचायत भवन में संचालित हो रहे हमारे केन्द्र के दूसरे कमरे में संस्था द्वारा एक कम्प्यूटर केन्द्र भी चलता है। बच्चों के खेलने की जगह कम है। हमारा केन्द्र मंगलवार से रविवार तक, सप्ताह में छः दिन चलता है। सोमवार को अवकाश रहता है। अप्रैल से अक्टूबर तक साढ़े तीन से सवा छः बजे तक तथा नवम्बर से मार्च माह में साढ़े चार से पौने छः बजे तक खुला रहता है। जाड़ों के मौसम में दूर से बच्चे कम आते हैं। केन्द्र में आंगनवाड़ी के बच्चे भी काफी संख्या में आते हैं।

मेरे केन्द्र में पाँच सौ पैसठ किताबों के साथ जोड़ो ज्ञान किट, ब्लैक बोर्ड, पेंटिंग का सामान, बैट–बॉल, बैडमिंटन, रस्सी–कूद, अलमारी, ग्लोब, घड़ी, वजन मापने की मशीन इत्यादि सामग्री रखी है। एक दैनिक अखबार भी आता है। किताबों में सबसे ज्यादा छोटे

बच्चों के लिये कहानियों की किताबें हैं। मैंने शिक्षण केन्द्र में पच्चीस किताबें पढ़ी हैं। बच्चे सबसे ज्यादा रुचि पेंटिंग, अखबार से तरह तरह की चीजें बनाने, गणित में ब्लैक बोर्ड पर जोड़–घटाना, भावगीत और बालमेले की तैयारी में लेते हैं।

ग्राम शिक्षण केन्द्र खुलने से किशोरियों और महिलाओं में बदलाव आया है। किशोरियाँ बैठक करती हैं, अपनी बातें कह पाती हैं, *अपने से बड़ों से भी बात कर पा रही हैं।* कुछ किशोरियों को अल्मोड़ा जाने का मौका भी मिला। महिलाएं पहले अपने ही कामों में लगी रहती थीं। केन्द्र खुलने के बाद बैठक करना, चेतना गीत गाना, सम्मेलनों में जाना और अपनी बातें कहना, अपने आप अल्मोड़ा आना–जाना, अपने समय का सदुपयोग करना, नई–नई जानकारियाँ प्राप्त करना जैसे अनेक कार्यों में व्यस्त रहती हैं।

ग्राम शिक्षण केन्द्र से जुड़ने के बाद *मेरी दिनचर्या में परिवर्तन हुआ* और कौशल–विकास भी हुआ। पहले मैं घर पर ही काम करती थी लेकिन रोज दो–तीन घंटे केन्द्र में जाने से मुझे बोलने का मौका मिला। दूसरों के साथ बातचीत करना, विकास के मुद्दों पर अपने विचार प्रकट करना, समय से अपने कामों को करना आदि आदतें सीखीं। सबसे ज्यादा आनंद बच्चों के साथ विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ करने में आता है।

ग्राम शिक्षण केन्द्र में सभी की सहभागिता होनी चाहिये। समय के अनुसार काम करना चाहिये। बच्चों के साथ मिलजुल कर रहना, समय–समय पर भ्रमण करना और नई–नई चीजों की जानकारी देना, ये सभी गतिविधियाँ केन्द्र को आगे बढ़ाने में सहायक हैं।

समय की समझ

पुष्पा रौतेला

महिला संगठन गोगिना धारी की गोष्ठी हर महीने की दस तारीख को होती है। गोष्ठी में महिलाएं अपनी–अपनी बातें रखती हैं। पहले मुझे गोष्ठी कराने में बहुत परेशानियाँ हुई। सबसे बड़ी मुश्किल यह थी महिलाएं निर्धारित समय पर नहीं आती थीं और उनके आने का समय अलग–अलग रहता था। गोष्ठी का समय एक बजे का तय होता था लेकिन अनेक महिलाएं तीन बजे तक पहुँचतीं। गोष्ठी में आने के लिए भी घर–घर बुलाने जाना पड़ता था। फिर एक गोष्ठी में ही तय हुआ कि जो महिलाएं समय से नहीं पहुँचेंगी उन्हें दस रुपये का जुर्माना देना होगा। साथ ही जो महिलाएं गोष्ठी में बिना किसी कारण, यूँ ही नहीं आयेंगी उन्हें भी दस रुपये का जुर्माना देना होगा। जब अगले महीने गोष्ठी हुई तो देरी से पहुंचने वाली महिलाओं को दस–दस रुपये जुर्माना देना पड़ा। तब से सभी महिलाएं ठीक एक बजे गोष्ठी में पहुँच जाती हैं। महीने की आठ–नौ तारीख से ही महिलाएं एक–दूसरे से कहने लग जाती हैंः ''दस तारीख आने वाली है, भूलना मत''। गोष्ठी में भी सभी लोग ठीक वक्त पर पहुँच जाते हैं जिससे किसी को परेशानी नहीं होती। *सभी एक समय में आते तथा एक ही समय में जाते हैं।*

महिलाएं ग्राम शिक्षण केन्द्र में बच्चों की कॉपियों को देखती हैं। पूछती हैं कि बच्चों ने केन्द्र में क्या–क्या सीखा। जब मेले–शादी और अन्य कोई सार्वजनिक कार्य होते हैं तो महिलाएं रास्तों के आसपास झाड़ियाँ काटती हैं और साफ–सफाई करती हैं।

साल के आखिरी दिन, 31 दिसम्बर, को महिलाएं पैसे जमा करके 'थर्टीफस्ट' मनाती हैं। इसमें महिलाएं व बच्चे भाामिल होकर गाने गाते हैं और डांस करते हैं। इस आयोजन में पुरूषों को नहीं आने देते हैं। जब से महिला संगठन बना तब से ही यह आयोजन हो रहा है।

जंगल से कच्ची लकड़ियाँ नहीं काटते हैं। महीने में पचास–पचास रुपया कोष में जमा करते हैं। पहले 2012 में बीस–बीस रुपया जमा किया था। सार्वजनिक काम के लिए बर्तन रखे हैं। महिलाओं ने जो पैसे कोष में जमा किये थे वे सब सदस्यों में बराबर बाँट दिये क्योंकि प्रति माह बीस रुपया जमा कर कोष में बहुत धन जमा हो गया था। वे पैसे महिलाओं के खाने–पीने या घर की आवश्यक चीजें खरीदने के काम आये। फिर दूसरा खाता पचास–पचास रुपये के साथ खोला। इसमें महिलाएं हर माह बचत करती हैं। महिलाएं जुड़ी रहती हैं और संगठन की एकता भी बनी हुई है।

जब कोविड–19 लॉकडाउन में स्कूल और ग्राम शिक्षण केन्द्र बन्द हुए तो बच्चों व महिलाओं को बहुत परेशानियाँ हुई। बच्चे न सिर्फ पढ़ना–लिखना भूल गये बल्कि दूसरों के खेतों में जाकर फसलों को नुकसान पहुँचाते, आपस में लड़ाई–झगड़ा कर रहे थे और घर में रहते तो दिन भर अपनी माताओं को परेशान करते। सभी महिलाओं ने संगठन में बात करके केन्द्र को खोलने की माँग की। महिलाओं ने कहा कि बच्चे व शिक्षिका एक ही गाँव में रहते हैं और गाँव की स्थिति ठीक है। इस कारण ग्राम शिक्षण केन्द्र खोल सकते हैं। सभी की सहमति से शिक्षण केन्द्र खुल गया है। अब महिलाएं बच्चों से खुश हैं। कभी–कभी केन्द्र में बच्चों का काम देखने भी जाती है। बच्चे भी केन्द्र में विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ करते हैं और व्यस्त रहते हैं।

कोरोना

कोरोना काल बहुत खराब
पूरी दुनिया हो गयी बर्बाद॥

कोविड–19 का है हाथ
कौन देगा, किस का साथ॥

लाखों लोगों की चली गयी जान
फिर भी जनता नहीं सावधान॥

लोगों ने अपनों को खोया
पूरा देश दुःख से है रोया॥

ये कैसी महामारी आयी
घर–घर बेरोजगारी छायी॥

अब महिलाएं बेझिझक बोलती हैं

पूर्णिमा मिश्रा

मेरा जन्म ग्राम भालूगाड़ा में हुआ। परिवार में पाँच सदस्य हैं–मैं, मेरे दो भाई और मम्मी–पापा। पापा प्राइवेट टीचर हैं। मम्मी घर का काम करती हैं। मैं भी उनके साथ काम करती हूँ। भाई पढ़ाई कर रहें हैं। वे कभी–कभी बकरियाँ चराना और खेतों का काम भी करते हैं।

हम सब मिलकर खेती करते हैं। हमारे खेत दूसरे गाँवों में भी हैं। हमारे पालतू–पशुओं में एक भैंस और एक बैल है। दूसरा बैल ताऊजी लोगों ने पाला है। इस के अलावा दो बकरियाँ भी हैं। मुझे अपने पशुओं से बड़ा लगाव है।

मेरी पढ़ाई अभी पूरी नहीं हुई है। मैं एम.ए. तीसरे सेमेस्टर में पढ़ रही हूँ। मैंने कक्षा एक से पाँच तक अपने गाँव के प्राइमरी स्कूल में पढ़ा। फिर कक्षा छः से बारह तक राजकीय इंटर कॉलेज नायल में पढ़ा। गणाई गंगोली से बी.ए. करने के बाद राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बेरीनाग में पढ़ रही हूँ। मेरा विषय अर्थशास्त्र है। प्राइमरी में मुझे सब विषय अच्छे लगे। छठी कक्षा से हिन्दी विषय अच्छा लगा तो इंटरमीडिएट में इतिहास तथा बी.ए. में राजनीति–विज्ञान अच्छे लगने लगे। कहानी पढ़ना मुझे बचपन से ही पसंद है। तब भी पढ़ती थी और आज भी पढ़ती हूँ। जो विषय मुझे पढ़ने में कठिन लगते थे वे अच्छे नहीं लगते थे। वैसे अंग्रेजी को छोड़कर बाकी विषय थोड़ा–थोड़ा समझ में आ जाते थे। अब थोड़ी अंग्रेजी भी आने लगी है।

मैं सुबह पाँच–साढ़े पाँच बजे उठकर सबसे पहले चाय बनाती हूँ। हमारी भैंस आजकल दूध नहीं देती है इसलिए छः बजे गाँव में दूध लेने जाना होता है। घर आकर साढ़े छः बजे पानी भरने जाती हूँ तो वापस आने तक सात बजे जाते हैं। फिर मैं घर–आँगन में झाड़ू लगाती हूँ और बर्तन धोती हूँ। सुबह आठ बजे हम सब नाश्ता करते हैं और उसके बाद अपने–अपने काम पर चले जाते हैं। आजकल कोविड लॉकडाउन के कारण कॉलेज बन्द है। मैं भी मम्मी के साथ खेतों में चली जाती हूँ। वहाँ से हम ग्यारह बजे लौटते हैं और मैं चाय बनाती हूँ। मवेशियों को धूप लग जाती है इसलिए उन्हें गौशाला में बाँधकर पानी और चारा देती हूँ। तब तक दिन का खाना तैयार हो चुका होता है। भोजन के बाद डेढ़ बजे से लगभग एक घंटा लिखना–पढ़ना होता है और फिर आराम। उठने तक शाम के चार बज जाते हैं। चाय पीकर हम खेत में चले जाते हैं। आजकल दिन बड़े हैं। इस कारण सवा छः बजे तक लौटते हैं। सब्जी काटने और आटा गूंथने के उपरांत पूजा करती हूँ। त्यौहार में

मम्मी–पापा भी पूजा करते हैं लेकिन अन्य दिनों मैं ही करती हूँ। खाना खाने के बाद थोड़ी देर टीवी सीरियल देखकर सोने चली जाती हूँ। गोबर निकालना मजबूरी हो जाती है लेकिन बाकी काम मैं अपनी मर्जी से करती हूँ।

मेरा सपना है कि 'कुछ' बन सकूँ और अपने परिवार और गाँव का नाम रोशन करूँ। जीवन में अपने पैरों पर खड़ा होना है। अभी तो सब ठीक ही चल रहा है लेकिन घर में हम तीन पढ़ने वाले बच्चे हैं। पापा की प्राइवेट नौकरी होने के कारण कभी–कभी घर का खर्च मुश्किल से चलता है। हमें आगे पढ़ने में मुश्किल हो सकती है। पैसों की समस्या ही घर और पढ़ाई की सबसे बड़ी बाधा है।

पहले हमारे गाँव में बालवाड़ी चलती थी। मुझे याद है कि मैं वहाँ पढ़ने जाती थी। बालवाड़ी में जाना, किताबें पढ़ना, प्रार्थना करना अच्छा लगता था। कोई दीदी बालवाड़ी चलाती थी लेकिन तब मेरी उम्र कम होने के कारण मुझे उनकी याद नहीं है। थोड़ी बड़ी हुई तो पता लगा कि बालवाड़ी के बदले ग्राम शिक्षण केन्द्र चल रहे हैं। इसे कमला दीदी चलाती थीं और मैं वहाँ जाती थी। कमला दीदी की शादी होने के बाद रेखा ने केन्द्र चलाया। तब मैं किशोरी गोष्ठियों–सम्मेलनों में भी शामिल होने लगी थी। वहाँ मुझे अच्छा लगता था। पहले की शिक्षिकाएं अब अपने ससुरालों में बच्चों के साथ खुश हैं।

मेरा शिक्षण–केन्द्र से जुड़ाव तो कमला दीदी के समय से था लेकिन संचालिका के तौर पर मेरा चयन दो साल पहले हुआ। रेखा दीदी की शादी तय हुई तो उसने मुझ से शिक्षण केन्द्र का संचालन करने को कहा। मैंने खुशी–खुशी हाँ बोल दिया, क्योंकि मैं खुद यही चाहती थी। फिर उसने संस्था के प्रमुख से बात की और मेरा चयन शिक्षिका के रूप में हो गया।

हमारे गाँव में पंचायत भवन या कोई अन्य सार्वजानिक भवन न होने के कारण केन्द्र किसी घर के कमरे में ही चलता है। कमरा ठीक ही है और सामने खेलने के लिए एक आँगन भी है। यदि कभी ज्यादा बच्चे आ जाते हैं तो कमरा छोटा होने से बैठने में थोड़ी मुश्किल होती है।

केन्द्र खुलने का सही समय चार से छः बजे तक है। सर्दियों के मौसम में दिन छोटे होने के कारण चार से साढ़े पाँच बजे तक ही खोल पाते हैं। छुट्टी के दिन सुबह दस से एक बजे तक खुलता है।

हमारे केन्द्र में तीन सौ पचास पुस्तकें तथा सभी जरूरी सामग्री रखी है। जो सामग्री खत्म हो जाती है या टूट जाती है वह 'सर' (स्थानीय समन्वयक) को कहकर मंगवा ली

जाती है। मैंने केन्द्र में उपलब्ध कहानी की किताबों में से लगभग आधी किताबें पढ़ ली हैं और वे मुझे अच्छी लगी हैं। केन्द्र में सबसे ज्यादा पढ़ी जाने वाली कहानियों की पतली–पतली किताबें हैं। इन्हें छोटे बच्चे आसानी से पढ़ लेते हैं। जीवनी, सामान्य–ज्ञान और किशोरियों और महिलाओं की रूचि की किताबें केन्द्र से लोग पढ़ने के लिए घर ले जाते हैं। केन्द्र में एक दैनिक अखबार भी आता है।

केन्द्र में बच्चों को सबसे ज्यादा आनंद कहानी सुनने–सुनाने में आता है। 'प्यारी बिल्ली' वाला खेल बच्चों को सबसे रुचिकर लगता है क्योंकि उन्हें बिल्ली बनने, उसकी आवाज निकालने और दूसरों को हँसाने का मौका मिलता है। रोजाना होने वाली प्रार्थनाएं और भावगीत भी बच्चों को अच्छे लगते हैं।

शिक्षण केन्द्र खुलने से गाँव में बच्चों में तो परिवर्तन हुआ ही है, किशोरियों और महिलाओं में भी महत्वपूर्ण बदलाव आया है। जहाँ तक मुझे पता है, *मेरे गाँव की महिलाएं समाज में कहीं भी आगे नहीं आती थीं क्योंकि डर उनके सामने आ जाता था।* वे सोचती कि अगर हम किसी बैठक या गोष्ठी में जायेंगे और वहाँ हमसे कोई बोलने को कहेगा तो क्या बोलेंगी। इस कारण वे अक्सर जाती ही नहीं थीं। मैंने घर–घर जाकर महिलाओं से बातचीत की। सब से कहा कि एक बार मीटिंग में चलकर देखो, वहाँ लोग क्या बातें करते हैं। यह भी कहा कि अच्छा न लगे तो अगली बार मत आना। तब कुछ महिलाएं अगल–बगल के गाँवों की गोष्ठियों और सम्मेलनों में जाने को राजी हुईं। उन्हें वहाँ का माहौल अच्छा लगा। अब मेरे गाँव की महिलाएं गोष्ठी–सम्मेलनों में बेझिझक बोलती हैं और किशोरियों को भी भेजती हैं। सभी महिलाएं बच्चों को शिक्षण केन्द्र में भेजती हैं क्योंकि वे जानती हैं कि बच्चा वहाँ जाएगा तो कुछ अच्छा ही सीखेगा। किशोरियों और पढ़ी–लिखी महिलाओं में किताबें पढ़ने की रुचि जग रही है।

मेरी खुद की दिनचर्या पहले अनपढ़ इंसान की तरह थी। केन्द्र खुलने के बाद मैंने महापुरुषों की जीवनी सहित अनेक प्रकार की किताबें पढ़ीं। इन्हें पढ़कर मुझे पता चला कि जिन्दगी में कितने संघर्ष करने पड़ते हैं तब सफलता मिलती है।

शिक्षण केन्द्र को ज्यादा उपयोगी बनाने के लिये लोगों को इसका महत्त्व समझाना होगा। साथ ही, बच्चों को आकर्षित करने के और भी तरीकों के बारे में सोचना होगा। जहाँ बच्चे होंगे वहाँ रोचकता अपने आप आ जायेगी।

बच्चे खेल में रुचि लेते हैं

सन्तोषी चौधरी

मेरा जन्म गाँव बैनोली, कर्णप्रयाग, जिला चमोली में हुआ। परिवार में कुल नौ सदस्य माँ, चार भाई, एक बहन और चाचा–चाची हैं। मेरी माँ स्कूल में खाना बनाती है और उससे घर का खर्च चलता है। चाचाजी गाड़ी चलाते हैं। चाची खेती करती हैं, सब भाई–बहन स्कूल में पढ़ते हैं।

हमारे बारह खेत हैं। मेरी माँ और चाची मिलकर खेती करते हैं। आजकल धान की फसल बोई गयी है। पालतू पशुओं में तीन गाय, एक भैंस और एक बछड़ा हैं। हम उन्हें चराने के लिए घर के आसपास के खेतों में ले जाते हैं।

मैंने अपनी प्राथमिक शिक्षा गाँव के ही सरकारी स्कूल से प्राप्त की। हाईस्कूल और इंटर मैंने राजकीय इंटर कॉलेज नैणी से किया।। अब मैं कर्णप्रयाग से बी.ए. कर रही हूँ। मेरी पसंद के विषय हिंदी, अर्थशास्त्र व राजनीति विज्ञान रहे।

मैं सुबह छः बजे उठती हूँ। चाय बनाती हूँ और चाय पीकर माँ के साथ नाश्ता बनाती हूँ। उसके बाद घर की साफ–सफाई का काम करती हूँ। सुबह नौ बजे नाश्ता करके बर्तन धोते हैं। थोड़ी देर, साढ़े नौ से ग्यारह बजे तक टीवी देखती हूँ। ग्यारह बजे से एक बजे तक मेरी ऑनलाइन पढ़ाई होती है, किसी दिन नहीं होती तो मैं माँ के साथ खाना पकाने में मदद करती हूँ। हम दिन का खाना दो बजे खाते हैं। फिर दो घंटे आराम करने के बाद शाम को चार बजे चाय बनाती हूँ। चाय पीकर शाम पाँच बजे खेत में गुड़ाई करने जाते हैं। शिक्षण केन्द्र बन्द हैं इसलिए आजकल घर का काम कर रहे हैं, नहीं तो केन्द्र में जाते थे। कभी–कभी केन्द्र में बच्चों को किताबें पढ़ने के लिए देती हूँ और स्वयं पढ़ती हूँ, लेकिन आजकल बहुत दिनों से केन्द्र में नहीं गयी। खेत से शाम सात बजे तक घर आते हैं। रात नौ से दस बजे तक पढ़ाई करती हूँ। फिर साढ़े दस बजे खाना खाती हूँ। उसके बाद कॉलेज का काम करती हूँ और बारह बजे तक सोती हूँ। घर का काम करना मुझे अच्छा लगता है इसीलिए सभी काम मैं खुशी–खुशी करती हूँ।

ग्राम शिक्षण केन्द्र सबसे पहले दिव्या दीदी ने संचालित किया। उसके बाद 2018 से मैं शिक्षिका हूँ। मैं पहले भी केन्द्र में जाती थी और वहाँ से कहानी की किताबें पढ़ने के लिए लाती थी। नवम्बर 2018 में दिव्या दीदी की शादी तय हुई तो उन्होंने मुझसे पूछा। दिव्या ने गाँव में सभी लोगों से इस बारे में बात की। मुझे बच्चों को पढ़ाना अच्छा लगता है इसलिये

मैं ही शिक्षण केन्द्र को चलाने लगी। हमारा केन्द्र पंचायत भवन में संचालित होता है। कमरा बहुत बड़ा होने से बच्चों के लिये काफी जगह है। बाहर खेलने–कूदने के लिये भी अच्छी जगह है।

मैं गर्मियों के मौसम में साढ़े तीन बजे शिक्षण केन्द्र में पहुँच जाती हूँ। बच्चे चार बजे आते हैं और छः बजे तक रहते हैं। कभी–कभी वे जल्दी घर चले जाते हैं। जाड़ों के दिनों में केन्द्र तीन से पाँच बजे तक खुलता है। रविवार को मैं सुबह दस बजे से दिन के एक बजे तक केन्द्र चलाती हूँ।

केन्द्र में विभिन्न प्रकार की सामग्री के साथ ही कुल पाँच सौ आठ किताबें हैं। मैंने बहुत सी किताबें पढ़ीं हैं। इनमें मेंढक राजकुमार, कोशी मेरी बेटी बहुत अच्छी लगीं। छोटे बच्चे कहानी की किताबें पढ़ने के लिए घर ले जाते हैं। बड़े बच्चे विज्ञान–डायरी और कभी–कभी पर्यावरण, अंग्रेजी की किताबें ले जाते हैं। बच्चे सबसे ज्यादा रुचि खेलने में लेते हैं जैसे कैरम, बैडमिंटन, शतरंज आदि उनके प्रिय खेल हैं।

ग्राम शिक्षण केन्द्र से जुड़कर मेरे जीवन में बहुत बदलाव आया। पहले खाली समय में इधर–उधर जाती थी। अब बच्चों के साथ विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ करती हूँ। हमें कुछ नई–नई गतिविधियाँ करनी चाहिये। जैसे अलग–अलग जगहों या गाँव की जानकारी देना और नई–नई कहानियाँ सुनाना, इससे केन्द्र और ज्यादा रोचक होता जायेगा।

लॉकडाउन और महामारी के कारण लोगों के मन में भय समाया था। ग्रामवासी एक–दूसरे से कम ही मिलते थे। लोग न शादी में गये और न बाजार ही गये। अगर कभी बाजार से सब्जी खरीदते तो घर लाकर अच्छी तरह से धोते थे। सभी मास्क लगाते थे। हम कभी–कभी केन्द्र की साफ–सफाई करने या बच्चों को किताबें देने जाते थे। संस्था के माध्यम से बच्चों को मास्क बाँटे और महामारी के बारे में जागरूक किया। ग्रामवासियों में सर्दी, बुखार, जुकाम जैसे लक्षण दिखायी तो दिये परन्तु लोग टेस्ट कराने नहीं गये। घर पर ही रह कर दवाई खायी। बाद में सभी लोगों ने टीका लगवाया।

बात करना सीखा

ममता बनौला

मेरा जन्म बानठौक गाँव, धौलादेवी ब्लॉक, जिला अल्मोड़ा में हुआ। परिवार में माता–पिता, भैया और बुआ हैं। भाई स्कूल में पढ़ता है। मेरे पिताजी मजदूरी करते हैं और माँ घर का काम करती है। हम खेती और पशुपालन करते हैं। हमारे पास गाय, बैल और भैंस हैं। मेरी प्राइमरी से इंटर तक की शिक्षा बानठौक गाँव में हुई। संस्कृत, भूगोल, विज्ञान सहित सभी विषयों में रूचि थी।

मेरी दिनचर्या की बात करें तो यही कहूँगी कि सुबह हाथ–मुँह धोकर चाय–नाश्ता तैयार करना, दस बजे गाय–भैंसों को पानी पिलाना और फिर उन्हें बाँधने के बाद खेतों में काम करने जाना, दोपहर खाना पकाने और खाने के बाद दो बजे तक थोड़ा आराम करना और फिर शाम चार बजे चाय बनाना, मेरे काम हैं। शाम साढ़े चार बजे से सात बजे तक शिक्षण केन्द्र में रहती हूँ। घर वापस आकर रात का भोजन करके सो जाती हूँ। जंगल जाना और गोबर निकालने का काम मेरी मजबूरी है।

मेरे गाँव में शिक्षण केन्द्र 2008 में शुरू हुआ। गाँव में सबसे पहले बालवाड़ी और उसके बाद संध्या केन्द्र, ग्राम–पुस्तकालय थे और अब ग्राम शिक्षण केन्द्र खुला है। मुझसे पहले तीन शिक्षिकाओं ने केन्द्र चलाया। मैं मार्च 2020 से केन्द्र का संचालन कर रही हूँ।

हमारा केन्द्र गाँव के पंचायत भवन में चलता है। कमरा अच्छा है और बाहर खेलने के लिये पर्याप्त जगह है। इसका समय गर्मियों में शाम पौने पाँच से सात बजे है। सर्दियों में स्कूल के दिनों में केन्द्र साढ़े चार से साढ़े पाँच बजे तक ही चल पाता है लेकिन छुट्टी के दिन ढ़ाई से पाँच बजे तक खुलता है।

हमारे केन्द्र में कैरम, लूडो, शतरंज, रस्सी–कूद इत्यादि खेल सामग्री रखी है। इसके अलावा गणित सिखाने के लिये जोड़ो स्ट्रॉ, गणित–माला, डाइन्स ब्लॉक आदि हैं। भौगोलिक जानकारी देने के लिये एक ग्लोब भी है। केन्द्र में अलग–अलग विषयों की चार सौ किताबें हैं। मैंने पचास किताबें पढ़ी हैं। इनमें मेरी विज्ञान डायरी, विज्ञान प्रसंग, हमारा शरीर, हमारी धरती हमारा जीवन किताबें अधिक रोचक लगीं।

मेरे केन्द्र में अलग–अलग उम्र के बच्चे आते हैं। मैं उनकी रुचि के अनुसार गतिविधियाँ कराती हूँ। खेल के माध्यम से पढ़ना, अक्षर मिलाकर शब्द बनाना रोचक लगता हैं।

केन्द्र खुलने से पहले बच्चे फालतू इधर–उधर घूमते थे। ग्रामवासियों की चीजों को नुकसान पहुँचाते थे। अब उनका केन्द्र में आने का एक निश्चित समय बन गया है। बच्चों के माता–पिता, अभिभावकों की राय भी ऐसी ही है। बच्चे केन्द्र में गृह–कार्य भी कर लेते हैं। किशोरियाँ भी पहले खाली बैठी रहती थीं लेकिन अब केन्द्र में आकर किताबें पढ़ती हैं और घर भी लेकर जाती हैं। माह में एक बार गोष्ठी करती हैं और अपनी शिक्षा व समस्याओं पर चर्चा करती हैं।

ग्राम शिक्षण केन्द्र से जुड़कर मेरे जीवन में अच्छा परिवर्तन हुआ है। मैंने *बच्चों के साथ खुशी से* तथा गाँव की *महिलाओं और पुरुषों से खुलकर बातचीत करना सीखा है।* इसके अलावा किस समय पर कौन सा काम करना है, यह भी सीखा।

ग्राम शिक्षण केन्द्र को अधिक रोचक बनाने के लिये बच्चों के साथ नई–नई गतिविधियाँ, गाँव के बारे में जानकारी देने के लिये भ्रमण और बच्चों को खुश रखने के प्रयास करना जरूरी है। ताकि उनका शिक्षण केन्द्र से लगाव बना रहे

समाज में उठना–बैठना सीखा

नीरा कंडारी

मेरा जन्म स्थान नामिक, जिला पिथौरागढ़, में है। परिवार में मेरे माता–पिता, दो भाई, भाभी और भतीजा रहते हैं। पिताजी कृषि का कार्य करते हैं। माता जी प्राथमिक विद्यालय नामिक में भोजन–माता का कार्य कर रही है। बड़े भाई होटल में काम करते हैं। छोटा भाई पढ़ाई कर रहा है। मैं घर के काम करने के साथ ही शिक्षण केन्द्र का संचालन करती हूँ।

हम खेतों में गेहूँ, जौ, मडुवा, मक्का, आलू, दालें (राजमा, मसूर, गूरांस, भट्ट, मटर आदि) और सब्जियाँ (पालक, लाई, पत्ता गोभी, फूल गोभी, टमाटर आदि) उगाते हैं। हमारे पालतू जानवरों में दो गाय, उनके बछड़े, दो बैल, बकरियाँ और दो कुत्ते हैं।

मैंने गाँव में ही दसवीं तक पढ़ाई की। आँगनवाड़ी से प्राथमिक विद्यालय में गयी और फिर माध्यमिक विद्यालय में पढ़ा। मुझे विज्ञान और हिन्दी विषय अच्छे लगते थे, अंग्रेजी और गणित में कठिनाई होती थी।

मैं सुबह छः बजे उठती हूँ। हाथ–मुँह धोकर घास काटने जाती हूँ। वापस आकर नाश्ते के बाद खेतों में निराई–गुड़ाई करने जाती हूँ। खाना खाने के बाद सिलाई केन्द्र में जाती हूँ। वहाँ से तीन बजे वापस आकर घर के काम करती हूँ। रात को खाना खाने के बाद टीवी देखती हूँ और फिर सो जाती हूँ। आगे जीवन में पढ़ाई करना चाहती हूँ। मैं सिलाई सीखना चाहती हूँ, जो सीख ही रही हूँ।

ग्राम शिक्षण केन्द्र दिसम्बर 2013 में आरंभ हुआ। इसकी पहली शिक्षिका दुर्गा देवी रही। उन्होंने मई 2014 तक केन्द्र का संचालन किया। तत्पश्चात् एक साल केन्द्र का संचालन नहीं हुआ लेकिन जून 2015 में सुनीता ने पुनः केन्द्र का संचालन शुरू किया। मेरा चयन अप्रैल 2018 में हुआ।

हमारा केन्द्र पंचायत घर में संचालित होता है। वहाँ एक बहुत बड़ा कमरा है। इसके आसपास बच्चों के खेलने के लिये बहुत सी जगह है लेकिन बरसात में छत टपकने के कारण बैठने में कठिनाई होती है। स्कूल के दिनों में केन्द्र जाड़ों में साढ़े तीन से साढ़े पाँच बजे तक तथा गर्मियों में दो से साढ़े चार बजे तक चलता है। छुट्टियों में दस से साढ़े बारह बजे तक खुलता है। केन्द्र में तीन सौ किताबें तथा अन्य शिक्षण और खेल–सामग्री है। मैंने लगभग बीस किताबें पढ़ी हैं। 'नन्दा' पत्रिका भी आती है लेकिन गाँव दूर होने के

कारण अखबार नहीं आता है। बच्चों की ज्यादा रुचि कहानियाँ पढ़ने, चित्रांकन और भावगीत/चेतनागीत में है।

पहले बच्चे खाली समय में इधर–उधर घूमते थे, अब केन्द्र में आते हैं। अच्छी किताबें पढ़ने में रुचि लेते हैं और समाज में उठना–बैठना सीख रहे हैं। मुझे भी अच्छी किताबों तथा बच्चों के शिक्षण के बारे में जानकारी मिली। ग्राम शिक्षण केन्द्र के आसपास फूल के पौधे और पेड़ लगाकर, केन्द्र को नियमित समय पर खोलकर, खेल–कूद की अधिक सामग्री उपलब्ध कराकर और हस्तकला सिखाकर हम इसे ज्यादा रोचक बना सकते हैं।

बच्चे रुचि से केन्द्र में आते हैं

प्रियंका पथनी

मेरा जन्म ग्वाड़ी गाँव, गंगोलीहाट ब्लाक, जिला पिथौरागढ में हुआ। परिवार में माँ–पापा, दो भाई, एक बड़ी बहन और दादी हैं। माँ, पापा और दादी खेती करते हैं जबकि दीदी बाहर नौकरी करती है। मैं और मेरा भाई पढ़ाई कर रहे हैं और साथ में खेती के काम भी करते हैं। मैं ग्राम शिक्षण–केन्द्र चलाती हूँ। हमारे पास दो भैंस, दो बैल हैं।

अभी मैं राजकीय महाविद्यालय गणाई गंगोली में बी.ए. अंतिम वर्ष की पढ़ाई कर रही हूँ। मैंने कक्षा आठ तक ग्वाड़ी के स्कूल में ही पढ़ा। उसके बाद इंटर तक नायल में पढ़ा। वैसे तो मुझे सभी विषय अच्छे लगे लेकिन अर्थशास्त्र कम समझ में आता था। मेरा मन आर्मी में जाने या नौकरी करने का है। लेकिन कोरोना महामारी और लॉकडाउन के कारण कुछ भी काम सफलता से कर पाना कठिन लग रहा है।

सुबह उठने से लेकर दिन तक मेरी दिनचर्या इस प्रकार है–सुबह चाय बनाना, पानी भरकर लाना, बर्तन धोना, खेतों में काम करना, वापस आकर खाना पकाना, खाने के बाद बर्तन धोना और फिर थोड़ा आराम। शाम के वक्त पुनः पानी लाती हूँ, खेतों में जाती हूँ, रात के भोजन के लिये सब्जी–रोटी पकाती हूँ और खाने के बाद कुछ देर पढ़ाई करती हूँ। हम साढ़े नौ बजे सो जाते हैं।

हमारे गाँव में ग्राम शिक्षण केन्द्र 2017 में शुरू हुआ। मेरी बहन ने जून 2017 से केन्द्र चलाया। मई 2019 में उसने यह काम छोड़ दिया और बाहर नौकरी करने चली गयी। मेरे मन में विचार था कि यह काम करूँ। अंततः शिक्षिका के रूप में मेरा चयन हो गया। प्रशिक्षण के लिये अल्मोड़ा भेजा गया। मुझे वहाँ बहुत अच्छा लगा। वापस आकर मैंने केन्द्र–संचालन शुरू किया।

हमारा केन्द्र गाँव के पंचायत भवन में चलता है। कमरा थोड़ा छोटा है मगर बाहर खेलने के लिये जगह अच्छी है। हमारे केन्द्र में कहानी की किताबें सबसे ज्यादा पढ़ी जाती हैं। बच्चों को नाटक के माध्यम से कहानी सुनना बहुत पसंद है। एक दैनिक अखबार, 'दैनिक जागरण' आता है जिसे गाँव के बड़े–बुजुर्ग भी पढ़ते हैं।

गाँव में केन्द्र खुलने के बाद महिलाएं जागरूक हुई हैं। गाँव में ऐसे काम हों जिनसे लोगों की परेशानी दूर हो, इसके लिये उन्होंने एक संगठन बनाया। वे मिलकर नौले–धारों की सफाई करती हैं। केन्द्र से किताबें पढ़ने के लिए ले जाती हैं। बच्चे पहले इधर–उधर

चले जाते थे और उनकी जानकारी कम थी। अब सभी बच्चे रुचि के साथ केन्द्र में आते हैं। माता–पिता बच्चों को केन्द्र में भेजते हैं तथा कभी–कभी स्वयं भी आते हैं। शिक्षण केन्द्र में कार्य करने से मुझे भी बहुत कुछ सीखने को मिला तथा कुछ नया कर पाने की लगन और आत्म–विश्वास जगा। पहले लोगों के सामने बोलने में हिचकिचाहट होती थी लेकिन अब ऐसा नहीं होता।

ग्राम शिक्षण केन्द्र को बेहतर बनाने के लिये बच्चों तथा अन्य गाँववालों के साथ जुड़े रहना, उनके साथ अच्छा व्यवहार रखना, ऐसे ही काम करते रहने की जरूरत है।

बच्चों के साथ गाँव से भी जुड़ाव

पायल बिष्ट

मेरा जन्म–स्थान चमोली ज़िले का कोटेश्वर गाँव है। परिवार में माँ, पापा और भाई हैं। पापा खेतीबाड़ी करते हैं। हमारे पास गाय और बैल हैं। मैं वर्तमान में राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोपेश्वर में एम.ए. प्रथम वर्ष में पढ़ रही हूँ। पाँचवीं तक की शिक्षा प्राथमिक विद्यालय कोटेश्वर और आगे इंटर तक की पढ़ाई राजकीय इंटर कॉलेज बैरांगना में हुई। हिंदी और भूगोल पढ़ना अच्छा लगता है। गणित पहले से ही कम समझ में आती है।

रोज सुबह घर की सफाई, बर्तन धोना, नाश्ता बनाना आदि काम करना और फिर कॉलेज जाना ही मेरी दिनचर्या है। आजकल ऑनलाइन क्लास चल रही हैं। इसके बाद दिन का खाना बनाती हूँ। चार से छः बजे तक शिक्षण केन्द्र का समय होता है। उसके बाद पानी भरना और फिर कॉलेज का काम करती है। कभी–कभी रात का खाना भी बनाती हूँ। हम लोग रात का खाना साढ़े नौ बजे खाते हैं और फिर दस बजे सो जाती हूँ। हमारे गाँव में शिक्षण केन्द्र 2011 में शुरू किया गया। मुझ से पहले पाँच अन्य शिक्षिकाओं ने केन्द्र चलाया।

मैं फरवरी 2018 से केन्द्र चला रही हूँ। मेरा चयन ग्रामवासियों, विशेषकर महिला संगठन ने किया। केन्द्र सरकारी भवन में चलता है और बच्चों के खेलने तथा अन्य गतिविधियों के लिये पर्याप्त जगह है। केन्द्र गर्मियों में साढ़े चार से साढ़े छः बजे तक और जाड़ों में तीन से पाँच बजे तक चलता है, ठंड के मौसम में स्कूल खुले होने पर केन्द्र साढ़े चार से साढ़े पाँच बजे तक चलता है लेकिन *रविवार को हम खूब काम करते हैं।*

हमारे केन्द्र में लगभग चार सौ पचास पुस्तकें हैं। हर उम्र के लोगों के लिये किताबें हैं। बच्चों को मुख्य रूप से कहानी की किताबें पसंद आती हैं–'हाथी की हिचकी', 'भोलू और सलीम', मेंढक राजकुमार', 'गुनगुन करती मधुमक्खी', 'भाभी बनी सरपंच', 'बात शादी की' इत्यादि। मैंने करीब ढ़ाई सौ किताबें पढ़ी हैं। वैसे तो केन्द्र की सभी किताबें उपयोगी हैं पर मुझे 'एक गधे की आत्म–कथा', 'बराक ओबामा', 'स्वामी विवेकानन्द' तथा स्वास्थ्य और पर्यावरण सम्बन्धी किताबें ज्यादा रोचक लगीं। केन्द्र में कैरम, लूडो, बैडमिंटन, रस्सी–कूद, शतरंज और ग्लोब, गणितमाला, जोड़ो–ज्ञान सामग्री आदि भी है। केन्द्र में 'राष्ट्रीय सहारा' अखबार और 'नंदा' सहित अन्य पत्रिकाएँ आती हैं।

बच्चों को उम्र के अनुसार अलग–अलग तरह की गतिविधियाँ करायी जाती हैं। कक्षा एक से तीन के बच्चों को खेल के माध्यम से पढ़ाना, 'अ–आ' लिखना, अक्षर मिलाकर शब्द

बनाना, एक शब्द से वाक्य बनाना, गणितमाला पर गिनती सिखाना आदि ज्यादा अच्छा लगता है। नौ से चौदह वर्ष के बच्चों को वाक्यांशों से कहानी बनाना तथा अधूरी कहानी पूरी करना, रंगोमेट्री, ग्लोब की मदद से कार्य करना अच्छा लगता है। चौदह वर्ष से अधिक उम्र के बच्चों को कैरम, बैडमिंटन, रस्सीकूद खेलना तथा कुछ को कहानी की किताबें पढ़ना अच्छा लगता है। छः से दस वर्ष के बच्चों को भावगीत भी बहुत पसंद आते हैं।

केन्द्र खुलने से बच्चों में बहुत परिवर्तन आया है। वे शाम को खाली घूमने के बजाय केन्द्र में आकर किताबें पढ़ते और खेलते हैं। किशोरियों को पहले घर के कामों से ही मतलब रहता था लेकिन केन्द्र खुलने से वे किताबें पढ़ती हैं और किशोरी–गोष्ठी करती हैं। महिलाओं को संगठन में काम करने का मौका पहले नहीं मिलता था। *बहुत सी महिलाएं केन्द्र से किताबें पढ़ने के लिये ले जाती हैं।* महिलाओं का आत्म–विश्वास बढ़ गया है। वे कहीं भी अपनी बात रख सकती हैं। उन्हें भ्रमण के लिये अल्मोड़ा भेजा जाता है जहाँ उन्हें उत्तराखण्ड के अन्य गाँवों की जानकारी भी प्राप्त होती है।

ग्राम शिक्षण केन्द्र से जुड़कर मुझे भी बहुत अच्छा लगा। नई–नई जानकारियाँ मिलती हैं। बच्चों के साथ लगाव हुआ और सीखा कि किस प्रकार विभिन्न गतिविधियाँ करानी हैं। *बच्चों के साथ–साथ पूरे गाँव से मेरा जुड़ाव हुआ है।* अन्य लोगों के समक्ष खुलकर बोलना, अपने विचार प्रकट करना और महिलाओं, किशोरियों तथा युवाओं के साथ बैठक करना सीखा है। इससे मेरा आत्म–विश्वास बढ़ा है। बच्चों और *गाँव के लोगों द्वारा सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है।*

कार्य समय पर पूरा होता है

रितु नेगी

मेरा जन्म छातोली गाँव, कर्णप्रयाग ब्लॉक, जिला चमोली में हुआ। परिवार में माँ–पिताजी, तीन बहनें और एक भाई है। पिताजी दिल्ली में प्राइवेट कंपनी में नौकरी करते हैं और माँ घर पर खेतीबाड़ी का काम करती हैं। मैं अपने गाँव में शिक्षण केन्द्र के साथ ही कम्प्यूटर केन्द्र भी चलाती हूँ। खाली समय में हम तीनों बहनें भी माँ के साथ खेतों में जाते हैं या खाना बनाने में मदद करते हैं। हमारी दो भैंस, एक गाय और एक बिल्ली है।

मैं बी.ए. द्वितीय वर्ष में पढ़ रही हूँ। मैंने कक्षा एक से पाँच तक प्राथमिक विद्यालय छातोली, छः से दसवीं तक कन्या विद्यालय नौटी और इण्टर नैनी से किया। अभी मैं राजकीय महाविद्यालय नंदासैंण में पढ़ रही हूँ। मुझे भूगोल, अर्थशास्त्र और हिंदी विषय अच्छे लगते हैं लेकिन राजनीति विज्ञान ज्यादा समझ में नहीं आता।

मैं सुबह छः बजे उठती हूँ। आधा घंटा योग करती हूँ। फिर सात बजे रोटी बनाती हूँ और छुट–पुट अन्य काम करके नौ बजे जंगल चले जाते हैं। कभी–कभी मैं खेत में काम करने भी जाती हूँ। जंगल से एक बजे वापस लौटकर खाना खाती हूँ और उसके बाद कम्प्यूटर सेंटर चली जाती हूँ। आजकल महामारी के कारण शिक्षण केन्द्र और कम्प्यूटर सेण्टर बन्द हैं, लेकिन कमरों की साफ–सफाई करने चली जाती हूँ। लाइब्रेरी से किताबें लेकर पढ़ती हूँ। लिखकर संस्था को भेजती हूँ। शाम को मैं अपनी पढ़ाई के साथ ही भाई की ऑनलाइन पढ़ाई में मदद करती हूँ। हम रात का खाना नौ बजे खाते हैं। खाने के बाद दस बजे तक टीवी देखकर सो जाती हूँ। वे काम जो मैं खुशी–खुशी करती हूँ, उनमें शिक्षण केन्द्र की सफाई व सजावट, कहानी पढ़ना, भाई की पढ़ाई में मदद करना, घर में रोटी बनाना, घर की सफाई शामिल हैं। *जंगल जाना, बर्तन धोना और खेती का काम मजबूरी में करने पड़ते हैं।*

मैं आगे पढ़ना चाहती हूँ ताकि किसी अन्य पर निर्भर ना रहूँ, लेकिन इस महामारी के कारण लॉकडाउन लग गया है। इससे मेरी कॉलेज की पढ़ाई भी नहीं हो पा रही है। *ऑनलाइन पढ़ाई में कुछ समझ में नहीं आ रहा है। इस कारण पढ़ाई से ध्यान हटने लगा है।* मेरा मन है कि अपने माता–पिता का नाम रोशन करूँ।

हमारे गाँव में ग्राम शिक्षण केन्द्र सितम्बर 2017 में शुरू हुआ। पहले तनुजा ने केन्द्र को संचालित किया। जून 2017 में केन्द्र छोड़ने के बाद उसने कम्प्यूटर कोर्स किया और वर्तमान में सिलाई सीख रही हैं।

मैं जुलाई 2017 से ग्राम शिक्षण केन्द्र में कार्य कर रही हूँ। मैं तनुजा दीदी के कहने से शिक्षिका बनी। मुझे बच्चों को पढ़ाने और उनके संग खेलने में बहुत अच्छा लगता है। *मुझे बहुत खुशी है कि मैं इस कार्य को कर रही हूँ।* मेरा केन्द्र गाँव के पंचायत भवन में संचालित होता है। इसमें दो कमरे हैं। इनमें अन्दर वाला कमरा छोटा है। बाहर खेलने के लिये जगह भी अच्छी है। कम्प्यूटर सेंटर भी इसी भवन में चलता है। शिक्षण केन्द्र का समय चार से छः बजे रखा है क्योंकि डेढ़ से चार बजे तक मैं कम्प्यूटर शिक्षण केन्द्र खोलती हूँ।

मेरे केन्द्र में कुल तीन सौ अस्सी किताबें हैं। सबसे ज्यादा पढ़ी जाने वाली किताबें हाथी की हिचकी, बाल कहानियाँ, कजरी गाय, पराया धन आदि हैं। मैंने आज तक तीस किताबें पढ़ी हैं। इनमें 'पराया धन' मुझे बहुत अच्छी लगी। केन्द्र में दैनिक अखबार आता था पर लॉकडाउन के कारण बंद किया हुआ है।

जब मैं केन्द्र में बच्चों को कहानी सुनाती हूँ और अधूरी कहानी पूरी करने को कहती हूँ तब सबका ध्यान इसी में लगा रहता है। सभी बच्चे अलग–अलग तरह से कहानी को पूरा करते हैं।

गाँव में ग्राम शिक्षण केन्द्र खुलने से बच्चों में काफी परिवर्तन आये। पहले बच्चे खाली समय में इधर–उधर भागते रहते थे या किसी के खेतों या बगीचों में नुकसान पहुँचाते। केन्द्र खुलने से उनका मन पढ़ाई में लगा है और आपस में भी बहुत अच्छे से मिलजुल कर रहते हैं।

केन्द्र खुलने से गाँव की महिलाएं बहुत ही खुश हुईं। स्कूल के बाद बच्चे सीधे केन्द्र में आ जाते हैं। घर वालों को उनकी शैतानियों की चिंता–आशंका नहीं रहती। हमारे गाँव की महिलाएं महिला–सम्मलेन जैसे आयोजनों में बहुत रुचि लेती हैं।

जब से ग्राम शिक्षण केन्द्र खुला *मैं स्वयं में बहुत अच्छा महसूस करती हूँ।* बच्चों को पढ़ाना और उनका साथ अब आदत सी हो गयी है। पहले खाली समय में सिर्फ फोन या टीवी पर ध्यान रहता था लेकिन *अब अपने सारे कार्य समय के हिसाब से करती हूँ।* इससे मेरा हर कार्य समय पर पूरा होता है।

ग्राम शिक्षण केन्द्र को अधिक रोचक बनाने के लिये उत्तराखण्ड सेवा निधि से ऐसी गतिविधियाँ आनी चाहिये जिनमें पढ़ाई के साथ खेल भी हो और सभी बच्चे इसे आसानी से कर पायें।

हमारे इलाके में अप्रैल माह से कोविड महामारी का प्रकोप बहुत बढ़ गया। गाँव में डर पैदा होने लगा। एक–दूसरे के प्रति डर का माहौल बन गया। लोग आपसी संपर्क से घबराने लगे। बाहर के लोगों को गाँव में आने से मना कर दिया गया। प्रवासियों को स्कूल या पंचायत भवन में रखा गया। उनकी जाँच के लिये टीम आई। उनके साथ गाँव के लोगों का भी टेस्ट किया गया। सबके मन में डर था की कहीं रिपोर्ट पॉजिटिव न आ जाये। सभी मास्क व सैनिटाइजर का प्रयोग करने लगे। हम सब भी बाहर से आने पर नहा–धोकर और सैनिटाइज होकर घर के अन्दर जाते थे। किसी को भी बुखार आये तो सभी शक करने लगते कि महामारी तो नहीं फैल गयी। ग्राम प्रधान द्वारा मास्क व सैनिटाइजर वितरित किये गये। लोगों ने घर की सब्जियों और खाद्य सामग्री का प्रयोग किया तथा अधिक से अधिक मात्रा में अनाज उगाने की कोशिश की। गाँव में साफ–सफाई पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा।

स्कूल बन्द होने से बच्चों की पढ़ाई रुक गयी। सभी बच्चे परेशान होने लगे। शिक्षण केन्द्र भी बन्द हो गया तो उनकी परेशानी बहुत अधिक बढ़ गयी। हमने सप्ताह में दो दिन केन्द्र खोल कर साफ–सफाई, सजावट और बच्चों को किताबें देने का काम किया। जब गाँव में लोगों को बुखार आने लगे तो ग्राम–प्रधान ने केन्द्र बन्द कर देने को कहा। अब महामारी का डर कम होने लगा है। अब हम नियमित रूप से केन्द्र चलाते हैं लेकिन मास्क और सैनिटाइजर का उपयोग भी करते हैं।

सिलाई की दुकान खोलने शौक

रीता बोहरा

मैं ग्राम जनकांडे में रहती हूँ। यहीं मेरा सिलाई सेन्टर है। मेरा जन्म बलाई, लोहाघाट, जिला चम्पावत में हुआ, जो मेरा मायका है। मेरे परिवार में पाँच सदस्य हैं–सास–ससुर, पति, देवर और मैं। ससुर और सास खेती का काम करते हैं। पति और देवर बाहर नौकरी करते हैं। मैं सिलाई केन्द्र चलाती हूँ। खेती की जमीन ठीकठाक है। हम धान, गेहूँ, मडुआ, जौ, गहत, भट्ट, मसूर इत्यादि उगाते हैं। हमारे पास एक गाय, एक बैल और एक बछड़ा है। मैंने दसवीं कक्षा तक पढ़ाई की। मुझे गृह–विज्ञान और संस्कृत विषय अच्छे लगते थे। गणित और अंग्रेजी विषय समझ में नहीं आते थे।

मैं सुबह पाँच बजे उठती हूँ। सास–ससुर को चाय देने के बाद गौशाला और घर की सफाई करती हूँ। उसके बाद नाश्ता तैयार करती हूँ। नाश्ते के बाद आठ बजे सिलाई केन्द्र में जाती हूँ। वहाँ पहले बैच का प्रशिक्षण आठ से दस बजे तक और दूसरे बैच का दस से बारह बजे तक चलता है। दोनों बैच में आठ–आठ महिलाएं एवं किशोरियाँ सीखती हैं। इसके बाद घर लौट कर खाना बनाती हूँ और खाने के बाद दो से तीन बजे तक आराम करती हूँ। शाम साढ़े तीन बजे चारा लेने जंगल जाते हैं। जहाँ से साढ़े छः बजे तक घर वापस लौटती हूँ। फिर मैं रात का खाना बनाती हूँ। हम नौ बजे तक खा लेते हैं और दस बजे के करीब सोने चले जाते हैं। मुझे सिलाई करना बहुत पसंद है। खेती करना भी अच्छा लगता है लेकिन जंगल जाना अच्छा नहीं लगता क्योंकि वहाँ मुझे डर लगता है और काँटे चुभते हैं। मुझे सिलाई की दुकान खोलने का बहुत शौक है। आगे संभव हो सकेगा तो मैं सिलाई की दुकान खोलूँगी।

हमारे गाँव में सिलाई केन्द्र पहली बार सात नवम्बर 2020 में शुरू हुआ। मैं पहली प्रशिक्षिका हूँ। केन्द्र में आठ सिलाई मशीनें रखी हैं, इसमें पाँच मशीनें हाथ की और तीन पैडल वाली हैं जो इस समय अच्छे से चल रही हैं। इनके अलावा पाँच कुर्सियां, छः चटाइयाँ और एक अलमारी है। रविवार को केन्द्र बन्द रहता है।

सिलाई केन्द्र से मेरा जुड़ना कृष्णा के माध्यम से हुआ जो पहले केन्द्र चलाती थी। उन्होंने संस्था के लोगों से बातचीत करके मेरे गाँव में केन्द्र खुलवाया। उन्हें मेरे बारे में बताया कि पहले हिमांचल प्रदेश में सिलाई सीखी थी। जब उन्होंने मुझ से बात की तो मैंने प्रशिक्षिका बनने के लिये हामी भर दी। केन्द्र गाँव के पंचायत घर में खोला गया है। कमरा

बहुत बड़ा है और बाहर बैठने की जगह भी है। गर्मियों और जाड़ों में एक ही समय निर्धारित किया है।

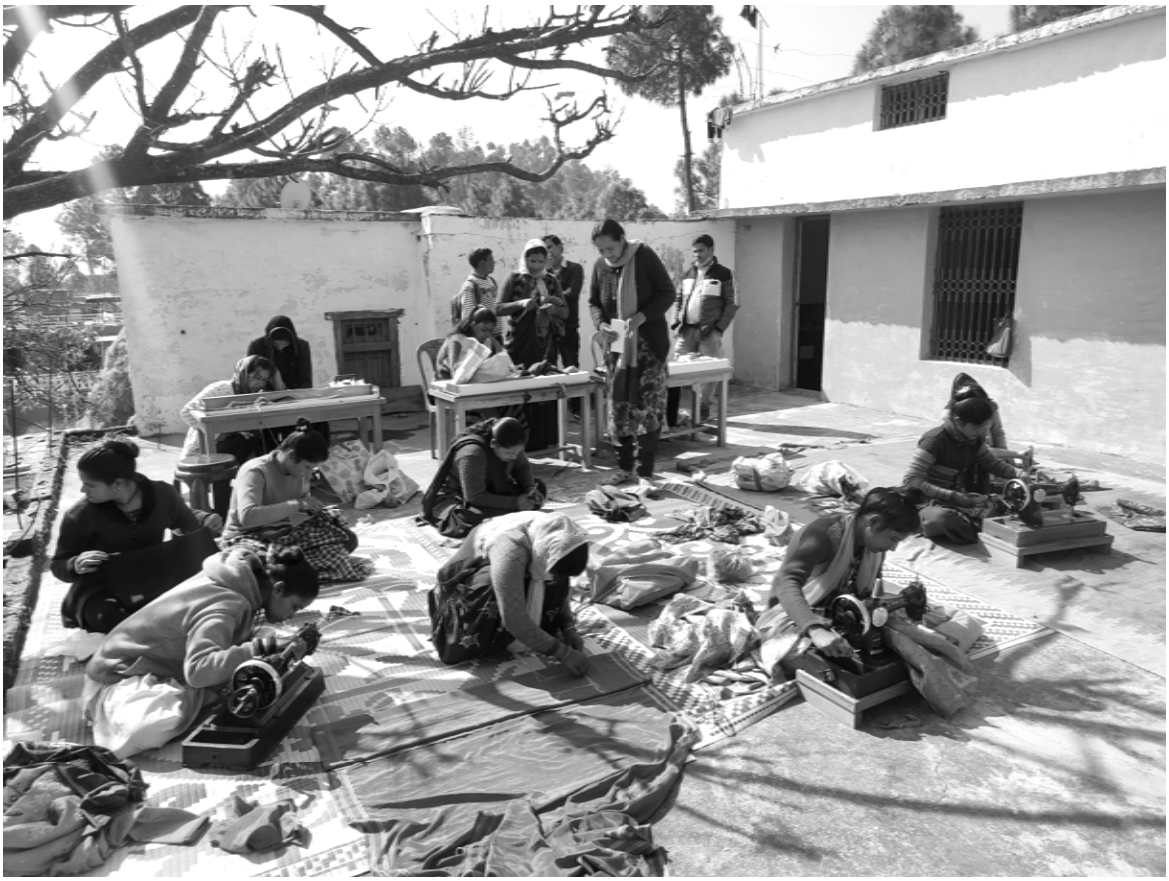

पहले महिलाओं और किशोरियों को सिलाई सीखने बहुत दूर–दूर जाना पड़ता था। गाँव में केन्द्र खुलने के बाद बहुत सी महिलाओं ने सिलाई करना सीख लिया है। इनमें से सात महिलाएं आमदनी भी प्राप्त कर रही हैं। सिलाई सीखने के लिये किशोरियाँ भी आ रही हैं और उनके कौशल लगातार बढ़ रहे हैं।

गाँव का अच्छा सहयोग है

अनुज बिष्ट

मेरा जन्म बमियाला गाँव, जिला चमोली में हुआ। मेरे परिवार में कुल छः सदस्य हैं– पिताजी, माताजी, एक भाई दो बहनें और स्वयं मैं, पिताजी कृषि का काम करते हैं। माताजी घर का काम करती हैं और छोटा भाई श्रीनगर गढ़वाल से पॉलिटेक्निक की पढ़ाई के साथ–साथ कम्प्यूटर का प्रशिक्षण ले रहा है। छोटी बहन ग्यारहवीं में पढ़ रही है।

हमारे परिवार में मेरे माँ–पिताजी खेतों में काम करते हैं। कभी–कभी मेरे भाई–बहन और मैं भी खेतों में काम करने जाते हैं। हमारे घर में दो गाय और दो बैल हैं। दोनों गायें दूध देती हैं। मैंने बी.ए. तक पढ़ा है। प्राथमिक शिक्षा बमियाला में हुई। मुझे अंग्रेजी और अर्थशास्त्र विषय सबसे अच्छे लगते हैं। मुझे गणित अच्छा नहीं लगता था और इसे समझने में भी समस्या होती थी।

सुबह नहा–धोकर नाश्ता करना और उसके बाद कभी–कभी खेतों में काम करना, हल लगाना, दिन का खाना बनाना आदि काम करता हूँ। ज्यादातर मैं बाजार, कॉलेज जाता हूँ। दिन में दो बजे घर आकर खाना खाता हूँ। उसके बाद तीन से छः बजे तक कम्प्यूटर केन्द्र में बच्चों को सिखाता हूँ। उसके बाद दोस्तों के साथ सड़क में घूमता हूँ। खाना बनाना और सफाई करना–ये काम खुशी से करता हूँ। गाँव में कभी रोजगार गारंटी का काम आता है तो मजबूरी में मुझे वो काम भी करना पड़ता है।

हमारे गाँव में जुलाई 2018 में कम्प्यूटर साक्षरता केन्द्र शुरू हुआ। तब से आज तक मैं ही इसे संचालित कर रहा हूँ। हमारा केन्द्र पंचायत भवन में चलता है। इसमें दो कमरे हैं। एक कमरे में ग्राम शिक्षण केन्द्र चलता है। बच्चों के खेलने के लिये आसपास अच्छी जगह है। केन्द्र शाम को तीन से छः बजे तक खुलता है। केन्द्र में कुल तीन कम्प्यूटर रखे हैं। बच्चे तीन–तीन के समूहों में सीखते हैं। स्कूल के दिनों में केन्द्र शाम को चार से सात बजे तक खुलता है। वर्तमान में कुल अठारह बच्चे सीख कम्प्यूटर रहे हैं। कम्प्यूटर केन्द्र में काम करने के बाद अनेक बच्चे शिक्षण केन्द्र में जाकर किताबें पढ़ते हैं।

केन्द्र से जुड़ कर मुझे भी बच्चों के साथ–साथ कम्प्यूटर पर काम करने का पूरा मौका मिला। गाँव के लोगों का केन्द्र के प्रति अच्छा सहयोग है और कुछ महिलाएं भी कम्प्यूटर का ज्ञान ले पा रही हैं। बच्चे कम्प्यूटर को ऑन–ऑफ करना, हिन्दी/अंग्रेजी टाइपिंग, वर्ड, एक्सेल आदि प्रोग्राम सीख रहे हैं।

अभिभावक खुश हैं

जानकी बोहरा

मैं ग्राम जनकाण्डे, जिला चम्पावत, में रहती हूँ। यहीं मेरा एक छोटा सा शिक्षण केन्द्र है। परिवार में पाँच सदस्य हैं–माता–पिताजी, भाई, मेरा बेटा और मैं। पिताजी की एक छोटी सी दुकान है और वे खेती भी करते हैं। मेरा भाई गाँव के बाहर नौकरी करता है। माँ पिताजी के साथ ही खेतों में काम करती है।

ग्राम शिक्षण केन्द्र चलाते हुए मुझे एक साल हो गया है। मैंने बारहवीं तक पढ़ा है। पाँचवी तक जनकाण्डे प्राथमिक विद्यालय में और उसके बाद राजकीय इंटर कॉलेज मध्य–गंगोल में पढ़ाई की। मुझे सबसे अच्छे विषय हिंदी, अंग्रेजी और सामाजिक विज्ञान लगे। गणित ज्यादा समझ में न आने के कारण अच्छी नहीं लगती।

मेरी दिनचर्या यही है कि मैं सुबह छः बजे उठती हूँ। घर और गौशाला की सफाई करने के बाद स्वयं और बच्चे की साफ–सफाई और फिर साढ़े आठ बजे नाश्ता होता है। उसके बाद बेटे को पढ़ाती हूँ। एक तरह से कहूँ तो मेरा बेटा ही मेरा सपना है। दिन का खाना बनाने और भोजन करने के बाद थोड़ा आराम करके गाय के लिये चारा लेने जाती हूँ। इसके बाद शाम के खाने की तैयारी में लग जाते हैं।

मेरे गाँव में ग्राम शिक्षण केन्द्र की शुरुआत 2017 में हुई। केन्द्र को सबसे पहले मेरी बहन मनीषा बोहरा ने एक साल तक चलाया। उसके बाद छोटी बहन कृष्णा ने अगले तीन साल तक चलाया। 2021 से मैं केन्द्र का संचालन कर रही हूँ। बहनों ने शादी तय होने के बाद कार्य छोड़ा था। वे दोनों अपने ससुराल में हैं। एक पढ़ाई कर रही है जबकि दूसरी अपना घर संभालती है। मैं शिक्षण केन्द्र से इसलिये जुड़ी क्योंकि मेरे पास थोड़ा समय बच जाता था और मैं समय का सदुपयोग करना चाहती थी।

मेरे केन्द्र में एक बड़ा कमरा और बाहर खेल का मैदान है। बच्चे खुशी से आकर पढ़ते और खेलते हैं। जाड़ों और गर्मियों के मौसम में केन्द्र के खुलने और बंद होने के समय में कोई बदलाव नहीं होता है।

मेरे केन्द्र में फुटबॉल, बैट–बॉल, कैरम, लूडो, शतरंज, बैडमिंटन आदि खेलने की सामग्री है। पढ़ने के लिये लगभग तीन–चार सौ किताबें हैं। मैंने लगभग पचास किताबें पढ़ीं हैं। इन पुस्तकों में सबसे रोचक भावगीत और चौबीस बाल–कहानियाँ लगीं। आजकल केन्द्र में अखबार और पत्रिकाएं नहीं आतीं।

केन्द्र में बच्चे खेलना पसंद करते हैं। वे कबड्डी, खो–खो आदि के अलावा शिक्षण केन्द्र की खेल–सामग्री से खेलते हैं। और हाव–भाव के साथ भावगीत करते हैं। कहानी सुनना और सुनाना उन्हें बहुत रोचक लगता है।

जब ग्राम शिक्षण केन्द्र नहीं था तो बच्चे बोर हो जाते थे। अब बच्चे और किशोरियाँ आनंद अनुभव करते हैं। उनकी दिनचर्या अच्छी रहती है। छोटे बच्चों को उनके माता–पिता खुद केन्द्र में छोड़ने आते हैं। किशोरियाँ अखबार और किताबें पढ़ती हैं और घर को भी ले जाती हैं। अभिभावक कहते हैं कि बच्चे स्कूल से आने के बाद घूमने–फिरने न जाकर केन्द्र में आते हैं तथा वहीं समय बिताते हैं तो इससे उन्हें बहुत खुशी मिलती है।

केन्द्र से जुड़ने के बाद मेरी दिनचर्या बहुत अच्छे से चल रही है। नई–नई जानकारियाँ प्राप्त होती हैं। मुझे मेरे लायक मानदेय भी मिलता है। इससे मेरा थोड़ा खर्च निकल जाता है। मैंने केन्द्र में बहुत सारी शिक्षण–सामग्री बनायी है, जैसे चार्ट, माला, मिट्टी के बर्तन आदि। बच्चों ने भी आकर्षक चित्र और चार्ट बनाये हैं।

समय बचा कर काम करती हूँ

माला

मेरा जन्म स्थान ग्राम नामिक, जिला पिथौरागढ, है। हम चार बहनें और एक भाई हैं। तीन बहनों की शादी हो गयी हैं। भाई सबसे छोटा है। वह इंटर में पढ़ रहा है। परिवार में अभी हम पाँच सदस्य हैं–मैं, मम्मी–पापा, भाई और दादी। पापा कृषि के अलावा कारपेन्ट्री का काम करते हैं और मम्मी खेती के साथ घर के काम करती है। नामिक में खेती का काम अधिक होता है। खेती के अलावा पालतू पशुओं में दो बैल, दो गाय, एक भैंस और एक कुत्ता भी है।

मेरी शिक्षा दसवीं तक हुई है। आगे की पढाई में समस्या थी क्योंकि गाँव में हाईस्कूल ही है। बाहर पढ़ने जाती लेकिन मम्मी की तबीयत ज्यादातर खराब रहने के कारण घर के काम करना मेरी जिम्मेदारी हैं। दसवीं तक सभी विषय रोचक लगते थे। *आगे पढ़ाई करती तो शायद रोचक विषय बताती।*

मैं सुबह पाँच बजे उठ जाती हूँ। उठने के बाद चाय–नाश्ता बनाने में लग जाती हूँ। नाश्ता खाने तक आठ बज जाते हैं। इसके बाद गाय–बछड़ों को जंगल में छोड़ती हूँ। गौशाला से गोबर निकालती हूँ। तब तक दस बज जाते हैं। लॉकडाउन में केन्द्र का समय दस से बारह बजे किया है। घर आकर प्रतिदिन दो से चार घंटे सिलाई का काम करती हूँ। इस काम को मैं दिल से खुशी–खुशी करती हूँ। शाम को छः बजे से भोजन की तैयारी करती हूँ। हम साढ़े सात–आठ बजे खाना खा लेते हैं। उसके बाद दस बजे तक टीवी देखती हूँ।

मुझे जीवन में खुद के लिये एक व्यावसायिक काम अपनाना है जिससे आत्म–निर्भर हो सकूँ। मैं सिलाई मशीन से आजीविका चलाना चाहती हूँ। मैं जो भी काम करती हूँ या जो निर्णय लेती हूँ मम्मी–पापा हमेशा सहयोग करते हैं। प्रोत्साहित भी करते हैं। उनका मुझ पर अटूट विश्वास रहता है जिससे मैं हमेशा नई ऊर्जा के साथ काम करती हूँ।

हमारे गाँव में दिसम्बर 2013 में शिक्षण केन्द्र शुरू हुआ। जब सुनीता को संस्था ने गोगिना में सिलाई केन्द्र चलाने की जिम्मेदारी दी तो गाँव में शिक्षण केन्द्र चलाने की जिम्मेदारी मुझे मिल गयी। पहले मैं कभी–कभी उनके साथ केन्द्र में चली जाती थी। सुनीता एक दोस्त के नाते मेरे साथ केन्द्र और संस्था से जुड़ी बातें साझा किया करती थी। एक बार मुझे गाँव की तीन अन्य लड़कियों के साथ संस्था द्वारा अल्मोड़ा में आयोजित की गयी

किशोरी गोष्ठी में भाग लेने का सुनहरा मौका भी मिला। नवम्बर 2019 से मैंने शिक्षण केन्द्र चलाना शुरू किया। मार्च 2020 में प्रशिक्षण के लिये अल्मोड़ा बुलाया गया लेकिन देश में लॉकडाउन लग जाने के कारण प्रशिक्षण पूरा नहीं हो सका। तीन दिन प्रशिक्षण ले कर शिक्षिकाएं वापस चली आयीं क्योंकि उसके अगले दिन लॉकडाउन की वजह से वाहन चलना बंद कर देते। कोविड जैसी परिस्थिति में बच्चों के स्कूल बंद हैं। बच्चे लापरवाह हो रहे थे परन्तु केन्द्र खुला होने से काफी संख्या में बच्चे आते हैं और काफी कुछ सीख रहे हैं।

इस संस्था से जुड़ने से पहले भी मैं समय मिलने पर केन्द्र में जाती थी। तभी कुछ नया देखने–सुनने को मिलता था। आज मैं स्वयं केन्द्र की शिक्षिका हूँ। मैं अपनी जीवनचर्या में बहुत बदलाव देखती हूँ। आज मैं समय बचा कर काम करती हूँ। शिक्षण केन्द्र में छोटे–छोटे बच्चों के साथ रह कर उनकी भावनाओं को समझने की कोशिश करती हूँ। *बच्चों के साथ उन्हीं की भाषा में बात करती हूँ* तथा अच्छे कार्यों के लिये प्रेरित करती हूँ।

फूल–पौधों से केन्द्र की सजावट, बच्चों के बनाये रंग–बिरंगे चित्रों को दीवार पर चिपकाकर सजावट, बच्चों की उम्र के अनुसार केन्द्र की सजावट, कहानी के माध्यम से कोई विषय बच्चों को समझाना, ये गतिविधियाँ करने से केन्द्र रोचक बना रहता है।

अपने लिये थोड़ा समय निकालती हूँ

माया बोरा

मेरा जन्म स्थान ग्राम बूंगा, पोस्ट कुंवाली, जिला अल्मोड़ा है। मेरा विवाह 2009 में बिन्ता गाँव में हुआ। मेरे ससुराल में संयुक्त परिवार है, इसमें मेरे ससुरजी, जेठ–जेठानी, देवर–देवरानी आदि रहते हैं। ससुरजी रेलवे से रिटायर हुए हैं। पति एक एन.जी.ओ. में काम करते हैं। हमारी जो पुश्तैनी खेत हैं, उसमें कुछ खेतों में हम स्वयं खेती करते हैं जबकि कुछ खेती बटाई पर दी है। मुख्यतः धान और गेहूँ की खेती होती है। हमारे पास गाय, भैंस और बैल हैं। भैंस के दूध से परिवार के लिये दूध–दही की पूर्ति हो जाती है।

मैंने बी.ए. की शिक्षा रानीखेत महाविद्यालय से 2010 में ली। हाईस्कूल और इंटर अपने गाँव के विद्यालय से किया। मुझे संस्कृत और अंग्रेजी विषयों में कठिनाई होती है। वैसे तो पूरा दिन काम में निकल जाता है पर मैं समय निर्धारित करके थोड़ा वक्त अपने लिये निकाल लेती हूँ। कढ़ाई, बिनाई और सिलाई भी कर लेती हूँ।

मैं सुबह चार बजे उठती हूँ। साढ़े चार से पाँच बजे तक योग करती हूँ। उसके बाद गौशाला में पशुओं को चारा–पानी देने और दूध निकालने का काम करती हूँ। फिर बच्चों को जगाने और उनके लिये नाश्ता बनाना और सबको खिला कर खुद खाने तक के काम सुबह साढ़े सात बजे तक पूरे कर लेती हूँ। इसके बाद ग्यारह बजे तक खेतों में काम करती हूँ। पशुओं के लिये चारा लाती हूँ। घर आकर डेढ़ बजे तक खाना बनाना, कपड़े धोना आदि काम होते हैं। डेढ़ से चार बजे तक का समय मेरा अपना होता है। इस दौरान शिक्षण केन्द्र में आने वाले बच्चों को घर बुला कर किताबें देती हूँ और किशोरियों को रचनात्मक कार्य करने के लिये अपने घर बुला लेती हूँ। साढ़े चार से साढ़े छः बजे तक खेती का कार्य, पशुओं को चारा देना और दूध दुहना जैसे काम और शाम को पूजा–पाठ, बच्चों को पढ़ाना आदि करती हूँ। इस दौरान मेरी दीदी रात का खाना बना लेती है। साढ़े नौ बजे तक हम लोग सोने चले जाते हैं। वैसे तो सभी काम खुशी–खुशी कर लेती हूँ लेकिन सर्दियों में जंगल से लकड़ी लाना मुझे अच्छा नहीं लगता क्योंकि जंगल हमारे गाँव से बहुत दूर है। कह सकते हैं कि यह काम मैं मज़बूरी में करती हूँ।

हमारे गाँव में शिक्षण केन्द्र की शुरुआत 2011 में हुई। केन्द्र में पहली शिक्षिका गीता बिष्ट थीं। उनका कार्यकाल दो साल रहा। उनके बाद पूजा कैड़ा ने एक साल काम किया। इन दोनों युवतियों के विवाह के बाद मैं अगस्त 2014 से इस केन्द्र का संचालन कर रही हूँ। शिक्षण केन्द्र मेरे घर के समीप ही चलता था। यहाँ पर मैं बच्चों को पढ़ते और खेलते

हुए देखती थी। समय मिलने पर मैं उनके साथ बातचीत करती और खेलती भी थी। इस कारण शिक्षण केन्द्र से मेरा जुड़ाव होता गया और मेरी पढ़ाने की इच्छा भी होने लगी। जब शिक्षिका का पद खाली हुआ तो मैं संस्था प्रमुख दीदी माया जोशी जी से मिली और चयन प्रक्रिया के बाद मेरा चुनाव हो गया। हमारा केन्द्र पंचायत घर में संचालित होता है। केन्द्र में बच्चों के पढ़ने और खेलने के लिये पर्याप्त जगह है।

गाँव को केन्द्र से जोड़ना चाहती हूँ

ज्योति माहरा

मेरे परिवार में मेरे अलावा माता–पिता, दो भाई हैं। मेरी मम्मी एक हाउस वाइफ और पापा कृषक हैं। पापा पहले बेकरी में काम करते थे लेकिन अब कृषि करते हैं। वर्तमान में हमारे पास कोई पालतू पशु नहीं है। मेरा जन्म ग्राम सिरमाली, जिला चम्पावत, में हुआ।

मैं बी.ए. तीसरे साल में पढ़ रही हूँ। इंटर तक की शिक्षा मैंने अपने गाँव के पास स्थित राजकीय इंटर कॉलेज मध्य–गंगोल से प्राप्त की है। अर्थशास्त्र और भूगोल मेरी पसंद के विषय हैं। राजनीति–विज्ञान विषय कभी अच्छा नहीं लगा।

मैं सुबह सात बजे उठते ही गरम पानी पीती हूँ। दूध लेने जाती हूँ और फिर चाय बनाकर माँ–पापा को देकर खुद भी पीती हूँ। फिर झाड़ू लगाना, बर्तन धोना, नाश्ता, सबके कपड़े धोना और कुत्ते को नहलाना आदि कार्य करके थोड़ी देर सो जाती हूँ। दिन में मम्मी को खाना बनाने में मदद करती हूँ। खाना तैयार होने तक मैं मोबाइल में गेम खेलती हूँ। हम सब साथ बैठकर खाना खाते हैं और फिर बर्तन धोकर मैं सो जाती हूँ। शाम चार बजे उठकर चाय पीने के बाद हम खेतों में काम करने जाते हैं। वहाँ से आकर सब्जी काटती और पकाती हूँ। खाना खाने से पहले एक घंटा पढ़ाई करती हूँ। खाना खाने के बाद दो घंटा फोन चलाती हूँ और उसके बाद सो जाती हूँ। यही मेरी दिनचर्या है। मुझे दिन में खाना खाकर बर्तन धोना अच्छा नहीं लगता लेकिन मजबूरी में यह काम भी करना होता है।

ग्राम शिक्षण केन्द्र नवम्बर 2020 से शुरू हुआ। इसमें प्रथम कार्यकर्त्ता मैं ही हूँ। मेरा चुनाव गाँव की मीटिंग में ग्रामवासियों ने किया। मैं अपनी मर्जी से यह काम करती हूँ। ग्राम शिक्षण केन्द्र का संचालन मैं अपने पुराने घर में करती हूँ। वहाँ खेल–कूद के लिये बड़ा आँगन है। बच्चों को पुस्तकें पढ़ाने तथा खेल–कूद के साथ ही सामान्य जानकारी दी जाती है। मेरे केन्द्र में लगभग पाँच सौ किताबें हैं। बच्चे सबसे ज्यादा रुचि क्रिकेट खेलने में लेते हैं।

ग्राम शिक्षण केन्द्र का खुलना बच्चों के लिये सबसे अच्छा है क्योंकि पहले वे खाली समय में खेल ही करते थे लेकिन अब वे शिक्षण केन्द्र में शिक्षण के साथ–साथ मनोरंजन करते हैं और कहानियाँ–कविताएं सुनकर खुश होते हैं। उन्हें खेलने के लिये सामग्री भी उपलब्ध रहती है। *मैं गाँव को शिक्षण केन्द्र से जोड़ना चाहती हूँ* ताकि लोगों को

जागरूक किया जा सके। इस क्षेत्र में एक वर्ग पिछड़ा हुआ है जो किसी चीज में रुचि नहीं ले पाते। मैं किशोरियों और महिलाओं को पढ़ने के लिये पुस्तकें बाटना चाहती हूँ लेकिन वे पुस्तकों में कोई रुचि नहीं लेती हैं। अनपढ़ होने के कारण भी अधिकांश महिलाएं पुस्तक पढ़ने से मना कर देती हैं। मैंने कम पुस्तकें पढ़ी हैं, जो पढ़ी वे बाल कविताएं और कहानियों की हैं।

बच्चों के साथ खेलना पसंद है

पुष्पा बिष्ट

मेरे परिवार में हम पति–पत्नी और दो बच्चों सहित चार सदस्य हैं। हम दोनों खेती करते हैं। हमारे पास पालतू–पशु नहीं हैं। मैंने इंटर तक गौणा गाँव में पढ़ा और फिर गोपेश्वर से बी.ए. और एम.ए. किया है।

मैं सुबह पाँच से साढ़े पाँच बजे तक *योगा करती हूँ।* फिर चाय पीने के बाद छः से सात बजे तक घर की सफाई करती हूँ। नाश्ते के बाद आठ बजे से दोपहर एक बजे तक खेतों में काम करने जाती हूँ। दिन के खाने के बाद तीन बजे तक आराम करती हूँ। शाम चार बजे से शिक्षण केन्द्र में बच्चों के साथ गतिविधियाँ करती हूँ। अपने घर के सारे काम खुशी–खुशी करती हूँ। जीवन में बच्चों को अच्छी शिक्षा देने का मन है लेकिन लॉकडाउन के कारण बाधाएँ आ रही हैं।

हमारे गाँव में शिक्षण केन्द्र मई 2018 में शुरु हुआ। केन्द्र पंचायत भवन में चलता है। पहले नेहा नाम की शिक्षिका ने चलाया। केन्द्र छोड़ने के बाद वह कॉलेज में पढ़ाई करने लगी। उसके बाद शादी हो गयी। मेरा चयन गाँव की महिलाओं ने बैठक करके किया। मुझे बच्चों के साथ खेलना और बातचीत करना अच्छा लगता है। शिक्षण केन्द्र गर्मियों में शाम साढ़े चार और सर्दियों में चार बजे खुलता है।

हमारे केन्द्र में साढ़े तीन सौ पुस्तकें हैं। कहानियाँ, सामान्य ज्ञान, कविताएं आदि सभी किताबें हैं। बच्चे कहानियाँ पढ़ना अधिक पसंद करते हैं। केन्द्र में समय–समय पर पत्रिकाएं आती हैं और दैनिक अखबार भी आता है। खेल का सामान और जोड़ो–ज्ञान किट भी है। *बच्चे खेल, भावगीत और कहानियाँ पढ़ने में ज्यादा रुचि लेते हैं।*

शिक्षण केन्द्र खुलने से पहले बच्चे शाम को इधर–उधर घूमते थे। अब वे केन्द्र में आ जाते हैं और समय–सारिणी के अनुसार गतिविधियाँ करते हैं। महिलाओं को सम्मेलनों में भाग लेने और अल्मोड़ा जाने का भी मौका मिला। किशोरियों को भी अल्मोड़ा जाने का मौका मिला। *हमारे केन्द्र के बच्चों में सीखने की ललक अच्छी है।* केन्द्र खुलने के बाद बालक/बालिकाओं ने खेलना–कूदना, बालमेलों में बोलना सीखा है। इससे उनकी झिझक दूर हो गयी और आत्म–विश्वास बढ़ा है।

समाज से जुड़ने का मौका मिला

कुसुम बिष्ट

मेरा जन्म कठूड़ गाँव (चमोली) में हुआ। परिवार में पति, सास बौर देवर सहित कुल चार लोग हैं। पति नौकरी करते हैं। हमारे छः–सात खेत हैं जिनमें अलग–अलग फसलें बोते हैं। बंजर भूमि है में घास उगाते हैं। हमारे पास एक गाय है।

मैंने बी.ए. तक पढ़ा है। इंटर टंगसा से और बी.ए. गोपेश्वर से किया। अंग्रेजी और पेंटिंग सबसे अच्छे विषय लगते थे। गणित और राजनीति विज्ञान अच्छे नहीं लगते थे और समझ में भी कम आते थे।

अपनी दिनचर्या की बात करूँ तो मैं सुबह पाँच बजे उठती हूँ। हाथ–मुँह धोकर चाय बनाती हूँ। फिर गाय को दुहती हूँ और गोबर निकालती हूँ। इसके बाद घर की सफाई, नाश्ता बनाना, गाय को पानी पिलाना, अन्दर बाँधना इत्यादि काम करती हूँ। कभी खेत में तो कभी चारे के लिए जंगल में जाती हूँ। वहाँ से आकर दिन का खाना बनाना, नहाना, कपड़े धोना इत्यादि के बाद थोड़ा आराम करती हूँ। साढ़े चार से साढ़े छः बजे तक ग्राम शिक्षण केन्द्र में रहती हूँ। उसके बाद हाथ–मुँह धोकर पूजा करती हूँ। फिर चाय और उसके बाद रोटी–सब्जी बनाना, सबको खिलाना और बर्तन धोना आदि काम पूरे करती हूँ। सोने से पहले केन्द्र से लायी हुई कहानी की किताबें पढ़ती हूँ। जंगल जाना और गोबर निकालना मजबूरी का काम है।

जीवन में आगे यही करना है कि केन्द्र चलाती रहूँ। खुद अच्छी बातें सीखूँ और बच्चों का ज्ञानवर्धन करूँ। हमारे गाँव में केन्द्र मार्च 2017 में शुरू हुआ। उस समय इसे श्रीमती शकुंतला डिमरी ने संचालित किया। मार्च 2019 के बाद वह अपने बच्चों को पढ़ाने दिल्ली चली गयी। वहाँ पर वे सिलाई भी करती हैं। जून से अक्टूबर 2018 के समय में शकुंतला देवी का स्वास्थ्य खराब होने के कारण पूनम देवी ने भी केन्द्र चलाया था। मुझसे शकुंतला देवी ने केन्द्र चलाने को कहा। मेरा मन था, तुरंत सहमति दे दी।

हमारा केन्द्र पंचायत भवन में चलता है जो कि गाँव के बीच में है। यहाँ पर गाँव के लोग आते–जाते रहते हैं। कभी–कभी वे केन्द्र में आकर यहाँ से अखबार और किताबें पढ़ने के लिए ले जाते हैं।

केन्द्र में कैरम, रस्सी–कूद, लूडो, शतरंज और वालीबॉल आदि खेल–सामग्री रखी है। जोड़ो–ज्ञान किट, ग्लोब आदि के अलावा चार सौ अस्सी किताबें हैं। छोटे बच्चों द्वारा सबसे

ज्यादा पढ़ी जाने वाली किताबें हैं–हाथी की हिचकी, गुन–गुन करती मधुमक्खी, मेंढक का नाश्ता, पैसे की दुनिया, बाल–कविताएं आदि। बड़े बच्चे सामान्य–ज्ञान और जीवनी की किताबें और विज्ञान–प्रसंग, विज्ञान–डायरी, प्रेमचंद्र की तेरह बाल कहानियाँ आदि ज्यादा पढ़ते हैं। मैंने कुल चालीस किताबें पढ़ी हैं। केन्द्र में 'राष्ट्रीय सहारा' अखबार और 'नंदा', 'मुस्कान' आदि पत्रिकाएं आती हैं।

गाँव में केन्द्र खुलने से बच्चों और किशोरियों में बहुत परिवर्तन आया। स्कूल से आने के बाद बच्चे शाम को इधर–उधर घूमते, आपस में लड़ाई, दूसरों के घर जाकर शरारतें करते थे। जबसे गाँव में केन्द्र खुला, वे रोज शाम को प्रार्थना, भावगीत, चेतना–गीत, कहानी, किताबें, अखबार, पत्रिकाएं पढ़ने और खेल–कूद की गतिविधियों में व्यस्त रहते हैं। किशोरियों को बैठकों में अच्छी जानकारियाँ दी जाती हैं। वे केन्द्र से पढ़ने के लिए किताबें भी ले जाती हैं।

महिलाओं में भी बहुत परिवर्तन आया है। जैसे–नियमित रूप से उनकी मासिक बैठकें आयोजित की जाती है। उन्हें जानकारियाँ देते हैं। वे चेतना–गीत और भजन गाती हैं। अपनी समस्याओं पर चर्चा करती हैं। सब मिलकर समस्याओं का हल निकालती हैं। जो महिलाएं बहुत दिनों से आपस में नहीं मिल पातीं उन्हें मिलने का मौका मिल जाता है। हम महिलाओं को बताते हैं कि वे हर काम को कर सकती हैं और अपने को कमजोर न समझें। *कुछ पढ़ी–लिखी बहुएं ग्राम शिक्षण केन्द्र से कहानी और सामान्य–ज्ञान की किताबें पढ़ने के लिए ले जाती हैं।* मुझे भी केन्द्र से जुड़कर बहुत कुछ सीखने और समाज से जुड़ने का मौका मिला।

मुझे भी पढ़ने का मौका मिला

रेनू आर्या

मेरा जन्म कसून गाँव में हुआ। परिवार में मम्मी–पापा, भाई–बहन और मैं हूँ। घर के सभी लोग अपने–अपने कामों में जुटे रहते हैं। पापा कृषि करते हैं। हमारे दस खेत हैं। खेती में सब्जियाँ, दालें, धान और गेहूँ पैदा करते हैं। मम्मी घर के काम जैसे–खाना पकाना, बैल, बकरियों और भैंस की देखभाल आदि के साथ–साथ खेती के काम करती हैं। हमारे पास पाँच गायें, आठ बकरियाँ और एक भैंस है। मेरे भाई–बहन पढ़ाई कर रहे हैं।

मैंने कक्षा पाँचवी तक प्राथमिक विद्यालय नाकोट में पढ़ा। आगे बारहवीं तक की पढ़ाई राजकीय इंटर कॉलेज नगरखान से की। मुझे सभी विषय अच्छे लगते थे। जो विषय समझ में नहीं आता था उसे पूछ लेते थे।

मैं सुबह साढ़े छः बजे उठती हूँ। फिर घर के काम करती हूँ। मुझे घर से लेकर बाहर तक के कामों को करने में खुशी होती है। मुझे पढ़ना अच्छा लगता है लेकिन घर के काम के कारण पढ़ाई नहीं कर पा रही हूँ। मम्मी के पैर में दर्द होने के कारण घर का काम मुझे ही करना पड़ता है।

हमारे गाँव में शिक्षण केन्द्र मार्च 2019 में शुरू हुआ। कुछ समय पहले गाँव में संध्या–केन्द्र था। ग्राम शिक्षण केन्द्र को मार्च 2021 तक पूनम ने चलाया। उसकी शादी हो गयी है। वर्तमान में वह अपनी ससुराल में है। पहले की सभी शिक्षिकाओं ने शादी के कारण केन्द्र में काम करना छोड़ा। अब सभी ससुराल में अपने बच्चों, घर और खेतीबाड़ी का ध्यान रखते हुए जीवन में खुश हैं।

ग्राम शिक्षण केन्द्र मेरे घर में ही चलता है। कमरे के बाहर एक आँगन और बगल में खेत हैं, जहाँ बच्चे खेलते हैं। केन्द्र में लगभग सौ किताबें, फुटबॉल, बेटमिंटन, क्रिकेट बेट/बॉल, कैरम, शतरंज आदि खेल सामग्री मिली हैं। सर्दियों में केन्द्र के खुलने का समय स्कूल के दिनों में शाम साढ़े तीन से साढ़े छः बजे तक रहता है। गर्मियों में सुबह के स्कूल होने के कारण बच्चे जल्दी घर आ जाते हैं इसलिये दो बजे से साढ़े पाँच बजे तक खोलते हैं। छुट्टियों के दिनों में साढ़े दस से एक बजे तक खुलता है।

बच्चे सबसे ज्यादा कहानी की किताबें पढ़ते हैं। मुझे ईदगाह, डरो मत हल्ला मचाओ, तपोवन का राजा, 'बहादुर दीदी', 'पहाड़ों में खेती–अब वनों पर निर्भर' किताबें रोचक व

उपयोगी लगीं। केन्द्र में पत्रिकाएं लगातार आती रही हैं। बच्चों को सबसे ज्यादा आनंद पेड़–पौधों की जानकारी, चित्रकारी, भावगीत और पढ़ने–लिखने में आता है।

मैंने खुद भी संध्या केन्द्र और ग्राम शिक्षण केन्द्र में पढ़ा है और अब अप्रैल 2021 से शिक्षिका के रूप में केन्द्र संचालित कर रही हूँ। मैं चाहती थी कि अपने जीवन में कुछ करूँ। *मुझे बहुत खुशी है कि यह अवसर मिला। मैं पढ़ाई जारी रखना चाहती थी लेकिन नहीं कर पायी। बच्चों के साथ मुझे भी पढ़ने का मौका मिला है।* उनके साथ मैं बहुत खुश रहती हूँ। पहले मैं बच्चों को अच्छा नहीं मानती थी क्योंकि वे बहुत शोरगुल करते थे। फिर वही शोरगुल मुझे अच्छा लगने लगा। मुझे *मेरे दादा की कही पुरानी बात याद आयी कि बच्चों के साथ बच्चा बनना पड़ता है।* बच्चों को धीरे–धीरे समझ आती है तो वे खुद संभल जाते हैं। बचपन बहुत खास होता है। इसमें क्या अच्छा और क्या बुरा है यह पता ही नहीं लगता। मेरा बचपन भी ऐसे ही बीता है इसलिए मुझे अपने बचपन की बहुत याद आती है। मेरी जो भी परेशानियाँ थीं मैं बच्चों के साथ उन्हें भूल गयी और बहुत खुश हूँ। यह सब बच्चों की वजह से है क्योंकि बच्चे होते ही इतने अच्छे हैं।

ग्राम शिक्षण केन्द्र खुलने से गाँव में बच्चों, किशोरियों और महिलाओं में बहुत परिवर्तन आये हैं। कोविड महामारी के समय जब बच्चे स्कूल नहीं जा पा रहे थे तो उनके माता–पिता खुश रहे कि गाँव में ग्राम शिक्षण केन्द्र होने के कारण बच्चे पढ़ाई कर पा रहे हैं। बच्चे ठीक से उठना–बैठना, कब क्या करना है और कैसे करना है–ये सीख रहे हैं। बच्चों को पढ़ना–लिखना और खेलना–कूदना अच्छा लगता है। उनके माता–पिता से बात करती हूँ तो वे कहते हैं कि हमारे बच्चों को अच्छे से पढ़ाना और जब तक वे केन्द्र में हैं उनका खयाल रखना। बच्चे कहते हैं कि पढ़ाई के साथ हमें खेल भी सिखाओ। केन्द्र को और ज्यादा अच्छा बनाने के लिये मुझे खेल का सामान और बच्चों की पसंद की अच्छी किताबें चाहिये।

काम शुरू किया तो मन लगने लगा

स्मिता

सिरोली गाँव में मेरा जन्म हुआ। परिवार में माँ–पापा, बहनें और मैं हूँ। मेरी तीनों बहनों की शादी हो चुकी है। पापा होटल में काम करते हैं और माँ घर के काम करती हैं। हम खेती और पशुपालन भी करते हैं। हमारे सात–आठ खेत हैं। एक गाय और उसके दो बछड़े हैं। उनके लिये खेतों और जंगल से चारा लाते हैं।

मैंने पाँचवीं तक सिरोली में पढ़ाई की। उसके बाद इंटर तक बैरांगना में पढ़ा। मैंने हाईस्कूल में त्रेसठ प्रतिशत और इंटर में इकहत्तर प्रतिशत अंक प्राप्त किये। मुझे राजनीति विज्ञान विषय बहुत पसंद था लेकिन उसमें उनहत्तर प्रतिशत ही नंबर मिले जबकि भूगोल में सबसे ज्यादा, तिरासी प्रतिशत आये। अब मैं गोपेश्वर कॉलेज में बी.ए. प्रथम वर्ष में पढ़ रही हूँ।

मैं सुबह उठती हूँ, चाय बनाती हूँ, घर की सफाई करती हूँ और नाश्ता करने के बाद कभी–कभी माँ के साथ खेतों में जाती हूँ। वहाँ से लौटने के बाद दिन का खाना बनाती हूँ। आजकल शाम को चार बजे केन्द्र में जाती हूँ। वहाँ से आने के बाद रात का खाना बनाती हूँ। मुझे मजबूरन कोई काम नहीं करना पड़ता। मुझे अभी आगे पढ़ना है और मैं पढ़ रही हूँ। इसमें मेरे परिवार का पूरा सहयोग है।

मेरे गाँव में शिक्षण केन्द्र शुरू हुए बहुत समय हो गया है। 2017 में मेघा दीदी पढ़ाती थी, उसकी शादी के बाद आईशा ने पढ़ाया। कुछ समय के बाद उसकी तबियत खराब होने के कारण उसकी माँ ने केन्द्र चलाया। उनके बाद आरती चाची ने चलाया लेकिन घर की समस्या के कारण उन्होंने भी छोड़ दिया। अब आयशा की शादी हो गयी है। आरती चाची वर्तमान में ग्राम–प्रधान बनी हैं।

जब आरती चाची ने केन्द्र का काम छोड़ा तो उस समय कोई भी संचालन करने वाला न था। केन्द्र को अन्यत्र शिफ्ट करने की बात चल रही थी। संस्था के लोगों ने मुझसे केन्द्र चलाने के बारे में पूछा। मैंने बारहवीं पास की थी और लॉकडाउन चल रहा था। मैंने सोचा कि कुछ दिन देख लेती हूँ। जुलाई 2020 में एक गोष्ठी में मुझे केन्द्र संचालिका चुना गया। मैंने काम शुरू किया तो मन लगने लगा। अब मैं केन्द्र और बच्चों के साथ अच्छी तरह जुड़ गयी हूँ।

ग्राम शिक्षण केन्द्र गोपेश्वर संस्था से चलता है। केन्द्र में बच्चों के पढ़ने व सीखने के लिये काफी जगह है। बीस–पच्चीस बच्चे आ जाते हैं। पास में ही खेलने के लिये मैदान भी है।

केन्द्र सर्दियों में तीन से साढ़े चार बजे तक और गर्मियों में साढ़े चार से छः बजे तक खुलता है। हमारे ग्राम शिक्षण केन्द्र में किताबों की संख्या तीन सौ नौ है। केन्द्र में बहुत अच्छी–अच्छी कहानी की किताबें हैं। मैंने पूरियों की सुगन्ध, यिप और यांका, निश्चय, मेंढक राजकुमार, चेतना–गीत, बात आँख की और बहुत सारी अन्य किताबें पढ़ी हैं। खेल की सामग्री में फुटबॉल, रस्सी–कूद, कैरम आदि हैं। इनसे बच्चे बहुत कुछ सीखते और खुश रहते हैं। केन्द्र में रोज अखबार आता है। बच्चों से बूढ़ों तक सभी लोग अखबार पढ़ते हैं। कोई घर लेकर जाते हैं। वैसे सभी के घरों में टीवी लगा है पर टीवी पर समाचार बहुत कम लोग देखते हैं, अखबार सभी पढ़ते हैं। बच्चों को सबसे ज्यादा रुचि खेल में है। कैरम और बैडमिंटन सबसे ज्यादा पसंद हैं। 'किसने बनाया फूलों को' प्रार्थना करने में भी बच्चे खुश रहते हैं।

ग्राम शिक्षण केन्द्र खुलने से महिलाओं में बहुत परिवर्तन आया है। महिलाएं मीटिंग व अन्य कार्यक्रमों में सम्मिलित होती हैं। बच्चे व किशोरियाँ शिक्षण केन्द्र में आकर किताबें और अखबार पढ़ते हैं। केन्द्र के माध्यम से हर वर्ग को एक अनुशासन मिल रहा है। केन्द्र खुला तो शुरू में हर चीज का उल्टा–सीधा उपयोग होता था, परन्तु अब अनुशासन से हर बच्चे को *चीज़ों का सही प्रयोग* करना आता है। इसके अलावा किसी बच्चे की अच्छी आदत की प्रशंसा करो तो दूसरा बच्चा भी उसकी तरह बनने की इच्छा करता है। व्यवहार, पठन–पाठन, आदतों में बदलाव के लिये प्रतियोगिताएँ भी होती हैं। उनके माता–पिता का कहना है कि हमारे बच्चे ग्राम शिक्षण केन्द्र में बहुत कुछ सीख सकते हैं। नई–नई प्रेरणाएं मिल रही हैं। *लोग घुलमिल कर रहते हैं और मन की इच्छाओं को व्यक्त भी करते हैं।*

ग्राम शिक्षण केन्द्र से जुड़कर और नई–नई गतिविधियाँ करके मुझे भी बहुत कुछ सीखने को मिल रहा है। मुझे भी कुछ नया सीखने की इच्छा होती है। केन्द्र में *कुछ मैं अपने भाई–बहनों को सिखाती हूँ तो कुछ उनसे सीखती हूँ।*

ग्राम शिक्षण केन्द्र को हर कोई रोचक और उपयोगी बनाना चाहता है पर सबका तरीका अलग है। मुझे ज्यादा अनुभव तो नहीं है लेकिन बच्चों के बीच बच्चा बनने से ही वे जल्दी सीखते हैं। संचालिका के व्यवहार का बहुत असर होता है। अगर वह गाँव में सभी लोगों के संपर्क में रहती है तो वे भी ग्राम शिक्षण केन्द्र से जुड़े रहेंगे। नई–नई गतिविधियाँ बच्चों का शारीरिक और मानसिक विकास करती हैं। अपने ही तरीके से ग्राम शिक्षण केन्द्र नहीं चलाना चाहिये, बल्कि *इस पर ध्यान देना चाहिये कि गाँव के लोग और बच्चे क्या चाहते हैं।* शिक्षण इस तरह से हो कि बच्चों को दबाव महसूस न हो और वे खुशी नयी–नयी गतिविधियाँ सीखें।

कोशिश जारी है

करिश्मा सगोई

मेरा जन्म स्थान सुन्दरगाँव, जिला चमोली है। परिवार में चार सदस्य हैं– माँ, पिताजी, भाई और मैं। पिताजी कृषि करते हैं। माँ घर के कामों के साथ खेती में पिताजी की मदद करती है। भाई पढ़ाई करता है। मैं पढ़ाई के साथ ग्राम शिक्षण केन्द्र का काम करती हूँ।

हमारे यहाँ हर किस्म की खेती होती है। मुख्यतः धान, झंगोरा, कौड़ा, गेहूँ, जौ, सरसों, मसूर और दालें लगाते हैं। मेरे घर में गाय–बैल हैं। मैंने बारहवीं कक्षा तक राजकीय इंटर कॉलेज जाख में पढ़ा। इसके आगे राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कर्णप्रयाग में पढ़ रही हूँ। ऐसा कोई विषय नहीं है जो अच्छा न लगा हो या समझ में न आया हो।

मेरी पूरी दिनचर्या अच्छी रहती है और लगभग सारे काम मैं खुशी से कर लेती हूँ। अपने जीवन में आगे बहुत कुछ करने का मन है। अभी तक तो कुछ खास सफलता नहीं मिली है लेकिन कोशिश जारी है। मेरा सपना आई.पी.एस. बनने का है।

मेरे गाँव में ग्राम शिक्षण केन्द्र 2016 में खुला। मुझसे पहले केवल एक शिक्षिका ने इसे चलाया। मेरा जुड़ाव मई 2021 से हुआ। मैं पहले भी केन्द्र में आती–जाती थी। मेरा शिक्षिका बनने का मन था और मेरे चयन में पूरे गाँव की सहमति रही।

हमारा केन्द्र पंचायत भवन में संचालित होता है। कमरा बड़ा और अच्छा है। बच्चों के खेलने के लिये जगह भी अच्छी है। केन्द्र खुलने और बन्द होने का समय गर्मियों और जाड़ों में अलग–अलग है। गर्मियों में चार से छः बजे और सर्दियों में साढ़े तीन से पाँच बजे तक। रविवार को सुबह नौ से दोपहर एक बजे तक केन्द्र खुलता है।

केन्द्र में किताबें, खेल–कूद का सामान रखा हुआ है। किताबों की संख्या लगभग तीन सौ है। सबसे ज्यादा पढ़ी जाने वाली किताबें हैं– मेढक राजकुमार, गुन–गुन करती मधुमक्खी, पेड़ हो सकता है आदि। मैंने जापान की लोक–कथाएं, यातायात के नियम, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाएं, हम हिन्दुस्तानी, भारतीय संगीत की परंपरा सहित बहुत सी किताबें पढ़ी हैं। पेंटिंग, कविता सुनाना, भावगीत, निबंध लेखन अत्यधिक रोचक गतिविधियाँ हैं। पेंटिंग सबसे रोचक होने के साथ एक ऐसी गतिविधि है जो सभी बच्चों को पसंद आती है।

ग्राम शिक्षण केन्द्र खुलने से महिलाओं और किशोरियों में बहुत परिवर्तन आये हैं। महिला–सम्मेलन के जरिये महिलाओं का अपनी आवाज उठाना एक अच्छी पहल है। किशोरियों को भी गाँव से बाहर के माहौल (संस्कृति, रहन–सहन, पहनावा, खान–पान इत्यादि) के बारे में जानकारी मिली है। बच्चों की दिनचर्या अब पहले से अच्छी है। पहले वे खाली समय में इधर–उधर घूमते थे लेकिन अब केन्द्र में आते हैं और पढ़ाई–लिखाई के साथ खेल–कूद में समय लगाते हैं। पहले बच्चों को पढ़ने और लिखने में परेशानी होती थी, अब सुधार हो रहा है।

ग्राम शिक्षण केन्द्र से मेरे जीवन में काफी बदलाव आये हैं। पहले इधर–उधर घूमने और घर के कामों में समय बीत जाता था परन्तु अब बच्चों को पढ़ाने–लिखाने में लगता है। केन्द्र के माध्यम से मुझे गाँव के बाहर के रहन–सहन के बारे में भी पता चला।

ग्राम शिक्षण केन्द्र को और अधिक रोचक बनाने के लिये इसमें बदलाव लाने होंगे। जैसे, बच्चों को नई–नई जानकारी देना, मनोरंजन के नए तरीके अपनाना, नए–नए खेल, पढ़ाई के साथ अन्य गतिविधियाँ करना आदि।

कोविड महामारी के बीच ग्रामवासियों ने इधर–उधर जाना बन्द कर दिया। वे केवल बहुत जरूरी काम होने पर ही बाहर निकलते थे। मास्क और सैनिटाइजर का उपयोग किया। ग्राम–प्रधान द्वारा भी मास्क और सैनिटाइजर बाँटे गये। सांस्कृतिक और धार्मिक आयोजनों पर भी रोक लगी थी। खाने–पीने की मूलभूत आवश्यकता की चीजें जैसे–आटा, चावल, दाल, सब्जी, मसाले, साबुन आदि लाने में भी कठिनाई होने लगी।

ग्राम शिक्षण केन्द्र हफ्ते में चार दिन ही खोला गया तथा बच्चों की उपस्थिति भी कम रही। मैंने बच्चों को मास्क बाँटे। स्कूल–कॉलेज और शिक्षण केन्द्र बन्द होने से बच्चों को परेशानी हुई। स्कूल की ऑनलाइन पढ़ाई शुरू हो गयी थी लेकिन सुविधा न होने के कारण बहुत से बच्चे नहीं पढ़ते थे। ग्राम शिक्षण केन्द्र में पाँच जून को विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में वृक्षारोपण किया। इसी तरह इक्कीस जून को योग दिवस के अवसर पर बच्चों ने योग और व्यायाम किया।

नये कौशल सीखे

आशा बिष्ट

मेरे परिवार में माँ–पापा, भाई और मैं हूँ। माँ घर के काम करती है जिनमें मैं उसका हाथ बटाँती हूँ। भाई स्कूल में पढ़ रहा है और पापा नौकरी करते हैं। हम खेती भी करते हैं। तीन–चार महीने में अलग–अलग फसलें बोते हैं। बंजर भूमि में चारा–पत्ती के पेड़ों के अलावा अन्य पेड़–पौधे भी है। हमारी एक गाय और एक जोड़ी बैल हैं।

मैंने बी.ए. दूसरे साल तक पढ़ाई की है। कक्षा छः से बारहवीं तक राजकीय इंटर कॉलेज टंगसा में पढ़ा। सबसे अच्छा विषय हिन्दी लगता था। इंटर में राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र सबसे प्रिय विषय थे। मुझे भूगोल और अंग्रेजी सबसे खराब विषय लगे जो जरा भी समझ में नहीं आते थे।

मैं सुबह छः बजे उठती हूँ और हाथ–मुँह धोने के बाद झाड़ू लगाती हूँ। उसके बाद रोटी बनाना, बर्तन धोना आदि काम होते हैं। कभी–कभी खेतों में जाती हूँ। घर आकर खाना खाती हूँ और उसके बाद बर्तन धोती हूँ। फिर थोड़ी देर सो जाती हूँ। शाम को साढ़े चार से साढ़े छः बजे तक 'सेंटर' में जाती हूँ। जिस दिन केन्द्र बन्द रहता है उस दिन शाम को घूमने जाती हूँ। फिर चाय बनाकर सब को देती हूँ। सब्जी–रोटी बनाती हूँ तथा बर्तन धोती हूँ। कभी–कभी थोड़ी देर किताब पढ़ती हूँ। घास काटना और बर्तन धोना–ये काम मजबूरी में करती हूँ। मैं जीवन में आगे पढ़ना चाहती हूँ और 'फॉर्म भरने' (प्रतियोगी–परीक्षाओं) की तैयारी करना चाहती हूँ। मुझे कोई कठिनाई नहीं है।

कठूड़ में ग्राम शिक्षण केन्द्र जुलाई 2017 में खुला। मुझसे पहले श्रीमती सुमन बिष्ट ने फरवरी 2018 तक केन्द्र का संचालन किया। केन्द्र छोड़ने के बाद इन्होंने सिलाई का काम सीखा। वर्तमान में वे अपने घर में कपड़े सिलती हैं और आय अर्जित कर रही हैं। अब केन्द्र का संचालन मैं कर रही हूँ। इस काम को करने का मेरा मन था।

हमारा केन्द्र पंचायत–भवन में चलता है। केन्द्र में कुल किताबों की संख्या साढ़े चार सौ है। कहानी की पतली–पतली पुस्तकें सबसे ज्यादा पढ़ी जाती हैं। मुझे सबसे रोचक पुस्तक प्रेमचंद्र की तेरह बाल कहानियाँ लगी। 'सामान्य ज्ञान' और विज्ञान डायरी बहुत उपयोगी पुस्तकें है। केन्द्र में 'राष्ट्रीय सहारा' अखबार आता है। 'नंदा' और 'मुस्कान' पत्रिकाएं भी आती हैं।

बच्चों की सबसे ज्यादा रुचि भावगीत और खेलने में है। पशुओं की आवाज निकालने की गतिविधियों में वे बड़े आनंदित होते हैं। बच्चे वाष्पोत्सर्जन की गतिविधि का प्रयोग करना भी पसंद करते हैं। गणित में कमरे की लम्बाई आदि का मापन करना भी रुचिकर कार्य है।

केन्द्र खुलने से पहले बच्चे शाम को इधर–उधर खेलने चले जाते थे। देर शाम को घर आते थे। वे कभी लड़ाई–झगड़ा करते तो कभी किसी के बगीचे में घुसकर शैतानी करते। जबसे केन्द्र खुला, बच्चे शाम को यहाँ आ जाते हैं। कुछ बच्चे स्कूल जाने में रोते थे लेकिन केन्द्र में हमेशा खुशी से आते। अभिभावक हमेशा कहते हैं कि बच्चों को गृह–कार्य दो। बच्चों को केन्द्र के माध्यम से लिखना–पढ़ना और अनेक प्रकार की नई गतिविधियाँ सीखने को मिलीं। कुछ बच्चों ने रस्सी–कूद का खेल केन्द्र में सीखा तो कुछ बच्चों ने पहली बार कैरम, शतरंज आदि सामग्री का प्रयोग किया।

हम गाँव में महिलाओं की बैठक करते हैं। इस दौरान महिलाएं चेतना–गीत गाती हैं। कभी–कभी वे केन्द्र से 'नंदा' पत्रिका, कहानी की किताबें पढ़ने के लिये ले जाती हैं। किशोरियाँ सामान्य–ज्ञान की किताबें ले जाती हैं। मुझे केन्द्र से जुड़कर नयी जानकारियाँ और कौशल प्राप्त हुई हैं। साथ ही, महिलाओं और किशोरियों के साथ बैठकें करना सीखा।

ग्राम शिक्षण केन्द्र को ज्यादा उपयोगी और रुचिकर बनाने के लिये सुझाव दूँ तो यही कहुँगी कि केन्द्र में नियमित साफ–सफाई, रोज नई गतिविधियाँ, बच्चों को नई जानकारियाँ देना, केन्द्र को नियमित खोलना, बच्चों को किताबें पढ़ने के लिये प्रोत्साहन देना, नए–नए खेल और भावगीत शामिल करना आदि कार्य करने चाहिये।

सपना है गरीबों की मदद करूँ

मीता नेगी

मेरा जन्म भटग्वाली गाँव, ब्लॉक गैरसैंण, जिला चमोली में हुआ। परिवार में पापा, दो भाई और एक बहन है। पापा घर में रहते हैं और कृषि करते हैं। मेरे दोनों भाई गुजरात में होटल में नौकरी करते हैं। मैं और मेरी बहन कॉलेज में पढ़ रहे हैं। मैं बी.ए. तीसरे साल में हूँ और वह बी.ए. पहले साल में। एक और बहन की शादी हो चुकी है। मेरे एक और भाई है, उनकी भी शादी हो चुकी है।

हमारे परिवार के पास लगभग पन्द्रह खेत हैं लेकिन घर की स्थिति के कारण दो–चार खेतों में ही खेती कर रहे हैं। इनमें हम आलू, मडुआ, गेहूँ, राजमा, रैंस इत्यादि उगाते हैं। हमारी एक छोटी सी गाय भी है। मैंने बारहवीं कक्षा तक चौरासैंण में पढ़ा और अब नन्दासैंण डिग्री कॉलेज में पढ़ रही हूँ। संस्कृत समझ में नहीं आती थी लेकिन अन्य सभी विषय गणित, विज्ञान, अंग्रेजी, अर्थशास्त्र और राजनीतिशास्त्र अच्छे ही लगे।

मैं सुबह पाँच बजे उठ जाती हूँ। घर के काम करने के बाद सुबह आठ बजे जंगल जाती हूँ। वहाँ से ग्यारह बजे वापस लौटने के बाद गौशाला का काम करती हूँ। फिर डेढ़ बजे खाना खाने के बाद तीन बजे तक आराम करती हूँ। साढ़े तीन बजे ग्राम शिक्षण केन्द्र में जाती हूँ। वहाँ से छः बजे घर आकर सबके लिये चाय और खाना बनाती हूँ। शाम साढ़े आठ बजे तक हमारा खाना हो जाता है। उसके बाद रात दस बजे तक किताबें पढ़ने के बाद सो जाती हूँ। *जंगल जाना, नाश्ता बनाना और किताबें पढ़ना, ये काम मैं खुशी से करती हूँ। खेती के काम, दिन का खाना पकाना और सुबह जल्दी उठना–ये मुझे मजबूरी में करना पड़ता है।*

मेरा बचपन से सपना है कि मैं पुलिस बनूँ और गरीबों की मदद करूँ। मेहनत तो कर रही हूँ पर बहुत सी कठिनाइयाँ हैं। इस कारण जीवन का लक्ष्य अभी पूरा नहीं हो पाया। घर का काम करना होता है। स्थिति भी ठीक नहीं है। सबसे बड़ी परेशानी तो धन और समय की होती है।

मेरे गाँव में ग्राम शिक्षण केन्द्र हाल ही में एक मार्च 2021 से शुरू हुआ। संचालिका के रूप में मेरा चयन गाँव की महिलाओं ने किया। मैं अपने मन से शिक्षिका बनी हूँ। मैं पहले गाँव के कुछ बच्चों को ट्यूशन पढ़ाती थी। छोटे बच्चों को सिखाने का मेरा मन था। मेरा केन्द्र पंचायत घर में संचालित होता है। कमरा और कमरे के बाहर बच्चों के लिये बहुत अच्छी

और साफ–सुथरी जगह है। स्कूल के दिनों में जाड़ों में केन्द्र शाम को तथा गर्मियों में दिन के दो बजे खुलता है। इतवार और छुट्टियों के दौरान सुबह के समय खुलता है।

केन्द्र में किताबें, कैरम बोर्ड, बैडमिंटन, रस्सीकूद आदि सामग्री है। किताबों की संख्या दौ सौ एक है। कहानी की किताबें सबसे ज्यादा पढ़ी जाती हैं। मैंने सत्रह किताबें पढ़ीं हैं। 'हाय पकवान', 'अँधेरा घर', 'गुलाबा' सबसे रोचक लगीं। बच्चे पेंटिंग, खेलकूद और भावगीत में आनंद अनुभव करते हैं।

ग्राम शिक्षण केन्द्र खुलने के पहले बच्चे इधर–उधर घूमते थे। आसपास ट्यूशन जैसी कोई व्यवस्था भी नहीं थी। इस कारण बच्चों को पढ़ने के लिये बहुत दूर जाना पड़ता था। केन्द्र खुलने से बच्चे और उनके माता–पिता बहुत खुश हैं। वे मुझसे कहते हैं, "केन्द्र रोज खोल और इन्हें पढ़ाया कर।" बच्चे भी नियमित तौर पर केन्द्र में आते हैं और घर जाते समय पूछते हैं, "दीदी, कल कितने बजे आना है?"

ग्राम शिक्षण केन्द्र से जुड़कर मैं बहुत खुश हूँ। कुछ नया सीखने को मिल रहा है। दिनचर्या तो बदल ही चुकी है क्योंकि *जो समय फोन पर व्यतीत करती थी अब उसका सदुपयोग हो रहा है।* उसी समय में अब बच्चों के साथ जुड़कर कुछ सीखने–सिखाने का अवसर मिला है।

हमने केन्द्र में पाँच जून को 'विश्व पर्यावरण दिवस' मनाया और वृक्षारोपण किया। महिलाओं को साफ–सफाई और वृक्षारोपण के बारे में जानकारी दी गयी। विश्व योग दिवस के दिन व्यायाम और योग कराया गया तथा बच्चों ने गाँव की सफाई भी की।

मार्च में लगे लॉकडाउन से पहले महामारी बढ़ रही थी। इस कारण सम्पूर्ण देश में लॉकडाउन हो गया। गाँव में भी लोग भयभीत हो गए। 2020–21 बहुत बुरा साबित हुआ। महामारी के कारण लोग शहरों से घर वापस आये और बेरोजगार हो गये। बच्चों की पढ़ाई–लिखाई चौपट हो गयी।

पहले गाँव में लोग इतने सजग नहीं थे। उन्हें लगता था कि यह बीमारी गाँव तक नहीं पहुँच सकती। महामारी बहुत फैली तो लोग डरने लगे तथा अपने स्वास्थ्य के प्रति इतने सजग रहने लगे कि बाहर से गाँव लौटने वाले लोगों को चौदह दिन अलग रखा गया। उनसे दूर रहने की सलाह दी गयी। लोग न केवल खुद साफ रहने लगे, मास्क पहनने लगे और सैनिटाइजर का उपयोग करने लगे, बल्कि अन्य लोगों को भी जागरूक करने लगे। ग्राम–प्रधान और आशा द्वारा गाँव में मास्क और पाउडर का वितरण किया गया।

महिलाएं सहयोग करती हैं

रचना नेगी

मेरा जन्म ग्राम जाख में हमारे पुराने घर में हुआ। यह गाँव कर्णप्रयाग विकास खण्ड के चमोली जिले में हुआ। परिवार में छः सदस्य हैं। मेरे पिताजी की सिमली में दुकान है। माँ खेती करती हैं। भाई का जाख में सी.एस.सी. सेन्टर है। दीदी हरिद्वार में जी.एन.एम. का प्रशिक्षण ले रही हैं। आजकल उनकी ड्यूटी कुम्भ–मेला अस्पताल में लगी है। छोटा भाई देहरादून डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज में पढ़ रहा है और साथ में एयर–फोर्स की परीक्षा के लिये कोचिंग ले रहा है।

गाँव में हमारी खेती है। *पहले बहुत अच्छी पैदावार होती थी लेकिन अब भालू और बंदरों के आतंक के कारण लोग खेती की तरफ ध्यान नहीं दे रहे हैं।* हमारे आठ पालतू पशुओं में दो गाय, एक बछिया, एक भैंस का बच्चा है। इसके अलावा एक कुत्ता और एक बिल्ली भी है।

मैंने सबसे पहले आंगनवाड़ी में पढ़ा। उसके बाद जाख के प्राथमिक स्कूल, फिर जूनियर हाईस्कूल जस्यारा और नौवीं से बारहवीं तक राजकीय इंटर कॉलेज जाख में पढ़ाई पूरी की। बी.ए. कर्णप्रयाग से किया और वर्तमान में वहीं से एम.ए. कर रही हूँ।

मैं सुबह चार बजे उठती हूँ। हाथ–मुँह धोकर चाय पीने के बाद साढ़े पाँच बजे तक पढ़ाई करती हूँ। उसके बाद दौड़ने जाती हूँ और साढ़े छः बजे तक लौटती हूँ। फिर रोटी बनाती हूँ। घर की सफाई करती हूँ। नाश्ता करती हूँ और तब माँ के साथ खेत को जाती हूँ। खेतों से वापस आकर मैं दिन का खाना बनाती हूँ। खाना खाने के बाद एक बजे सिलाई–केन्द्र में जाती हूँ। ढ़ाई बजे तक केन्द्र में रहती हूँ। तीन बजे ग्राम शिक्षण केन्द्र में जाती हूँ और छः बजे तक वहाँ रहती हूँ। *बच्चों के साथ समय का कुछ पता ही नहीं चलता।* घर वापस लौटकर सब्जी काटती हूँ, रात का खाना बनाती हूँ और खाना खाने के बाद रात ग्यारह बजे तक पढ़ती हूँ। मैं सिलाई का काम खुशी–खुशी करती हूँ लेकिन खाना बनाना मुझे अच्छा नहीं लगता। *मुझे गणित में बहुत रुचि है। अंग्रेजी मुझे अच्छी नहीं लगती और न ही समझ में आती है।*

मैं भविष्य में आर्मी या पुलिस–फोर्स में जाना चाहती हूँ। मैं देश का एक अच्छा नागरिक बनना चाहती हूँ और उसके लिये भरपूर प्रयास कर रही हूँ। कठिनाई यह है कि लड़कियों के लिये आर्मी या पुलिस के रिक्त पद बहुत कम निकलते हैं। 2019 में आर्मी के

पद निकले लेकिन चयन–परीक्षा अभी तक नहीं हुई। कोरोना के कारण पिछले दो सालों से कुछ भी रिक्त पद नहीं निकल रहे हैं।

2016 में जब ग्राम शिक्षण केन्द्र खुला तो सबसे पहले श्रीमती संगीता रावत ने 2017 तक और फिर ज्योति दीदी ने मार्च 2018 तक संचालन किया। पहली दीदी ने सरकारी प्राइमरी स्कूल में भोजन–माता नियुक्त होने के बाद काम छोड़ा और दूसरी दीदी को शादी होने के कारण छोड़ना पड़ा।

मैं एक अप्रैल 2018 से जुड़ी हूँ। मेरा मन था क्योंकि बच्चों को पढ़ाना, उनके साथ खेलना, कहानी सुनाना मुझे पसंद है। हमारा केन्द्र पंचायत घर में संचालित होता है। इसके ऊपरी हिस्से में प्राथमिक विद्यालय का आँगन होने से खेलने के लिए पर्याप्त जगह मिल जाती है। स्कूल के दिनों में समय गर्मियों में तीन से छः बजे और जाड़ों में चार से साढ़े पाँच बजे तक है। छुट्टी के दिनों में ग्रीष्मकाल में आठ से साढ़े ग्यारह बजे और शीतकाल में दस से एक बजे का समय निर्धारित है।

अप्रैल 2021 में महामारी ने गाँवों में प्रकोप दिखाया तो लोग बहुत डर गये थे। बुखार भी आ जाये तो कोरोना हो जाने का शक होता था। लोग गाँव में बाहर से लाये जा रहे सामान, सब्जियों आदि को अच्छी तरह धोकर घर के भीतर ला रहे थे और खुद भी सैनीटाइज होकर ही घर के अन्दर आ रहे थे। लोग घर में भी मास्क पहनने लगे। डॉक्टर ने गाँव में आकर जाँच की और ग्राम–प्रधान ने कहा कि बाहर से गाँव लौटे लोग घर में ही रहें। धार्मिक–सामाजिक कार्य आयोजित नहीं किये गये।

बीमारी का प्रभाव थोड़ा कम होने पर हम सप्ताह में सिर्फ दो दिन ग्राम शिक्षण केन्द्र में साफ–सफाई और किताबों का लेनदेन करने जाते थे। हमने केन्द्र के बच्चों को तथा गाँव के लोगों को मास्क वितरित किये। अमेरिका में रहने वाली इशानी नौटियाल द्वारा भी पूरे इलाके में मास्क, सेनीटाइजर, आक्सी–मीटर वितरित किये गये।

केन्द्र में जोड़ो ज्ञान सामग्री, बैडमिंटन, लूडो, कैरम, शतरंज, फुटबॉल, रस्सी–कूद आदि के साथ ही चार सौ किताबें हैं। बड़े बच्चे सबसे ज्यादा मनोरमा सामान्य–ज्ञान तथा छोटे बच्चे हाथी की हिचकी, मेंढक राजकुमार पुस्तकें पढ़ते हैं। मैंने अभी तक सत्तर किताबें पढ़ी हैं जिनमें सबसे रोचक मनोरमा, वायुयान की कहानी, कुर्बान लगी। बच्चे सबसे ज्यादा रुचि क्रिकेट और पशु–पक्षियों की गतिविधि में ले रहे हैं।

बच्चे समय पर घर का काम पूरा करके *साफ–सुथरे बनकर केन्द्र में आते हैं।* पहले स्कूल से आकर इधर–उधर चले जाते थे। पहले मेरे साथ बच्चे खुलकर बातचीत नहीं करते थे लेकिन अब करते हैं। पढ़ने–लिखने में रुचि बढ़ी है। वे अपने से छोटे बच्चों को भी पढ़ाते

हैं तथा स्कूल की किताबों में जो समझ में नहीं आता वह मुझसे पूछते हैं। किशोरियाँ अपनी बातें आगे रखने लगी हैं। वे चेतनागीत/भावगीत करने में भी आगे रहती हैं।

महिलाओं में सबसे ज्यादा असर साफ–सफाई पर हुआ है। इसके अलावा केन्द्र से किताबें पढ़ने के लिए ले जाती हैं। *महिलाएं मेरा बहुत सहयोग करती हैं।* बच्चों के माता–पिता की राय है कि अब उनके बच्चे हर काम में रुचि लेते हैं। बच्चों का कहना है कि दीदी पढ़ाई, खेल और हर काम उनके साथ करती है लेकिन अल्मोड़ा घुमाने के लिये नहीं लेकर जाती।

लोग सम्मान की दृष्टि से देखते हैं

प्रियंका

मेरा जन्म ग्राम बणद्वारा, जिला चमोली, में हुआ। परिवार में माता–पिता, दादी, दो बहनें और छोटा भाई है। पिता मत्स्यपालन विभाग में नौकरी करते हैं। माँ 'आशा' कार्यकर्त्ती है और सामाजिक कार्य भी करती है। दादी घर के छोटे–छोटे काम करती है। हम चारों भाई–बहन पढ़ाई के साथ घर तथा खेती के काम करते हैं। मैं ट्यूशन पढ़ाती हूँ और ग्राम शिक्षण केन्द्र का संचालन कराती हूँ। हमारे पन्द्रह खेत हैं। पालतू पशुओं में एक गाय, एक भैंस और दो बैल हैं।

मैंने पाँचवीं तक गाँव के स्कूल में और फिर छठी से बारहवीं तक राजकीय इंटर कॉलेज बैरांगना में पढ़ा। बी.ए. ''श्री 1008 स्वामी सच्चिदानन्द संस्कृत महाविद्यालय मण्डल'' से किया। मैंने गोपेश्वर से कम्प्यूटर कोर्स भी किया है। मेरी हर विषय में रुचि है पर सबसे अच्छे विषय भूगोल और संस्कृत लगते हैं। मुझे अंग्रेजी कम आती है। वैसे *जो विषय ध्यानपूर्वक पढ़ो वही अच्छा लगने लगता है।*

मैं सुबह चार बजे उठती हूँ और साढ़े पाँच बजे तक किताबें पढ़ती हूँ। तत्पश्चात् गौशाला जाकर भैंस को दुहती हूँ और गोबर निकलती हूँ। फिर अच्छी तरह से हाथ धोकर बाल बनाती हूँ। उसके बाद सूर्य को जल चढ़ाती हूँ। खाना खा कर माँ के साथ खेतों में जाती हूँ। खेतों से वापस आकर हम दिन का खाना खाते हैं। उसके बाद मैं सिलाई करती हूँ। ग्रामवासी कपड़े सिलने के लिये देते हैं। शाम को घास/चारा लाती हूँ। यदि माँ शाम को खेतों से देर से लौटती है तो भैंस दुहती हूँ। फिर मैं बगीचे के फूलों की सिंचाई करती हूँ। शाम को रोटी कभी माँ, कभी मेरी बहन और कभी मैं बनाते हैं। यदि मैं रोटी नहीं बनाती तो छोटे भाई–बहनों को पढ़ाती हूँ। फिर हम साथ बैठकर खाना खाते हैं। *मैं डायरी में अपनी दिनचर्या लिखती हूँ।* मैं अपनी दादी के साथ सोती हूँ। मुझे अपनी दादी और परिजनों की बात मानना अच्छा लगता है। उनकी खुशी अपनी खुशी से ज्यादा लगती है। कभी माता–पिता जब मुझसे जबरदस्ती ज्यादा खाना खाने की जिद करते हैं तो मुझे हँसी आ जाती है। मैं आगे और पढ़ाई करके टीचर बनना चाहती हूँ। मुझे अपने माता–पिता को हमेशा खुश रखना है।

हमारा ग्राम शिक्षण केन्द्र अप्रैल 2017 से शुरू हुआ। मुझसे पहले दिव्या बुआ ने केन्द्र चलाया। शादी हुई तो वे ससुराल चली गयीं। वर्तमान में वह बाल विकास विभाग में काम कर रही हैं। मेरा चयन गाँव में महिलाओं की मीटिंग में हुआ। मेरा मन तो शुरू से यह

काम करने का था लेकिन जब केन्द्र खुला तो मैं बारहवीं में पढ़ रही थी। इस कारण माता–पिता को ठीक नहीं लगा कि मैं शिक्षण केन्द्र चलाऊं। उन्होंने कहा कि बारहवीं के बाद काम करेगी। जब दुबारा मेरा चयन हुआ तो उन्हें बहुत खुशी हुई।

ग्राम शिक्षण केन्द्र पंचायत भवन में संचालित होता है। कमरे में और आसपास बच्चों के खेलने के लिये अच्छी जगह है। स्कूल के दिनों में गर्मियों में पाँच से सात बजे और जाड़ों में तीन से पाँच बजे तक खुलता है। छुट्टी के दिनों में तीन से पाँच बजे तक खुलता है।

केन्द्र में खेल सामग्री, गणित सीखने की सामग्री, ग्लोब आदि के अलावा करीब चार सौ किताबें हैं। इनमें से मैंने दो सौ पुस्तकें पढ़ी हैं। दैनिक अखबार 'राष्ट्रीय सहारा' और समसामयिक घटना–क्रम, महासागर, ग्रीन टर्न आदि पत्रिकाएँ भी आती हैं। हावभाव के साथ भावगीत करना बच्चों को अच्छा लगता है।

ग्राम शिक्षण केंद्र के माध्यम से बच्चों, किशोरियों और महिलाओं में बहुत बड़ा बदलाव आया। बच्चों की हिचक दूर हुई। वे सभी कार्यों में खुलकर भाग लेते हैं। किशोरियाँ अखबार, कहानी, कविता आदि पढ़ने में रुचि ले रही हैं। उनकी घबराहट दूर हुई है। महिलाएं गाँव की प्रत्येक गोष्ठी में जाने लगी हैं। उनमें आत्म–विश्वास की भावना जागृत हुई है। इस के अतिरिक्त वे सामाजिक कामों में रुचि लेती हैं और समस्याओं का निराकरण करती हैं।

केन्द्र से जुड़ कर मुझे भी बहुत अच्छा लग रहा है। नई–नई जानकारियाँ लेना, नये लोगों से मिलना, गतिविधियाँ करना, बोलना और *अपनी बात को स्पष्ट रूप से प्रकट करना सीखा है।* ग्रामवासी और रिश्तेदार मुझे सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। मैं भविष्य में भी ग्राम शिक्षण केन्द्र चलाना चाहती हूँ पर अब मेरी शादी हो रही है। *मैं अपनी ससुराल में भी ग्राम शिक्षण केन्द्र चलाना चाहती हूँ।*

मुझे सिलाई पसंद है

मीरा कैड़ा

मेरा जन्म शीतलाखेत गाँव, जिला अल्मोड़ा, में हुआ। मेरा विवाह 2019 में भतौरा गाँव, जिला अल्मोड़ा में हुआ। मायके में संयुक्त परिवार है। माता–पिता, ताऊ–ताई, चाचा–चाची और मेरे भाई–बहनें परिवार में हैं। हमारे परिवार के तेइस खेत हैं। एक गाय और बैल भी है।

मेरे प्रिय विषय समाजशास्त्र और गृहविज्ञान है। मुझे सिलाई, कढ़ाई, बिनाई और गृह–कार्य अच्छा लगता है लेकिन घास काटना और जंगल जाना मज़बूरी के काम हैं। जीवन में नौकरी करने और घर से बाहर जाकर कुछ सीखने का मन करता है। मुझे सिलाई बहुत पसन्द है इसलिए मैं सिलाई सीखने सुरना गाँव में जाती हूँ।

सुबह पाँच बजे उठती हूँ। गौशाला की सफाई करती हूँ और गाय को दुहती हूँ। सबके लिये चाय बनाने के बाद नाश्ते की तैयारी करती हूँ। नाश्ते के बाद साढ़े सात या आठ बजे से ग्यारह बजे तक खेतों में काम करते हैं। घर वापस आकर दिन का खाना बनाते हैं। पुनः तीन से चार बजे तक खेतों में जाती हूँ। चार से छः बजे शिक्षण केन्द्र में रहती हूँ। शाम को गौशाला से दूध लेकर आती हूँ और फिर रात के खाने की तैयारी करती हूँ। खाना नौ बजे खाते हैं। फिर अगले दिन के कामों की चर्चा करते हैं। सोने से पहले थोड़ी देर फोन इस्तेमाल करती हूँ।

भतौरा में ग्राम शिक्षण केन्द्र 2013 में खोला गया। माया प्रथम शिक्षिका थी। इसके बाद कई शिक्षिकाएं रहीं। मेरा केन्द्र से जुड़ाव सत्रह जनवरी 2021 से हुआ। केन्द्र पंचायत भवन में संचालित होता है। यह मेरे घर के पास ही है। कमरे में और उसके आसपास अच्छी जगह है। वर्तमान में तेइस बच्चे केन्द्र में आ रहे हैं। बच्चों को भावगीत और कहानी में बहुत रुचि है।

उत्तराखण्ड महिला परिषद्

उत्तराखण्ड महिला परिषद्, उत्तराखण्ड की जागरूक एवं क्रियाशील ग्रामीण महिलाओं का संगठन है जिसने ग्राम समुदाय में विकास की मुख्य–धारा के ढाँचे से अलग एक वैकल्पिक विकास की व्यवस्था और उसके क्रियान्वयन के तौर–तरीके को विकसित किया है। उत्तराखण्ड में ग्रामीण महिलाओं के सबसे बड़े संगठन के रूप में प्रतिष्ठित महिला परिषद् का काम राज्य भर में फैले हुए ग्राम–स्तरीय संगठनों व स्वैच्छिक संस्थाओं ने संभाला है, जो ग्रामीण इलाकों में परिवर्तन लाने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं।

यद्यपि उत्तराखण्ड में महिला संगठनों के गठन एवं कार्यों की शुरूआत 1988 से हो गयी थी परंतु चार सौ पैंसठ महिला संगठनों की सोलह हजार सदस्याओं तथा बाइस स्वैच्छिक संस्थाओं की सम्मिलित आवाज से विकास संबंधी समस्याओं को संस्थात्मक, व्यवहारिक एवं वैचारिक मध्यस्थता देने की जरूरत को समझते हुए, 7 फरवरी, 2000 को उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान, अल्मोड़ा में उत्तराखण्ड महिला परिषद् का गठन किया गया। परिषद् की सदस्याओं में जाति, शैक्षणिक पृष्ठभूमि, उम्र के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाता। बड़ी संख्या में पचास वर्ष से अधिक उम्र की महिलाएं कभी भी विद्यालय नहीं गयी हैं, परंतु बीस से पचास वर्ष की अधिकतर महिलाएं साक्षर हैं और शिक्षा का स्तर प्राथमिक है। गाँवों में जहाँ पूर्व प्राथमिक केन्द्र काम कर रहे हैं, वहाँ सभी लड़कियाँ माध्यमिक स्तर तक पढ़ी हैं तथा हाईस्कूल एवं इंटरमीडिएट तक पढ़ी हुई लड़कियाँ भी काफी संख्या में हैं। कुछ लड़कियों ने शिक्षिका के रूप में कार्य करते हुए बी0 ए0 एवं एम0 ए0 तक शिक्षा पूरी की है। यह जरूरी नहीं है कि गाँव की समृद्ध तथा शिक्षित महिला ही परिषद् की सबसे क्रियाशील सदस्य हो, बल्कि इस जनधारणा के विपरीत कि आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर या शिक्षित महिला ही अच्छा नेतृत्व कर सकती है, गाँव की प्रौढ़ महिलाएं, जो यहाँ की स्थाई निवासी हैं, खेती करती हैं, परिषद् की अधिक क्रियाशील सदस्याएं हैं।

उत्तराखण्ड महिला परिषद्, ग्रामीण महिलाओं के ऊपर विकास कार्यक्रमों को थोपती नहीं बल्कि उन्हें बालवाड़ी शिक्षिकाओं, पुरूषों, अध्यापकों, युवाओं, स्थानीय अधिकारियों तथा अन्य संगठनों से सम्बन्धित महिलाओं से प्रत्यक्ष रूप से मेल–जोल रखने तथा सीखने के अवसर प्रदान करती है। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि परिषद् केवल उन्हीं कामों को महत्व दे, जो ग्रामीण/स्थानीय महिलाओं द्वारा स्वयं आयोजित तथा क्रियान्वित किये जा सकें। स्त्री–पुरूष या फिर जातिगत असमानता से सम्बन्धित भावनाएं और बाधाएं खुलकर गोष्ठियों में सामने आते हैं, जो परिषद् द्वारा उत्तराखण्ड में विकास कार्यक्रमों को सुचारू रूप से क्रियान्वित करने की दिशा में एक अनौपचारिक एवं महत्वपूर्ण प्राथमिक कदम है।

जमीन–प्रबन्धन से जुड़े कार्यों में नर्सरी लगाना, चारा उत्पादन, घेराबंदी करना, खाद बनाना, रोकबाँध बनाना तथा जानवरों की मुक्त चराई पर सम्मिलित रूप से रोक लगाना, जंगलों को बचाना, वनीकरण तथा प्राकृतिक सम्पदाओं का पुनरूत्पादन आदि काम सम्मिलित हैं। इसके अलावा पानी से जुड़ी समस्याओं का समाधान (जैसे–पुराने स्रोतों का जीर्णोद्धार, वर्षा जल संरक्षण, पॉलीथीन की टंकियाँ, फेरो–सीमेंट टैंक और हैंडपम्प आदि) संगठनात्मक तरीके से किया जाता है। स्वास्थ्य और स्वच्छता कार्यक्रमों में शौचालय बनाना, महिलाओं की स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं, व्यक्तिगत सफाई, घर एवं गाँव की स्वच्छता, पोषण संबंधी जानकारियों को फैलाना एवं संबंधित गतिविधियों का संचालन आदि कार्य सम्मिलित हैं। सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक असमानता संबंधी विषयों पर शिक्षा व जागरूकता लाने के लिए गोष्ठियाँ, सेमीनार, कार्यशालायें तथा प्रशिक्षणों का आयोजन किया जाता है। परिषद् की अनेक सदस्याएं पंचायत प्रतिनिधि बन कर महिलाओं की आवाज को बढ़ा रही हैं। हर वर्ष परिषद् द्वारा उत्तराखण्ड में लगभग बाइस महिला सम्मेलन आयोजित किये जाते है। साथ ही, महिला साक्षरता एवं शिक्षण कार्यक्रम भी शुरू किया गया है।

जून 2014 में सम्पन्न हुए पंचायतीराज चुनाव में उत्तराखण्ड महिला परिषद् से जुड़े हुए 526 लोग (379 महिलाएं) ग्राम–प्रधान, पंच, क्षेत्र एवं जिला पंचायत सदस्य चुने गये हैं। इसमें बारह महिलाएं क्षेत्र पंचायत सदस्य बनी हैं। महिला संगठनों की अध्यक्षा रह चुकी दो महिलाएं जिला पंचायत सदस्य चुनी गई हैं।

संगठन की सदस्याएं उत्तराखण्ड में विकास कार्यक्रमों में नीतिगत बदलाव की माँग कर रही हैं। विभिन्न कार्यक्रम जो कि ग्रामीण विकास, महिला विकास, शिक्षा, खनन, कृषि, जंगल, पानी, आयवृद्धि और पंचायती राज व्यवस्था के लिए बनाये गये हैं, उनके बारे में ग्रामीण महिलाओं की अपनी समझ, जानकारी और अनुभव है। साथ ही, उत्तराखण्ड महिला परिषद् के रूप में काम करते हुए महिलाओं ने विकास के मुद्दे पर अपनी एक वैकल्पिक समझ व कार्य–विधि विकसित की है। इन्हीं अनुभवों को आधार बनाकर उत्तराखण्ड महिला परिषद् की सदस्याएं, सरकारी नीतियों व कार्यक्रमों में बदलाव व सुधार की माँग करती हैं।

अनुराधा पांडे